शैक्षिक मंथन

(द्विभाषी मासिक)

शैक्षिक क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका

वर्ष : 16 अंक : 8 1 मार्च 2024

फाल्गुन, विक्रम संवत् 2080

परामर्श

डॉ. विमल प्रसाद अग्रवाल
जगदीश प्रसाद सिंघल
शिवानन्द सिन्दनकेरा
जी. लक्ष्मण
महेन्द्र कुमार

❖

सम्पादक

प्रो. शिवशरण कौशिक

❖

संपादक मंडल

प्रो. नन्द किशोर पाण्डेय
प्रो. राजेश कुमार जांगिड़
प्रो. ओमप्रकाश पारीक
डॉ. एस.पी. सिंह
प्रो. दीनदयाल गुप्ता
भरत शर्मा

❖

प्रबन्ध सम्पादक

महेन्द्र कपूर

❖

व्यवस्थापक

बसंत जिंदल

❖

प्रेषण प्रभारी : **नौरंग सहाय 'भारतीय'**

प्रकाशकीय कार्यालय
82, पटेल कॉलोनी, सरदार पटेल मार्ग,
जयपुर (राजस्थान) 302001
दूरभाष : 9414040403

दिल्ली ब्यूरो :
शैक्षिक महासंघ सदन, 606/13,
कृष्णा गली नं.9, मौजपुर, दिल्ली - 110053

E-mail :
shaikshikmanthan@gmail.com
Visit us at :
www.shaikshikmanthan.com

वार्षिक शुल्क ₹ 250/-
दस वर्षीय शुल्क ₹ 2000/-

पृष्ठ संयोजन : सागर कम्प्यूटर, जयपुर

शैक्षिक मंथन मासिक में प्रकाशित सामग्री से संपादक मण्डल का सहमत होना आवश्यक नहीं है तथा चित्रों का प्रतीकात्मक प्रयोग किया गया है।

राम विग्रहवान धर्म

❑ हनुमान सिंह राठौड़

वर्तमान समय में इस विषय पर उपलब्ध यांत्रिक बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) तथा उत्खनन व काल निर्धारण की नवीनतम तकनीकियाँ उपलब्ध हैं। 'वेदों पर वैज्ञानिक शोध संस्थान' की निदेशक तथा पूर्व आयकर आयुक्त रहीं श्रीमती सरोज बाला ने इन सब विधाओं से ज्ञात तथ्यों को 'रामायण की कहानी विज्ञान की जुबानी' पुस्तक में संकलित किया है। आधुनिक जानकारी के आधार पर महर्षि वाल्मीकि न केवल उच्च कोटि के खगोलज्ञ थे, उन्हें विश्व-भूगोल का भी यथार्थ ज्ञान था। रामायण में दिये खगोलीय संदर्भ इतने सटीक हैं कि आश्चर्य होता है।

4

अनुक्रम

3.	संपादकीय	- प्रो. शिवशरण कौशिक
14.	राम की व्याप्ति	- प्रो. उमेश कुमार सिंह
18.	मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारत के पर्याय हैं	- प्रणय कुमार
20.	भारतीय समाज में राम और रामराज्य की ...	- प्रो. रसाल सिंह
24.	श्रीराम के आदर्श और समाज - जीवन	- गोपाल कृष्ण दुबे
27.	राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण और श्रीराम	- डॉ. गोरधन लाल शर्मा
30.	श्री राम का कृतित्व ही हमारी आचार संहिता	- डॉ. अंजनी कुमार झा
32.	श्रीरामचरितमानस में भक्तियोग की अवधारणा	- डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
37.	संस्कृत साहित्य में श्रीराम	- डॉ. धनंजय कुमार मिश्र
41.	राम मंदिर आंदोलन में महिलाओं का योगदान	- कल्पना कुशवाहा
44.	राम की परिव्याप्ति	- डॉ. राजकुमार उपाध्याय
46.	मुस्लिम कवियों की दृष्टि में राम	- अमन वर्मा

Consecration of Ram Mandir : Civilization Reclaim of Bharat

❑ Dr. Renu Gaur

Ram Mandir at Ayodhya, voicing the tales of devotion, sacrifice, and the unwavering belief in the triumph of righteousness, is the healing for a wounded civilisation that suffered centuries of subjugation and oppression, but remained resilient; a way for a lost civilisation, that finally found a focal point to resolve around and set itself on the path to greater glory; a liberation for a civilisation, which has suffered spiritual cultural, political and religious depravities but has fought for Dharma without giving up.

48

संपादकीय

प्रो. शिवशरण कौशिक
संपादक

प्रगति के नए-नए प्रतिमान स्थापित करता वर्तमान भारत प्रखरता से एक उत्कर्षवान् तथा ऐश्वर्यवान् लोकतांत्रिक गणराज्य बन रहा है। इस प्रगति की पृष्ठभूमि में मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जीवन-दर्शन और भारत के वर्तमान कुशल और सामर्थ्यवान् राजनीतिक नेतृत्व की रामत्व में गहरी आस्था है जो स्वयं जीवन में सतत त्याग, राष्ट्र-आराधन तथा सर्वतोमुखी सद्भाव के वैचारिक अभिधान की निर्मिति है। एक उत्कृष्ट या आदर्श शासन की कल्पना राम-राज्य की कल्पना है जिसमें सबके लिए न्याय, सबके लिए शिक्षा और रोजगार के साथ सबको सुखी जीवन जीने का अधिकार प्रदान करने की कल्पना हो।

पूर्ण सामाजिक न्याय और लोकतंत्र का परिमार्जन ही राम राज्य है। 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में राम मंदिर के शुभारंभ से भारत के संपूर्ण 'स्वत्व' के पुनर्जागरण की कल्पना साकार हुई है। भारत में राम की परिव्याप्ति हर युग में, हर परिस्थिति में रही है और राम का चरित्र भारत के नागरिकों, समाज सेवियों, राजनीतिज्ञों, शिक्षाविदों, साहित्यकारों, विद्यार्थियों, प्रबंधन-विशेषज्ञों आदि को सदैव प्रेरणा और मार्गदर्शन देता रहा है। राम हमारे सुख में, दुख में, हर्ष में, विषाद में, लाभ में, हानि में, विपदा में, समाधान में, अनुकूलता में, प्रतिकूलता में सभी भारतवासियों को संबल प्रदान करते हुए सभी का मार्ग प्रशस्त करते हैं। वे हमारी वृहद् संस्कृति के प्रणेता हैं। इसीलिए भारत में राम-कथा का अध्ययन, मनन, श्रवण, अनुशीलन और अनुगमन करने की परंपरा पुरातन के साथ नित नूतन है। श्रीराम का राजनीतिक पौरुष और उदार हृदय ही अयोध्या को आदर्श और सुशासित राज्य बनाने में सक्षम हुआ है। राम-कथा की लोकप्रियता का आधार भी उसकी रामराज्य की अवधारणा ही है जिसे स्वयं राम अपने जीवन से प्रतिभासित करते हैं।

किसी भी उन्नत समाज या राष्ट्र की सुख-समृद्धि के लिए राजा तथा प्रजा के समन्वित प्रयास अपेक्षित होते हैं। इनमें एक का भी असहयोग इसमें बाधा बन सकता है। श्रीराम के युग में भी अनीति, बाहुबल और षड्यंत्रों के बल पर शासन करने वाले अनेक राजाओं को हम जानते हैं जो अन्त में नष्ट हुए। इसलिए रामराज्य की अवधारणा में राजा-प्रजा के अभीष्ट समन्वय का विधान रहा है। राजा अपने योग्य नागरिकों को उचित गौरव प्रदान करता है तथा नागरिक अपने कुशल और उदारमना, धर्मपरायण राजा का सदैव न केवल सम्मान करते हैं, अपितु उसके सुशासन में सहकार भाव से भागीदार भी बनते हैं। इसमें प्रत्येक नागरिक कर्तव्य परायणता से ओत-प्रोत होकर उच्च नैतिक मूल्यों का अनुसरण करता है। तत्पश्चात अपने सुख, स्वास्थ्य, समृद्धि की न्यायोचित धर्मसम्मत सिद्धि करता है।

भारत में आस्था के प्रतीक और आराध्य के रूप में श्रीराम का सभी उपासना-पद्धतियों, आराधना-पद्धतियों में उच्चतम स्थान है ही, इसी के साथ राजा के रूप में राम को जो प्रतिष्ठा मिली वह किसी भी अन्य शासक को नहीं। उनके जीवन-व्यवहार का उल्लेख निरंतर होता रहा, उनके चरित-काव्य के रूप में महर्षि वाल्मीकि की रामायण और तुलसीदास की रामचरितमानस का भारतीय समाज में विशेष स्थान है। अध्यात्म रामायण, कम्बु रामायण, श्रीरामायण दर्शनम्, कृतिवासी रामायण, रामावतार, राम विजय, पउम चरिउ, जैन रामायण आदि विभिन्न भारतीय भाषाओं की रचनाएँ मिलती हैं और इनका पारायण किया जाता है।

तुलसी मीमांसक माताप्रसाद गुप्त का कहना है - ''राम कथा भारतीय संस्कृति का उज्ज्वलतम प्रतीक है। हमारी संस्कृति में आदिकाल से सत्य, अहिंसा, धैर्य, क्षमा, निर्वैरता, अनासक्ति, इंद्रिय-निग्रह, शुचिता, निष्कपटता, त्याग, उदारता और लोक-संग्रह आदि के जिन सात्विक तत्त्वों का सन्निवेश रहा है, उन सब का जैसा समाहार राम-कथा में दिखाई पड़ता है वैसा अन्यत्र नहीं दिखाई पड़ता है। आर्यावर्त के बाहर भी प्राचीन काल से जो राम-कथा का प्रचार रहा है, वह हमारी इसी सात्विक संस्कृति के समादर का प्रतीक है। मैथिलीशरण गुप्त कहते हैं ''राम तुम्हारा चरित स्वयं ही काव्य है, कोई कवि बन जाए सहज संभाव्य है।'' रामचरितमानस में तुलसी ने भी इसे लिखा है -

नाना भांति राम अवतारा।
रामायण सतकोटि अपारा ।।

वाल्मीकि रामायण में रामराज्य का उल्लेख बालकांड (सर्ग 1) में मिलता है जिसमें महर्षि नारद वाल्मिकी को राम के राज्याभिषेक तक का वर्णन सुनाते हैं और रामराज्य की कुछ विशेषताएँ बताते हैं। दूसरी बार वाल्मीकि युद्ध कांड (सर्ग 128) में तथा तीसरी बार उत्तरकांड (सर्ग 41) में भरत के मुख से पुनः रामराज्य के वर्णन का उल्लेख मिलता है। इन सबमें राज्य के प्रत्येक नागरिक की शारीरिक, मानसिक, भौतिक तथा आध्यात्मिक उन्नति व रोग-शोक से रहित 'सर्वे मुदितमेवासीत' अर्थात् 'सभी जन प्रसन्न रहें' का भाव व्यक्त किया गया है। तुलसी ने लिखा है -

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहीं काहुहि व्यापा।।

एक स्थान पर तुलसी ने प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं तथा दूसरों से भी परस्पर प्रेम का व्यवहार करने का निर्देश किया है - सब नर करहिं परस्पर प्रीति। पुनः कहते हैं 'नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना' नागरिकों की कर्तव्यपरायणता पर तुलसी लिखते हैं - बरनाश्रम निज निज धरम निरत बेद पथ लोग। चलहिं सदा पावहिं सुखहिं नहिं भय सोक न रोग।।

जनता का व्यवहार कैसा हो, इस पर तुलसी लिखते हैं -'चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीति' अर्थात् राम राज्य में सामान्य नागरिक श्रुति और नीति के अनुकूल ही अपना व्यवहार करते थे।

रामराज्य की अवधारणा में प्रकृति और मनुष्य के परस्पर संरक्षण-भाव की उपस्थिति है जिसमें प्रकृति जीव-जगत् के प्रति स्वयं उदार और मनुष्य प्रकृति के प्रति सेवा-संरक्षण भाव से निष्पन्न रहते थे। इसी के फलस्वरूप रामराज्य में दुर्भिक्ष, अतिवृष्ट आदि नहीं थी, यहाँ वृक्षों की जड़ें सुदृढ़ होती थी तथा वे सदैव फल-फूलों से लदे रहते थे। मेघ आवश्यकतानुसार बरसते थे । वायु मंद गति से सुखद स्पर्श देकर चलती थी -

नित्यमूला नित्यफलास्तरवतत्र पुष्पितः।
कामवर्षी च पर्जन्यः सुख स्पर्शश्च मारुतिः।।

वाल्मीकि रामायण (युद्ध कांड 128.103)

राम मंदिर के भव्य निर्माण के क्रम से आज समूचा देश राम में भक्तिमय होने के साथ सांस्कृतिक पुनरुत्थान की ओर बढ़ चुका है। ❑

राम विग्रहवान धर्म

हनुमान सिंह राठौड़

सामाजिक अध्येता, विचारक, लेखक, शिक्षाविद्

अरुण शौरी 'द वर्ल्ड ऑफ फतवा' में लिखते हैं, ''भारत के अधिकतर बौद्धिक लेखन कार्य में पश्चिमी देशों के संदर्भों को पाद टिप्पणियों के रूप में शामिल किया गया है। दूसरे लेखकों की तुलना में यह स्थिति मार्क्सवादी बुद्धि जीवियों के मामले में अधिक देखने को मिलती है।''

आर्थिक मोर्चे पर अपने सिद्धान्तों के व्यर्थ सिद्ध होने के बाद मार्क्सवाद ने अपना रूप बदला, जिसे कल्चरल मार्क्सवाद कहा गया। यह इसके मूल स्वरूप से भी अधिक खतरनाक है, विशेषकर भारत में, जहाँ इसने मुस्लिम व औपनिवेशिक आक्रमण के अत्याचारों के नकार (Negation) तथा औचित्य सिद्ध करने के साथ-साथ औपनिवेशिक मानसिकता वाले लेखकों द्वारा भारत में हीनताबोध उत्पन्न करने वाली स्थापनाओं को पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से अद्यतन परोसना चालू रखा और इस प्रकार 'ब्रेनवाश्ड रिपब्लिक' का संसार रच दिया। दुर्भाग्य से 1947 के बाद जिसका सर्वाधिक शासन रहा उस कांग्रेस पार्टी द्वारा मार्क्सवादी वर्चस्व स्थापना की कवायद समर्थित है। इसी का परिणाम है कि 'रामसेतु रक्षण अभियान' के समय कांग्रेस सरकार ने सर्वोच्च न्यायालय में शपथ पूर्वक कहा कि राम काल्पनिक है, उसका कोई ऐतिहासिक आधार नहीं है।

किसी विषय पर विचार की दो दृष्टि होती है- संग्रहालय दृष्टि और मंदिर दृष्टि। संग्रहालय दृष्टि बाहर की खोज है। यह इतिहास के पन्ने पलटती है, उत्खनन की सामग्री टटोलती है, तुलनात्मक दृष्टि खंगालती है - और यह सब करते अपनी बुद्धि का उपयोग, अपने दृढ़मूल विचार की कसौटी पर करती है। मंदिर दृष्टि अंतर की खोज है, आध्यात्मिक दृष्टि है, श्रद्धा की सृष्टि है। यह अनगढ पत्थर पर भी सिंदूर लेप, नैवेद्य चढा, देवत्व की धारणा कर सकती है। प्रश्न यह है कि आप राम को किस दृष्टि से देखते हैं ?

राम कथा की ऐतिहासिकता खोजने वालों के अपने तर्क हैं। उनका मानना है कि वेदों में राम का उल्लेख नहीं है। ऋग्वेद (10-60-4) में इक्ष्वाकु का उल्लेख है -

यस्येक्ष्वाकुरूप व्रते रेवान्मराय्येधते।
दिवीव पञ्च कृष्टयः।।

आर्य समाज 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' में स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित पद्धति द्वारा भाष्य करता है। इसके अनुसार इक्ष्वाकु का अर्थ मधुर उपदेष्टा है, न कि कोई राजा। परोपकारिणी सभा अजमेर द्वारा प्रकाशित ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्या मार्तण्ड के भाष्य के अनुसार इस मंत्र का भावार्थ -

''जिस राजा के शासन में मधुर उपदेष्टा शिक्षामंत्री, प्रशस्त धनवान अर्थ मंत्री और शत्रुओं को मारने वाला सेनाध्यक्ष समृद्धि पाते हैं, उसकी पाँचों - ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद प्रजायें और ज्ञानीजन, जैसे सूर्य के आश्रय में रश्मियाँ प्रकाश वाली और सबल होती हैं, ऐसे सब सबल होते हैं।''

स्वामी दयानंद सरस्वती का मानना है कि वैदिक शब्दों के यौगिक प्रक्रिया के आधार पर अर्थ होते हैं। वेद के प्रत्येक शब्द का अपना व्युत्पतिपरक अर्थ तथा उस शब्द का पुराण आदि में व्यक्तियों के नाम के लिए प्रयोग सम्भव है। वेद मंत्रों की आधिभौतिक, आधिदैविक तथा आध्यात्मिक - तीन प्रकार से व्याख्या की जा सकती है। यथा उक्त मंत्र का यह अर्थ भी सायण परम्परा में किया जाता है-

''शत्रु संहारक और ऐश्वर्य- सम्पन्न राजा इक्ष्वाकु शासन में प्रतिष्ठा प्राप्त करते हैं। पाँचों वर्णों के लोग स्वर्गीय सुखों का उपभोग करें।''

अथर्ववेद (19-39-9) में भी इक्ष्वाकु का उल्लेख है।

यह कुष्टनाशन सूक्त में है जिसमें वर्णन है कि कुष्ट निवारक औषधी का सर्वप्रथम परिचय इक्ष्वाकु ने प्राप्त किया।

ऋग्वेद (1-126-4) में दशरथ का उल्लेख है 'चत्वारिंशद्दशरपस्य शोणाः सहस्रस्याग्रे श्रेणिं नयन्ति' - यहाँ वास्तव में दस रथों का उल्लेख है, 'हजारों की पंक्ति के आगे दस रथों को चालीस छोड़े खींच ले जाते हैं।'

ये पाश्चात्य विद्वान् अथर्ववेद (10-2-31) के इस मंत्र में अयोध्या ढूंढते हैं-

अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यांहिरण्ययः कोशः स्वर्गोज्योतिषावृतः।।

(जिसके आठ चक्र और नौ द्वार हैं, देवताओं की पुरी अयोध्या है, उसमें जो तेजस्वी कोष है वही तेजस्विता से युक्त होकर स्वर्गीय आनंद से परिपूर्ण है।) यह आठ परकोटे की प्राचीरों और नौ प्रवेश द्वारों वाली देव नगरी नहीं है। अपितु यहाँ शरीर रूप अयोध्या का वर्णन है जो अजेय है। इसकी विशेषताओं का उपयोग किया जा सके, तो कोई भी विकार या अवरोध इसको पराजित नहीं कर सकते। इसके आठ चक्र - मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपूरक, अनाहत, विशुद्धि, आज्ञा, लोलक तथा सहस्राधार हैं। नौ द्वार- दोनों आँखें, दो नासा छिद्र, दो कान, एक मुख, मलद्वार व जननांग हैं।

तैत्तिरीय आरण्यक (5-8-13) में एक स्थान पर राम शब्द का प्रयोग हुआ है -

'संवत्सरं न मांसमश्नीयात्।
न रामामुपेयात्।
न मृन्मयेन पिबेत्।
नास्त्य राम उच्छिष्टं पिबेत्।
तेज एवं तत्संश्यति'।।

प्रवर्ग्य (सोमयज्ञ से पूर्व का एक अनुष्ठान) के नियम पालन के अन्तर्गत इस कथन में राम का अर्थ पुत्र है। सायण ने 'राम' का अर्थ 'रमणीय पुत्र' किया है। इसका अर्थ होगा-

'वह एक वर्ष तक मांस का भक्षण न करे। स्त्री संसर्ग न करे। मिट्टी के पात्र से पानी न पिए। उसका पुत्र उच्छिष्ट न पिए। इसी तरह उसका (यजमान का) तेज पुंजीभूत हो जाता है।'

इन आधारों पर विदेशी विद्वानों का कहना है कि वेदों में राम कथा का उल्लेख नहीं है अतः राम ऐतिहासिक तथा प्राचीन नहीं है, यह कथा अर्वाचीन काल में गढ़ी गई है।

डॉ. ए. वेबर (ऑन दि रामायण) के अनुसार राम-कथा का मूल 'दशरथ जातक' है। बौद्ध त्रिपिटक तीसरी शताब्दी ई.पू. में पाली भाषा में लिपिबद्ध हैं। द्वितीय पिटक (सुत्त पिटक) के पाँचवें भाग 'खुद्दक निकाय' में जातक कथाएँ हैं। दशरथ- जातक जिस 'जातकट्ठवण्णना' में पाया जाता है वह पाँचवी शताब्दी ई. की एक सिंहली पुस्तक का पाली भाषा में अनुवाद है। महात्मा बुद्ध की पूर्वजन्म की कथाओं को जातक कहते हैं। जातक कथा के तीन भाग होते हैं - 1. वर्तमान कथा (पच्चुपन्न वत्थु) जिसमें भगवान बुद्ध के समक्ष कोई वर्तमान प्रश्न या समस्या रखी जाती है। जैसे दशरथ जातक में जैतवन में किसी गृहस्थ के पिता की मृत्यु हो गई। उनके शोक में उसने सब कर्त्तव्य- कर्मों का त्याग कर दिया तब बुद्ध ने अपने पूर्वजन्म की यह कथा सुनाई। 2. अतीत-कथा (अतीत वत्थु)- इसमें वाराणसी के राजा दशरथ की कथा है। इनकी तीन संताने थीं- राम पंडित, लक्खण (लक्ष्मण) व सीता। दूसरी रानी का पुत्र भरत था। रानी भरत के लिए राज्य मांगती है। तीनों बहन-भाई वन में चले जाते हैं। भरत पादुका रखकर राज्य करता है। दशरथ की मृत्यु (12 वर्ष) के बाद राम पंडित घर आता है। 3- समोधन (सामंजस्य)- अतीत कथा का बुद्ध अपने वर्तमान जीवन से सामंजस्य स्थापित करते हैं। यथा दशरथ जातक के सम्बन्ध में बताते हैं कि - शुद्धोदन पहले दशरथ थे, महामाया (बुद्ध की माता) पहले राम पंडित की माता थी, यशोधरा (राहुल की माता) सीता, आनंद भरत तथा मैं राम पण्डित था।

यह स्थापित करने का उद्देश्य रामायण को तीसरी ईस्वी शती के बाद की रचना बताना है। ए. वेबर का कथन है कि धम्मपद की टीका, दशरथ-जातक

तथा बुद्धघोष की 'सुत्त निपातटीका' की कथाओं में परिवर्धन, परिवर्तन कर रामायण लिखी गई। डॉ. ए. वेबर संसार में एकमात्र व्यक्ति हैं जो मानते हैं कि रामायण के सीता-हरण व लंका का युद्ध होमर के इलियड में वर्णित पैरिस द्वारा हेलेन के हरण व ट्रॉय के युद्ध प्रसंगों से प्रभावित है। डॉ. वेबर का यह भी कहना है कि 'रामायण का समस्त काव्य एक रूपक मात्र है जिसके द्वारा दक्षिण की ओर आर्य सभ्यता और कृषि का प्रचार दिखाया जाता है।... सीता कृषि का मानवीकरण मात्र है।'

दिनेश चन्द्र सेन (दि बंगाली रामायन्स) के अनुसार ''रामायण और बौद्ध कथा की तुलना करने पर स्पष्ट है कि विश्व कवि वाल्मीकि ने कितने कौशल से इस अपरिष्कृत बौद्ध कथा को उत्कर्ष की सीमा तक पहुँचाया।'' उनका मानना है कि, ''वाल्मीकि ने एक विशेष उद्देश्य से दशरथ जातक का सरल वृत्तान्त विकसित कर दिया है। बौद्ध तपस्या और भिक्षुपन की प्रतिक्रिया स्वरूप आदि कवि ने रामायण में हिन्दू गृहस्थ जीवन का आदर्श अपने पाठकों के सामने रखा।''

जे.टी. ह्वीलर (द हिस्ट्री ऑव इण्डिया, भाग-2, पृ. 74) तो और भी दूर की कपोल-कल्पित कौड़ी लाए - ''रामायण का समस्त काव्य ब्राह्मण और बौद्ध धर्म के संघर्ष का प्रतीक है। राक्षसों से अभिप्राय बौद्ध हैं। लंका पर आक्रमण का वर्णन सिंहल द्वीप के बौद्धों के प्रति वाल्मीकि का विरोध और द्वैष प्रकट करता है।'' किंतु रामायण में वर्णित राक्षसों का तो बौद्धों से एक भी साम्य नहीं है। वाल्मीकि रामायण (2-109-34) में जाबालि प्रसंग को कामिल बुल्के ने भी प्रक्षिप्त माना है क्योंकि आदि रामायण में न तो बुद्ध का कोई उल्लेख हुआ था न बौद्ध धर्म के प्रत्यक्ष प्रभाव का कहीं भी असंदिग्ध निर्देश मिलता है, अत: ह्वीलर का जाबालि को बौद्ध धर्म का प्रतिनिधि मानना भ्रांति है, वह लोकायत दर्शन का प्रतिनिधि था।

फादर कामिल बुल्के का मानना है कि वाल्मीकि रामायण से पूर्व रामकथा सम्बन्धी आख्यान प्रचलित थे। इसका संकेत रामायण में है। दक्षिणात्य पाठ में उल्लेख है कि नारद से कथावस्तु सुनने के बाद वाल्मीकि ने इसका अन्वेषण किया -

'व्यक्त मन्वेषते भूयो यद् वृत्तम् (1-3-1)' गौड़ीय पाठ (1-3-1) तथा पश्चिमोत्तरीय पाठ (1-4-1) में इससे सम्बन्धित श्लोक अधिक स्पष्ट है-

श्रुत्वा पूर्वं काव्यबीजं
देवर्षिर्नारदादृषिः।
लोकादन्विष्य भूयश्च
चरितं चरितव्रतः।।

यद्धपि गीता-प्रेस संस्करण में वर्णन है कि महर्षि ने योगबल से अन्य बातों

वर्तमान समय में इस विषय पर उपलब्ध यांत्रिक बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) तथा उत्खनन व काल निर्धारण की नवीनतम तकनीकियाँ उपलब्ध हैं। 'वेदों पर वैज्ञानिक शोध संस्थान' की निदेशक तथा पूर्व आयकर आयुक्त रहीं श्रीमती सरोज बाला ने इन सब विधाओं से ज्ञात तथ्यों को 'रामायण की कहानी विज्ञान की जुबानी' पुस्तक में संकलित किया है। आधुनिक जानकारी के आधार पर महर्षि वाल्मीकि न केवल उच्च कोटि के खगोलज्ञ थे, उन्हें विश्व-भूगोल का भी यथार्थ ज्ञान था। रामायण में दिये खगोलीय संदर्भ इतने सटीक हैं कि आश्चर्य होता है।

का विस्तार से अन्वेषण किया, किंतु यह मान भी लिया जाए कि कथाएँ पूर्व प्रचलित थी तो भी कोई गलत नहीं है। क्योंकि वाल्मीकि जी ने श्री राम के अयोध्या लौटने के बाद कथा को लिपिबद्ध किया था। नारद जी जैसे खोजी पत्रकार ने यह कथा बताई तो आख्यान इक्ष्वाकुवंश के सूतों ने लोगों को बताये ही होंगे। कामिल बुल्के इसके माध्यम से यह स्थापना करना चाहते हैं कि रामायण महाभारत के बाद की रचना है। वे लिखते हैं, ''वाल्मीकि रामायण से पूर्व राम कथा सम्बन्धी आख्यान प्रचलित थे किंतु वे अब अप्राप्य है। इसका आभास महाभारत के द्रोण पर्व और शांति पर्व में संक्षिप्त राम-चरित से मिलता है।''

कामिल बुल्के यह तो मानते हैं कि 'वाल्मीकि रामायण में बौद्ध धर्म का निर्देश नहीं मिलता', किंतु शीघ्र ही अपनी ही स्थापना का खण्डन करते हुए कहते हैं, 'पर प्राचीन बौद्ध साहित्य तथा जातकों की सामग्री के विश्लेषण से स्पष्ट है कि त्रिपिटक के रचनाकाल में रामकथा सम्बन्धी स्फुट आख्यान-काव्य प्रचलित हो गया था लेकिन रामायण की रचना नहीं हो पायी थी।' वास्तव में रामायण तथा दशरथ-जातक व अन्य बौद्ध राम कथाओं का तुलनात्मक अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि बौद्धों ने रामायण के कारूणिक कथानक को शोक की व्यर्थता के एक उपदेश मात्र में बदल दिया। यह स्वाभाविक भी है। बौद्ध और जैन रामकथाओं पर उनके दर्शन के अनुरूप परिवर्तन-परिवर्धन-व्याख्यान मिलती है। इस पर रचनाकार का विचार व वयक्तित्व भी प्रभावी होता है। उस काल में आज की तरह पुस्तक प्रकाशन की व्यवस्था नहीं थी कि एक प्रामाणिक प्रति सबको उपलब्ध हो सके। प्रतिलिपि करने वालों ने भी कई बातें जोड़ी या हटा दीं। फिर वाचिक कथाएँ फैलती शीघ्र हैं किंतु एक मुख से दूसरे

मुख में ही बदल जाती हैं, उन्हीं का संकलन बौद्ध साहित्य में लगता है। पूर्व प्रचलित कथानक के आधार पर, मौलिकता की आकांक्षा से भी नवीन कृति में योजनापूर्वक अंतर दिखाया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि दशरथ-जातक की रामकथा रामायण की कथा का विकृत रूप ही है।

कामिल बुल्के हार नहीं मानते। उनका नया तर्क है कि 'राम का अत्यन्त शांत और कोमल स्वभाव, उनकी सौम्यता आदि को ध्यान में रखकर स्वीकार करना पड़ता है कि वे मुनि पहले हैं, क्षत्रिय बाद में। अत: इनके चरित्र चित्रण में परोक्ष बौद्ध प्रभाव देखना निर्मूल कल्पना प्रतीत नहीं होती।' अर्थात् बौद्ध धर्म से पहले भारत में करूणा, सौम्यता, मुनित्त्व था ही नहीं।

अब आप बौद्ध प्रभाव नहीं मानते तो महाभारत का मानो, जबकि महाभारत के किसी पात्र या घटना का उल्लेख रामायण में नहीं है जबकि महाभारत में न केवल 'रामोपाख्यान' है, अपितु वाल्मीकिकृत रामायण का उल्लेख भी है। तब फादर बुल्के कहते हैं कि महाभारत को वर्तमान स्वरूप रामायण की रचना के बाद मिला। और बिना प्रमाण संभावना का सहारा लेते हैं कि, 'फिर भी बहुत संभव है कि 'भारत' (महाभारत का प्राचीनतम रूप) रामायण से पहले उत्पन्न हुआ।' और फिर 'प्राय:' का सहारा लेते हैं कि, 'प्राय: समस्त विद्वानों की सम्मति से रामायण का रचनाकाल भारत तथा महाभारत के बीच माना जाता है।'

पाश्चात्य औपनिवेशिक तथा मजहबी मान्यता जहाँ तक सम्भव हो ऑल्ड टेस्टामेण्ट से पुराना किसी भी ग्रंथ को स्वीकार करने की मानसिकता में नहीं होते क्योंकि बाइबल के अनुसार सृष्टि की उत्पत्ति 4004 ई.पू. में हुई और गॉड ने पहली पुस्तक 'पुराना नियम' दी। इसलिए डॉ. याकोबी पाली गाथाओं व रामायण के श्लोकों की तुलना के आधार पर वाल्मीकि रामायण का रचनाकाल चौथी शताब्दी ई.पू. मानते हैं। पाश्चात्य अध्येता ए. श्लेगेल ग्यारहवीं शती ई.पू. तथा जी. गोरेसियो इसे बारहवीं शती ई.पू. की रचना मानते हैं। इस बड़े अन्तर में सामंजस्य कैसे स्थापित किया जाए?

वर्तमान समय में इस विषय पर उपलब्ध यांत्रिक बुद्धिमत्ता (Artificial Intelligence) तथा उत्खनन व काल निर्धारण की नवीनतम तकनीकियाँ उपलब्ध हैं। 'वेदों पर वैज्ञानिक शोध संस्थान' की निदेशक तथा पूर्व आयकर आयुक्त रहीं श्रीमती सरोज बाला ने इन सब विधाओं से ज्ञात तथ्यों को 'रामायण की कहानी विज्ञान की जुबानी' पुस्तक में संकलित किया है। आधुनिक जानकारी के आधार पर महर्षि वाल्मीकि न केवल उच्च कोटि के खगोलज्ञ थे, उन्हें विश्व-भूगोल का भी यथार्थ ज्ञान था। रामायण में दिये खगोलीय संदर्भ इतने सटीक हैं कि आश्चर्य होता है। तिथि निर्धारण के लिए प्लैनेटेरियम गोल्ड (संस्करण 4.1) सॉफ्टवेयर तथा स्टेलेरियम सॉफ्टवेयर (संस्करण 0.15.2/2017) का उपयोग किया गया। इनसे प्राप्त आँकड़े तथा ग्रह-नक्षत्रों की आकाशीय स्थितियाँ श्री राम के जीवन में घटित महत्त्वपूर्ण घटनाओं के समय महर्षि वाल्मीकि द्वारा आकाश में देखे गए नक्षत्रों एवं ग्रहों की स्थितियों के विवरण से हूबहू मिलते हैं। ''ये आंतरिक रूप से सुसंगत हैं, क्रमिक रूप से सटीक हैं और पिछले 26000 वर्षों के दौरान अन्य किसी भी तिथि को इन्हें आकाश में नहीं देखा जा सकता था।''

वाल्मीकि रामायण (1-18-8 से 10) के अनुसार पुत्रेष्टि यज्ञ समाप्ति के बाद छ: ऋतुएँ बीत जाने के पश्चात् बारहवें मास में चैत्र शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को पुनर्वसु नक्षत्र एवं कर्कलग्न में कौशल्या देवी ने दिव्य लक्षणों से युक्त एक यशस्वी एवं प्रतिभाशाली पुत्र को जन्म दिया, जिसका नाम राम रखा गया। श्री राम शुभ लक्षणों एवं दैवीय गुणों से युक्त थे। उस समय चन्द्रमा पुनर्वसु नक्षत्र में था, सूर्य, शुक्र, मंगल, शनि, ब्रहस्पति ये पाँच ग्रह अपने-अपने उच्च स्थान में विद्यमान थे, अर्थात् क्रमश: मेष, मीन, मकर, तुला, कर्क राशि में थे, और बृहस्पति एवं चन्द्रमा एक साथ चमक रहे थे। जब सूर्य अपने उच्च स्थान (मेष राशि) में होता है तो। बुद्ध अपने उच्च स्थान (कन्या राशि) में नहीं हो सकता इसलिए वाल्मीकि जी द्वारा वर्णित ग्रहों में बुद्ध शामिल नहीं है।

इन सभी खगोलीय विन्यासों को अयोध्या के अक्षांश और रेखांश ($27^{O}N$ तथा $28^{O}E$) से 10 जनवरी 5114 वर्ष ई.पू. को दोपहर 12 बजे से अपराह्न 2 बजे के बीच के समय में प्लेनेटेरियम गोल्ड सॉफ्टवेयर पर देखा जा सकता है। यह चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि थी। सॉफ्टवेयर प्लेनेटेरियम गोल्ड से प्राप्त यह ई.पू. की खगोलीय तिथि है क्योंकि इनमें शून्य वर्ष का प्रावधान नहीं होता। अत: श्री राम के जन्म का ऐतिहासिक वर्ष 5115 ई.पू. होगा। प्रश्न होता है कि राम तो त्रेता में हुए और प्रचलित चतुर्युगी की मान्यता के अनुसार 837123 (83200 वर्ष द्वापर + 5123 वर्ष कलियुग) वर्ष पूर्व उनका जन्म होना चाहिए। इस सम्बन्ध में दो मत हैं। दूसरे मत के अनुसार प्रारम्भ में एक चतुर्युग 12000 मानव वर्ष का माना जाता था, जिन्हें बाद में दिव्य वर्ष मानकर (12000 3 360) 43,20,000 वर्षों की संख्या मान ली। मानव वर्षों की चतुर्युगी मानने पर 7200 वर्ष पूर्व त्रेता निर्धारित होता है और महर्षि वाल्मीकि के खगोलीय विवरण तथा सॉफ्टवेयर के परिणाम में सामंजस्य बैठ जाता है। सभी वैज्ञानिक भी यह मानते हैं कि हिम युग के पश्चात् आधुनिक नूतन युग का प्रारम्भ लगभग

ग्यारह हजार वर्ष पूर्व हुआ। वाल्मीकि जी के अनुसार वर्षा ऋतु के चार महीने श्री राम व लक्ष्मण को गुफाओं में रहना पड़ा था। बस्तर (दण्डकवन) की गुफाओं में कार्बन काल निर्धारणानुसार 7000 वर्ष पुराने अनाज के दाने मिले हैं। श्री राम अवतार शर्मा ने रामायण में दिए दिशा-निर्देशों का अनुसरण करते हुए श्री राम-वन गमन मार्ग पर अनुसंधान कर मार्ग के सौ से अधिक स्थानों की पहचान की है। राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान गोवा में गत पन्द्रह हजार वर्षों में समुद्र के जल स्तर के उतार-चढ़ाव पर एक वक्र आरेख तैयार किया गया है। इसमें दर्शाया गया है कि सात हजार वर्ष पहले समुद्र का जल स्तर वर्तमान स्तर की तुलना में 9.3 फीट नीचे था। नासा द्वारा प्राप्त रामसेतु के दूर-संवेदी के अनुसार तथा वर्तमान अवशेष समुद्र में 9-10 फीट नीचे हैं। इसका अर्थ है श्रीराम के सागर-संतरण के समय यह पदाति पार करने के लिए पूर्व स्थित अवसादी चट्टानों पर नल-नील, जो सिविल एवं मेरिन अभियंता थे, तैयार किया गया था। दिल्ली विश्व विद्यालय के मानव विज्ञान विभाग द्वारा ग्यारह हजार वर्षों से भारतीय जन समुदाय की आनुवांशिक निरंतरता वैज्ञानिक शोध द्वारा स्थापित की है। डी.एन.ए. मेपिंग के जो अन्य शोध हैं वे भी प्रमाणित करते हैं कि आर्य आक्रमण का सिद्धान्त गलत है, यहाँ के आनुवांशिक वंशानुक्रम में विलक्षण सातत्य है। इससे सिद्ध होता है कि महर्षि वाल्मीकि का यह कथन सही है कि श्रीराम सूर्यवंश (इक्ष्वाकु/ रघुवंश भी कालांतर में नामकरण) के 64वें शासक थे।

30 जुलाई 2011 को श्रीराम के जन्म व रामायण में वर्णित अन्य घटनाओं के ऐतिहासिक कालक्रम निर्धारण हेतु हुई सेमीनार के बीज भाषण में डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने कहा था - ''मेरा जन्म रामेश्वरम् में हुआ था और मैं वहाँ लगभग सोलह वर्ष तक रहा। रामेश्वरम् द्वीप के सभी स्थानों से मैं भली-भाँति परिचित हूँ, क्योंकि मैं युवावस्था में इस भू-भाग पर फैले कई घरों में प्रतिदिन अखबार बाँटने का काम करता था। इस द्वीप का केन्द्र बिन्दु रामनाथ स्वामी मंदिर है, वहाँ पर वह शिवलिंग विद्यमान है, जिसकी पूजा भगवान श्री राम ने की थी।'' इसी भाषण में उन्होंने कहा ''रामायण का एक महत्त्वपूर्ण पहलू यह है कि वाल्मीकि जी ने महाकाव्य रामायण की रचना करते समय उसमें बहुत से प्रमाण सम्मिलित किए। एक तरफ उन्होंने उस समय पर आकाश में ग्रहों एवं नक्षत्रों की स्थिति एवं बहुत से स्थलों का भौगोलिक चित्रण एवं ऋतुओं का वर्णन किया है, तो दूसरी ओर राजाओं की वंशावलियों के बारे में विस्तृत जानकारी दी है, जिसका वैज्ञानिक विधि से प्रयोग करके उन घटनाओं का समय ज्ञात करना कोई टेढी खीर नहीं है। आधुनिक तारामंडल सॉफ्टवेयर का उपयोग करके खगोलीय गणनाओं ने यह सिद्ध किया है कि वाल्मीकि रामायण में वर्णित घटनाएँ वास्तव में सात हजार वर्ष पूर्व उसी क्रम में घटित हुई थीं, जैसा कि रामायण में वर्णित है। रामसेतु उसी स्थान पर जल मग्न पाया गया है, जिस स्थान का विवरण वाल्मीकि रामायण में किया गया है।''

जन-मन के राम

मंदिर दृष्टि ने जन-मन के राम की सृष्टि की। बौद्धों ने राम को बुद्ध के पूर्व अवतारों से जोड़कर बौद्ध बना लिया तो जैनों ने उन्हें आठवाँ बलदेव मानकर जिन अनुशासन में सम्मिलित कर लिया। सिखों के लिए दशमेश पातशाह श्री गुरुगोविन्द सिंह जी ने रामावतार की रचना कर दी तो सनातनियों के तो वे आराध्य हैं ही। सनातनी परम्परा में मर्यादा पुरुषोत्तम से प्रारम्भ होकर ब्रह्मस्वरूप में रामोपासना की यात्रा अत्यन्त विलक्षण है।

महर्षि वाल्मीकि के राम मर्यादा पुरुषोत्तम हैं। वे नारद जी से पूछते हैं -

को न्वस्मिन् साम्प्रतं लोके
गुणवान् कश्च वीर्यवान्।
धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च
सत्यवाक्यो दृढव्रतः।।

वा.रा.1-1-2।।

चारित्रेण च को युक्तः
सर्वभूतेषु को हितः।
विद्वान् कः कः समर्थश्च
कश्चैकप्रियदर्शनः ।।

वा.रा.1-1-3।।

आत्मवान् को जितक्रोधो
द्युतिमान् कोऽनसूयकः।
कस्य बिभ्यति देवाश्च
जातरोषस्य संयुगे।।

वा.रा. 1-1-4।।

अर्थात् (मुने!) इस समय संसार में गुणवान्, वीर्यवान्, धर्मज्ञ, उपकार मानने वाला, सत्यवक्ता और दृढ़ प्रतिज्ञ कौन है? सदाचार से युक्त, समस्त प्राणियों का हित साधक, विद्वान्, सामर्थ्यशाली और एक मात्र प्रियदर्शन पुरुष कौन है? मन पर अधिकार रखने वाला, क्रोध को जीतने वाला, कान्तिमान् और किसी की भी निन्दा नहीं करने वाला कौन है? संग्राम में कुपित होने पर किससे देवता भी डरते हैं?

महर्षि वाल्मीकि भूतकाल में हुए या भविष्य में होने वाले व्यक्ति की नहीं, वर्तमान में इन समस्त गुणों के आदर्श समुच्चय के नाम की जिज्ञासा करते हैं। इसके उत्तर में नारद दाशरथि राम का नाम लते हैं जो ब्रह्मतेज और क्षात्र बल का एक ही व्यक्ति में दुर्लभ संयोग है। इस राम का लोगों ने दरस, परस पाया है, शील, स्वभाव, शौर्य को देखा है, यह राम उनके बीच का है, अपना सा है, अपनत्व भरा है, स्वयं के आचरण से

मर्यादा की शिक्षा देता है, यह राम मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम है जिसका अनुसरण किया जा सकता है।

लोकसभा की अध्यक्ष रही सुमित्रा महाजन कहती है – ''राजनीति में प्रवेश करने से पहले मैं प्रवचन करती थी, राष्ट्र सेविका समिति की सेविका के नाते हमारी प्रमुख व मावशी (मौसी) उपाख्य लक्ष्मी बाई केलकर के रामायण प्रवचनों को आधार बनाकर, वाल्मीकि रामायण को साक्षी मानकर प्रभु रामचन्द्र, राजाधिराज रामचन्द्र, श्रेष्ठ पुत्र राम, एक पत्नी व्रती, सच्चरित्र राम, सज्जन रक्षक, संस्कृति रक्षक, अनेकानेक स्वरूप में श्रेष्ठ-श्रेष्ठ मानव श्री राम नर से नारायण कैसे बने -उच्च आदर्श राम इस भाव से राम चरित्र समाज में रखने का प्रयास था, क्योंकि मेरी मान्यता है कि किसी को भगवान मानकर उच्च आसन पर बैठाकर भक्ति भाव से पूजा करके वरदान माँगने का आसान रास्ता हम सामान्य मानव बहुत सुलभता से अपनाने की कोशिश करते हैं। क्योंकि वे तो भगवान थे, भगवान् तो सर्वश्रेष्ठ है, सब कुछ कर सकता है। हम तो सामान्य मानव याचना ही कर सकते हैं, यह बोलकर ईश्वरीय गुणों की केवल पूजा करना भले ही आसान है, लेकिन सामर्थ्यशाली समाज निर्मिति के लिए योग्य नहीं। इसलिए मेरी मान्यता थी कि प्रभु श्रीराम, दशरथ पुत्र राम एक श्रेष्ठ मनुष्य, उनका चरित्र सामने रखते हुए हम भी उनका अनुकरण करते हुए श्रेष्ठत्व की राह पर आगे बढ़ सकते हैं। इसलिए श्री राम एक इतिहास पुरुष हैं, यह भूमिका रखते हुए राम-चरित्र का अध्ययन-अध्यापन हो।''

भक्तिकाल तक आते-आते अवतार कथाएँ जन-व्यापी हो गई । पुराण कथाएँ इसका आधार बनी और राम मर्यादा पुरुषोत्तम से भगवान राम तथा अन्ततः ब्रह्म के पर्याय हो गए। मुस्लिम आक्रमण काल में इसके तात्कालिक आधार भी थे। त्रस्त जनता को एक अलौकिक तारणहार की आवश्यकता थी। इसी समय सगुण-साकार के साथ एक निर्गुण-निराकार की धारा भी साथ-साथ प्रवाहित होने लगी। उपासना मर्यादा पुरुषोत्तम के रूप में हो, अवतारी राम के रूप में हो या निराकार ब्रह्म के रूप में - उपास्य के आदर्श गुणों में अंतर नहीं आया। प्रेरणा का उत्स वैसा ही अजस्र प्रवाहित होता रहा।

निराकार और साकार में समन्वय के भी स्वर सुनाई देते रहे, एक अभेद की सृष्टि सृजित होती रही। वाल्मीकि रामायण में जोड़े गए महात्म्य में नारदजी के मुख से कहलवाया है -

'परात्परनिवासाय सगुणायागुणाय च'
(2-16)

जिनका निवास-स्थान उत्कृष्टतम् है तथा जो सगुण और निर्गुण रूप हैं (उन श्रीराम को मेरा नमस्कार) श्री गुरु ग्रंथ साहिब में 2533 बार राम का नाम आया है। उसमें वाणी है - 'ईघै निरगुन उघै सरगुन केल करत बिचि सुआमी मेरा' - वह राम यहाँ निर्गुण है, उधर सगुण है, मेरा स्वामी तो दोनों के बीच लीला करता है।

निरंकार आकार आपि
निरगुन सरगुन एक।
एकहि एक बखाननो
नानक एक अनेक।।

आप ही निराकार- साकार और निर्गुण- सगुण है। सर्वत्र एक ही परम तत्व का विस्तार है, वह एक परमात्मा ही अनेक हुआ है। (एकोऽहं बहुस्याम्)

कबीर के लिए राम ब्रह्म है वह प्रत्येक व्यक्ति, वस्तु व स्थान में व्याप्त है, उसे भीतर ही खोजना है -

'ब्रह्म खोजत जनम गँवायो।
सोइ राम घट भीतर पायो।।

उसे घट के भीतर पाने की विधि है राम नाम का जाप-

'राम जपो जिय ऐसे ऐसे।
ध्रुव प्रहलाद जप्यो हरि जैसे।।'

और कबीर का जाप भी कान्ता भाव से है -

'राम मोरेपिउ मैं राम की बहुरिया'
'दुल्हनियाँ गावहु मंगलाचार।
हमरे घर आये हो राजा राम भरतार।।

राम के प्रति कबीर के समर्पण की पराकाष्ठा देखिये-

'मैं गुलाम मोहि बेच गुसाई।
तन मन धन मेरा राम के पाई।।
कबीर कूता राम का,
मुतिया मेरा नाउँ।
गले राम की जेवड़ी,
जित खैंचे तित जाउँ।।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रुति के वचन 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' के अनुरूप सब धाराओं में समन्वय स्थापित करते हुए कहा -

'जा की रही भावना जैसी।
प्रभु मूरत तिन देखी तैसी।।'

तुलसी के मानस-सरोवर में मज्जन की शर्तें हैं - तुलसी के राम विष्णु के अवतार हैं, मनुष्य रूप में तो वे केवल लीला कर रहे हैं, अतः प्रथम शर्त है इष्ट के प्रति श्रद्धा का सहारा, सत्संग द्वारा इस श्रद्धा की पुष्टि व वृद्धि दूसरी शर्त है। अंतिम शर्त है, इससे संपोषित हृदय से सर्वत्र प्रेम की वर्षा, क्योंकि 'प्रेम से प्रकट होई भगवाना'।

जे श्रद्धा संबल रहित
नहिं संतन कर साथ।
तिन्ह कहँ मानस अगम
अति जिन्हहिं न प्रिय रघुनाथ।।

तुलसी राम को अवतार मानते हुए भी केवल पूजा या पुण्यलाभ का साधन मानस को नहीं मानते। जिह्वा द्वारा किया जप, कीर्तन, रामचरित का पारायण, कथा श्रवण का उद्देश्य 'शिवो भूत्वा शिवं यजेत्' है। चरित्र और कर्म क्रमशः उच्च कोटि का और मन आध्यात्मिक बने यही राम-कथा का उद्देश्य है। क्योंकि राम को

ऐसे ही लोग प्रिय हैं –

सोई सेवक मम प्रियतम सोई।
मन अनुसासन मानै जोई।।

राम का अनुशासन क्या है? वे मर्यादा पुरुषोत्तम क्यों है? यह मर्यादा है धर्म। धर्माचरण करने वाले सज्जनों की रक्षा करने, धर्माचरण में बाधक बनने वाली आसुरी शक्तियों का विनाश करने तथा धर्म का अनुशासन पुनः स्थापित करना ही वे अपने जन्म का उद्देश्य बताते हैं –

जब-जब होई धरम कै हानी।
बाढहिं असुर महा अभिमानी।।
तब तब प्रभु धरि मनुज सरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा।।

(बालकाण्ड, शिव-पार्वती संवाद)

राम भगत हित नर तनु धारी।
सहि संकट किय साधु-सुखारी।।

(वन प्रसंग)

तुम सारिखे संत प्रिय मोरे।
धरऊँ देह नहिं आन निहोरे।।

(विभीषण से)

धर्म का अनुशासन क्या है? धर्म की एक परिभाषा इहलौकिक (अभ्युदय) और पारलौकिक (निःश्रेयस) सुख अर्थात् भौतिक ऐश्वर्य की प्राप्ति तथा आध्यात्मिक साधना के निष्कंटक अवसरों की उपलब्धि का नाम धर्म है। 'सुराज्य' की स्थापना द्वारा श्री राम ने इसका उदाहरण प्रस्तुत किया। अतः उनकी राज्य व्यवस्था का नाम ही 'राम-राज्य' हो गया जिसमें –

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज काहू नहिं व्यापा।।
सब नर करहिं परसपर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।
नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना।
नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।

धर्म की दूसरी परिभाषा व्युत्पत्ति परक है। 'धारणात् धर्म' अर्थात् वे लोक मर्यादाएँ या नागरिक कर्त्तव्य जिनके पालन से समता व बंधुता युक्त समरस समाज की धारणा होती है। ऐसी लोकाचरण वाली धर्म मर्यादाएँ राम ने अपने आचरण से स्थापित की। राजा के रूप में वे मर्यादा स्थापित करते हैं –

'जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी।।'

यदि राम भी अनीति करे तो प्रजा को अधिकार है कि वे उसे रोके –

'जो अनीति कुछ भाषौं भाई। तौ मोहि बरजहु भय बिसराई।।' वे भविष्य के राज्यकर्त्ताओं को भी इस राज-धर्म के पालन की प्रेरणा देते हुए कहते हैं – ''हे भविष्य के भूमिपालों! यह राम आप से विनय पूर्वक याचना करता है कि आप लोग मेरे द्वारा स्थापित इस धर्म-सेतु की सदा रक्षा करते रहें –''

'भूयो भूयो भाविनो भूमिपाला,
नत्वा नत्वा याचते रामचन्द्रः।
सामान्योयं धर्म सेतुर्नराणां,
काले-काले पालनीयो भवद्भिः।।'

इसी मर्यादा पालन के कारण महर्षि वाल्मीकि घोषणा करते हैं कि उस राष्ट्र का हित हो ही नहीं सकता जहाँ राम जैसे राजा ना हों –

'न हि तद् भविता राष्ट्रं
यत्र रामो न भूपति'

राजा के लिए प्रजा ही आराध्य है, परिवार नहीं। आज राजनीति में परिवार-हित के लिए देश-हित को दाँव पर लगाने वाले दृश्य जब दिखाई देते हैं तो श्रीराम की प्रतिज्ञा का स्मरण होता है –

स्नेहं दया च सौख्यं च
यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकस्य मुञ्चतो
नास्ति मे व्यथा।।

श्रीराम 'गरीब नवाज' हैं 'दीन-दयाल' हैं, भाव के भूखे हैं –

'उल्टा नाम जपत जग जाना।
बाल्मीकि भये ब्रह्म समाना।।'

राम शरणागत वत्सल हैं किंतु साथियों के मत का सम्मान करने वाले हैं। विभीषण के सम्बन्ध में सुग्रीव के आकलन का सम्मान करते हैं किंतु शरणागत को अभय देने की अपनी टेक का त्याग नहीं करते –

'सखा नीति तुम नीकि बिचारी।
मम पन सरनागत भय हारी।।'

राम बात से पलटते नहीं (रामो द्विर्नाभिभाषते) क्योंकि यही रघुकुल की मर्यादा है –

'रघुकुल रीति सदा चली आई।
प्रान जाहिं पर बचन न जाई।।'

राम विष्णु सहस्त्रनाम (अमानी, मानदो, मान्यो, लोकस्वामी, त्रिलोकधृत) की तरह अपनी सफलता का श्रेय सहयोगियों को देते हैं –

तुम्हरे बल मैं रावण मार्‌यो।
तिलक विभीषण कहँ पुनि सार्‌यो।।

सीता की खोज में सफल होकर जब हनुमान जी आते हैं तो यह राम ही कह सकते हैं –

सुनु कपि तोहि समान उपकारी।
नहिं कोउ सुर नर मुनि तनुधारी।।
प्रति उपकार करौं का तोरा।
सनमुख होइ न सकत मन मोरा।।
सुनु सुत तोहि उरिन मैं नाहीं।
देखउँ करि बिचार मन माहीं।।

राम का शील-स्वभाव परशुराम जैसे कठोर हृदय को भी शांत करने की सामर्थ्य रखता है –

अति बिनीत मृदु शीतल बानी।
बोले राम जोरि जुग पानी।
राम मात्र लघु नाम हमारा।
परशु सहित बड़ नाम तुम्हारा।।

राम अपने दुःख को दुःख नहीं मानते, हर स्थिति में आनंदित रह लेते हैं, किंतु दूसरों के दुःख से दुःखी हो जाते हैं। यह बात हनुमान जी अशोक वाटिका में माता सीता से कहते हैं –

मातु कुसल प्रभु अनुज समेता।
तव दुख दुखी सु कृपानिकेता।।

राम राजपुत्र हैं अतः भुजा उठाकर भूमि को निसिचर हीन करने की प्रतिज्ञा के उपरान्त ऋषि-मुनियों को सुरक्षा के प्रति आश्वस्त करने के लिए दरबार नहीं

लगाते, संत-सम्मेलन के मंच से घोषणा नहीं करते। ऋषि-मुनियों के आश्रमों में स्वयं जाकर अभय देते हैं।

निसिचर हीन करउँ महि
भुज उठाइ पन कीन्ह।
सकल मुनिन्ह के आश्रमन्हिं
जाइ जाइ सुख दीन।।

ऐसा क्यों किया? प्राचीन काल में सभी ऋषि-मुनियों के आश्रम वनों में थे। ये विद्या-केन्द्रों के साथ-साथ साधना-स्थल, तपोभूमि भी थे। इस प्रकार आश्रमों में विद्यार्थी, आचार्य व उनके परिवार, ऋषि, मुमुक्षु आदि रहते थे और इनके आस-पास जनजातियों के निवास थे। इतिहास में एक भी उदाहरण नहीं है जब आश्रमवासियों व जनजातियों में परस्पर संघर्ष हुआ हो, परस्पर पूरकता के प्रसंग तो अनेक हैं। चित्रकूट में जनजाति के लोग कंद-मूल फल लेकर राम जी से जौहार करने आते हैं तथा उनकी कुटी बनाते हैं। रावण ने इनमें संघर्ष उत्पन्न करने की योजना से ही त्रिसरा, खर-दूषन तथा सूर्पणखा को नियुक्त किया था। उसका उद्देश्य दण्डक वन में अनार्य संस्कृति (रक्ष-संस्कृति) के प्रसार के माध्यम से जनजातियों को आर्य-संस्कृति से काट कर अपने पक्ष में करना था। आर्य संस्कृति के प्रसार के केन्द्र आश्रम थे। जैसे आज सेकुलर गेंग व कल्चरल मार्क्सिष्ट नक्सलवादियों के माध्यम से करने का प्रयत्न करते हैं। राम ने इसी संकट को भाँपकर परिस्थितियों का वास्तविक अध्ययन करने तथा आर्य-संस्कृति के साधकों को अभय देने के लिए आश्रमों का भ्रमण किया। खर-दूषण, त्रिसिरा तथा इनके हस्तक बने जनजाति के ही बाली का वध किया तथा जनजाति बंधुओं को गले ही नहीं लगाया कपि व ऋक्ष गोत्रीय जनजातियों की संगठित शक्ति का उपयोग कर रावण जैसी महाशक्ति को परास्त किया तथा आर्य-संस्कृति के समर्थक व अभ्यासक विभीषण को लंका में प्रतिष्ठित किया तथा सुग्रीव को किष्किंधा का राज्य दिया।

अंगद-रावण संवाद में रावण बाली से अपनी मित्रता का वर्णन कर स्वयं को जनजाति हितैषी सिद्ध कर रामादल से उसे पृथक् करने का प्रयत्न करता है। अपने हितों की सिद्धि के लिए यह छद्म जनजाति प्रेम अंगद को प्रभावित नहीं करता क्योंकि राम के रूप में उसने आर्य-व्यवहार का स्नेहिल स्पर्श पाया था तथा आर्य संस्कृति की उदात्तता का अनुभव किया था। रावण पुलस्त्य कुल में विश्रवा ऋषि की संतान होने तथा वेदज्ञ विद्वान होने के दावे से ब्राह्मण है, लंका का राजा होने के कारण कर्म से क्षत्रिय है, मर्म से रक्ष-संस्कृति का प्रवक्ता होने के कारण आर्य-द्रोही है। वह कहीं से भी जनजाति नहीं है, किंतु अरबन नक्सल्स की भाँति जो जनजाति के युवक-युवतियों को लड़ाके नक्सलवादी बनाकर उनके प्राणों की कीमत पर, उनको परिचालित करने वाले डॉन बने हुए हैं - रावण भी बनने का प्रयत्न करता दिखाई देता है। फिर जनजाति तो सुग्रीव भी है जो रावण के मित्र, अपने ही भाई से प्रताड़ित है। रावण तो भाइयों में ही फूट डाल कर परिवारों में कलह उत्पन्न कर विखण्डन का कार्य कर रहा है, जैसे इवेंजेलिकल शक्तियाँ जनजाति क्षेत्र में ईसाईकरण द्वारा घरों व गाँवों में आपस में संघर्ष करा रही हैं। श्री राम के चित्र कूट से चलकर पंचवटी आने का प्रयोजन ही जनजातियों को रावण के रक्ष-चंगुल से मुक्त करवाना था, अन्यथा चौदह वर्ष तो चित्रकूट में भी आसानी से व्यतीत हो जाते। विंध्याचल पार की समस्याओं को सबसे पहले अगस्त्य मुनि ने ही समझा था अत: उन्होंने राम से पंचवटी (नासिक) जाने का आग्रह किया था। सूर्पणखा उनके पंचवटी में रहने का परिणाम जानती थी (जैसे अर्बन नक्सलवादी जनजाति क्षेत्र में विकास का परिणाम जानते हैं।) सूर्पणखा धवलवेशधारी मिशनरी बाई की तरह सुंदर वेश व रूप बनाकर वहाँ घूमती है। सूर्पणखा ने राम को भी अपने पाले में लाने के लिए पहले 'हनी ट्रेप' का सहारा लिया, असफल होने पर असली रूप दिखाया, हमले का प्रयत्न किया तब अपनी करनी का फल 'नाक कटाकर' पाया। 'नाक कटना' मुहावरा है जिसमें अपमान होने से लेकर रक्त स्राव तक कुछ भी अर्थ लिया जा सकता है।

राम ने जनजातियों को किस सीमा तक अपना बना लिया था? सीता-हरण के विरुद्ध, एक महाशक्ति रावण से टकराने का परिणाम जानते हुए भी, अपनी सामर्थ्य के अंतिम अंश तक स्त्री रक्षा का प्रयत्न करने और अन्तत: प्राण त्याग देने वाला जटायु, माता-सीता के लंका में होने की पुष्ट सूचना देकर वानर-दल को आत्म हत्या से बचाने वाला सम्पाति गीध वंशीय जनजाति के बंधु थे। राम और सुग्रीव में मित्रता करवाने के उद्देश्य से उन्हें सुग्रीव के पास जाने का परामर्श देने वाली, माता सीता के लंका में होने की विभीषण द्वारा प्राप्त सूचना से श्रीराम को अवगत करवाने वाली, अपने अतिथि को मीठे फल ही मिलने चाहिए अत: चख-चखकर बेर एकत्रित करने वाली परम तपस्विनी, भक्ति की प्रतिमूर्ति, माता शबरी भील जनजाति की ही थी। निषाद राज गुह तो राम के सखा ही हैं। राम के आतिथ्य के अतिरिक्त उत्तम नौका निर्माण तथा नौ-परिवहन तंत्र के विशेषज्ञ निषाद राज उनके सरिता-संतरण की व्यवस्था करते हैं। राम सेतु निर्माण करने वाले नल-नील, आयुवृद्ध जाम्बवान् के अनुभवों के योगदान को भला कौन विस्मृत कर सकता है? ये सब जनजाति समुदाय की सज्जन शक्तियाँ हैं जो स्वत्व के आधार पर राम के साथ होती हैं। इसीलिए

तुलसी बाबा कहते हैं –

'केवट मीत कहे सुख मानत,
बानर बंधु बड़ाई।'

राम महिला के प्रति भारत की सनातन दृष्टि को स्थापित करते हैं। रघुवंश की यह परम्परा है कि उनका मन कुपथ गामी होने की सोच भी नहीं सकता। पर स्त्री का चिंतन तो स्वप्न में भी संभव नहीं है।

रघुबंसिन कर सहज सुभाऊ।
मन कुपंथ पग धरे न काऊ।।
मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी।
जेहि सपनेहुँ पर नारि न हेरी।।

रघुवंश की इस रीति के कारण ही लक्ष्मण कहते हैं कि मैं माता सीता के नूपुर के अतिरिक्त किसी गहने को नहीं पहचानता क्योंकि चरण-स्पर्श के समय इन्हें ही देखना हुआ था–

नाहं जानामि केयूरे नाहं
जानामि कुण्डले।
नुपुरे त्वभिजानामि नित्यं
पादाभि वंदनात्।।

श्री राम सहित सभी भाईयों ने भ्रातृ-प्रेम का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया।

राम करहि भ्रातन्ह पर प्रीती।
नाना भाँति सिखावहिं नीती।।

श्रीराम को भरत पर कितना विश्वास है? लक्ष्मण से कहते हैं –

'भरतहि होई न राजमदु,
विधि हरि हर पद पाइ'

यदि ब्रह्मा, विष्णु, महेश का संयुक्त पद प्राप्त हो जाए तो भी भरत को राजमद नहीं हो सकता।

श्रीराम का राजतिलक होना है। ज्येष्ठ पुत्र को राजपद की परम्परा है किंतु राम इसे उचित नहीं मानते। उनका तर्क है कि जब हम सब भाई एक साथ जन्मे, बड़े हुए, खेले-खाये तो हम भाइयों के बीच विषमता क्यों होनी चाहिए? यही कारण है कि उन्होंने चारों भाइयों के आठों पुत्रों को पृथक्-पृथक् प्रदेशों के शासन सौंपे। राम कहते हैं –

जनमे एक संग सब भाई।
भोजन सयन केलि लरकाई।।
बिमल बंस यह अनुचित एकू।
बंधु बिहाइ बडेहि अभिसेकू।।

राम राजपुत्र थे। राजनैतिक, कूट नीतिक कारणों से वैवाहिक सम्बन्ध बनाना सामान्य परम्परा थी। राम ने एक पत्नी व्रत लिया था अत: सिया-हरण के उपरान्त पुन: एक विवाह कर लेते तो व्रत टूटने वाला नहीं था किंतु उसके बाद वनवास का शेष समय सीता-संधान व अपहरणकर्ता को दण्डित करने में बीता। संसार में यह अनूठा उदाहरण है जब केवल सत्व बल से रावण जैसी महाशक्ति को परास्त कर दिया। भोज-प्रबंध में लिखा है –

विजेतव्या लङ्का
चरणतरणीयो जलनिधिः,
विपक्षः पौलस्त्य रणभुवि
सहायाश्च कपयः।
पदातिर्मर्त्योऽसौ
सकलमवधीद्राक्षसकुलं,
क्रिया सिद्धिः सत्त्वे भवति
महतां नोपकरणे।।

अजेय लंका नगरी को जीतना था, सागर को चरणों से पार करना था, दुश्मन दशानन, ब्रह्मा से वर प्राप्त पुलस्त्य वंशी रावण था, संग्राम भूमि में सहायक थे वानर, राम पैदल थे (रावण रथी विरथ रघुवीरा), मनुष्य थे पर उन्होंने सारे राक्षस कुल का संहार कर दिया, क्योंकि क्रिया सिद्धि साधनों से नहीं सत्व बल, पौरुष से होती है।

अपने पौरुष पर उन्हें कितना विश्वास है? सीता को कौन, कहाँ ले गया यह पता नहीं। वन में सबसे पूछते फिर रहे हैं कि 'मेरी सीता को देखा क्या'। वे जटायु से कहते हैं कि परलोक में जाकर पिता दशरथ से सीता-हरण का समाचार न कहना। रावण स्वयं परिवार सहित परलोक में जाकर सिया-हरण तथा उसके परिणाम की कथा सुनायेगा। इतना अदम्य विश्वास! कारण, 'क्योंकि मैं राम हूँ!!'

'जो मैं राम तो कुल सहित,
कहहिं दसानन आइ।'

राम ने हमारे समक्ष पुरुषार्थी बनने का आदर्श रखा है। जो लोग धर्म के नाम पर मंदिर जाकर केवल भगवान् से माँगने में विश्वास रखते हैं, उनके सम्बन्ध में तुलसी दास जी 'विनय-पत्रिका' में लिखते हैं कि, 'भीख माँगने, प्रार्थना करने से असह्य गरीबी के दोष, दु:खों से कोई नहीं बचा सकता, अत: किसी से न माँगकर प्रबल पुरुषार्थ करना

चाहिए।' याचना करने से न भक्ति मिलती है न मुक्ति –

देव दनुज मुनि नाग मनुज
नहिं जाँचत कोउ उबर्‌यो।
मेरो दुसह दरिद्र दोष
दुःख काहू तो न हर्‌यो।।

राम द्वारा स्थापित मर्यादाएँ आचरणीय धर्म का आधार बन गईं। पिता, माता, भाई, पत्नी, समाज, राष्ट्र के प्रति कर्त्तव्यों के प्रतिमान स्थापित करने वाले राम 'विग्रहवान् धर्म' बन गए, चल मूर्ति, उत्सव मूर्ति –

रामो विग्रहवान् धर्मः
साधुः सत्य पराक्रमः।
राजा सर्वस्य लोकस्य
देवानामिव वासवः।।

राम आबाल-वृद्ध के प्रेरक हो गए। जिसने भी रामकथा सुनी, अभिभूत हो गया और उसने अपनी भाषा, बोली में उसका गान-अनुगान प्रारम्भ कर दिया। रामकथा देश की सीमाएँ लाँघकर विश्वव्यापी हो गई। भारतीय संस्कृति के विश्व संचार के साथ पहुँची भारतीय गाथाओं में सबसे लोकप्रिय रामायण है।

स्थानीय लोगों के त्यौहार, नृत्य, गीत, अल्पना-रंगोली, चित्र, नाट्य, लीलाएँ उनके अपने-अपने क्षेत्रों से श्रीराम के जीवन काल में घटी घटनाओं की स्मृतियों से जुड़ी हुई हैं। अयोध्या में वह जन-जन का 'लल्ला' है तो कोशल में राजाराम का गुणगान है। संगम के निवासी सीता, राम तथा लक्ष्मण को गंगा पार कराने वाले केवट के गीत रचते हैं, दण्डक वन के लोकगीतों में राम है, जानकी से जनजाति महिलाओं की ठिठौली है, जनकपुरी में जानकी के कष्टों की स्मृति है तो अयोध्या से जाने वाले को मिथिला के मंदिरों में तिलक-नेग दिया जाता है। किष्किंधा से रामेश्वरम् तक राम के पराक्रम की स्तुतियाँ हैं। रामेश्वरम् का पूर्व राजवंश आज भी सेतुपति कहलाता है क्योंकि उन्हें राम सेतु की रक्षा का दायित्व सौंपा गया था। जोधपुर के मण्डोर में दशहरा नहीं होता क्योंकि उनके अनुसार मन्दोदरी उनकी बेटी है जो इस दिन विधवा हो गई। सीता स्वयंवर के गीत जनकपुरी में गूंजते हैं। मिथिला के लोग तो अवध में पुत्री का विवाह करने से परहेज करने लगे थे क्योंकि सीता का निर्वासन उन्हें आज भी पीड़ा देता है। 300 से अधिक भाषाओं में तीस से अधिक देशों में राम से जुड़े किसी न किसी प्रसंग की स्मृतियाँ हैं या राम-कथा के आयोजन होते हैं।

प्राचीन विश्व का राम कथा पर सबसे उत्कृष्ट मूर्ति शिल्प 'प्रम्बनम् मंदिर' इण्डोनेशिया में है। तेरियन सेन्दरात्रि रामायण (नृत्यमय नवरात्रि रामकथा) यहाँ का राष्ट्रीय महोत्सव है। मलेशिया में 'हिकायत सेरिराम', का पठन-पाठन है। थाइलैण्ड के राजा को 'राम खमेङ्' (राजा राम) कहते हैं। 'राम कियेन' (रामकीर्ति) वहाँ की रामायण है तथा इस पर आधारित दो प्रकार के नाट्य खोन (मुखौटा नृत्य) व लखौन प्रसिद्ध है। बाली में रामायण का 'ककाविन पाठ' व राम कथा पर आधारित केचक नृत्य विश्व प्रसिद्ध हैं। मेक्सिको की इंका संस्कृति में 'राम सितव' उत्सव होता था। मिश्र के 19 व 20 वें राजवंश में 11 राजा हुए जिनकी उपाधि 'रामसेस' (राम अस्य ईश) थी। कोरियन लोगों के लिए तो भारत नानी का घर है क्योंकि वहाँ के राजा का विवाह अयोध्या की राजकुमारी से 47 ई. में हुआ था। यूनानी कवि होमर की 'इलियड' रामायण का देशज संस्करण है। रामकथा वाङ्मय अत्यन्त विस्तृत है। संस्कृत में वाल्मीकि रामायण, रामोपाख्यान (महाभारत में), योग वाशिष्ठ, अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण, अद्‌भुत रामायण, रामायण चम्पू, रामायण मंजरी, पादुका सहश्रम आदि प्रसिद्ध राम कथाएँ है। अन्य भारतीय भाषाओं में कम्बु रामायण (तमिल), मलयाली रामायण (केरल), तेलुगू रामायण व कल्पवृक्षामु (आंध्र, तेलंगाना), श्रीरामायण दर्शनम् (कन्नड़), कृतिवासी रामायण (बांग्ला), रामावतार (गुरुमुखी), रामचरितमानस (हिन्दी), कश्मीरी रामायण, गीति रामायण (असमिया), राम-विजय (असमिया), लव कुशरयुद्ध (असमिया), मराठी रामायण (संत एकनाथ, समर्थ राम दास), गीत-रामायण (मराठी), रण यज्ञ (गुजराती), लुशाई रामायण (मीजो), खामती रामायण (थाई), करबी रामायण – भारत की लगभग प्रत्येक भाषा-बोली में राम कथा है।

जैन राम कथा – पउम चरियं (विमल सूरि), मैथिली कल्याण व अंजना पवनंजय (हस्तिमल्ल), वसुदेव हिंडी (संघदास), रामलक्खण चरियमं (शीलाचार्य), सीया चरियं तथा राम लक्खण चरियं (भुवन तुङ्ग सूरि), पद्म चरित (रविषेण), जैन रामायण (हेमचन्द्र), रामदेव पुराण (जिन दास), रामचरित (पद्मदेव विजयगणि), रामचरित (सोमसेन), पउम चरिउ (स्वयंभू देव), बल भद्र पुराण (रइघू), पम्प रामायण (नाग चंद्र), राम विजय चरित (देवप्प), राम कथावतार (देवचन्द्र), जिन रामायण (चन्द्रसागर वर्णी), बौद्ध रामायण – दशरथ जातक, ब्रह्मचक्र, राम वत्थु (बैंकाक), साम जातक, अनामकं जातकम्, दशरथ कथानम्

विदेश – खोतानी रामायण (ईरान), हिकायत सेरी राम (मलेशिया), ककविन (जावा), महारादीया लावण (फिलिपींस), रामकीयेन (थाइलैण्ड), फा-ला-फा राम (लाओस)।

हम यही कह सकते हैं कि 'हरि अनंत हरि कथा अनन्ता।' ❑

राम की व्याप्ति

प्रो. उमेश कुमार सिंह
पूर्व निदेशक
साहित्य अकादमी मध्य प्रदेश, भोपाल (म.प्र.)

'राम' व्युत्पत्ति एवं अर्थ - 'रम्' धातु में 'घञ्' प्रत्यय के योग से 'राम' शङ्घ निष्पन्न होता है। 'रम्' का अर्थ रमण (निवास, विहार) करने से संबद्ध है। वे प्राणिमात्र के हृदय में 'रमण' (निवास) करते हैं, इसलिए 'राम' हैं, तथा भक्त जन उनमें 'रमण' करते (ध्यान निष्ठ होते) हैं, इसलिए भी वे 'राम' हैं - 'रमते कणे कणे इतिराम:'। आद्य शंकराचार्य ने 'पद्मपुराण' का उदाहरण देते हुए कहा है कि 'नित्यानन्दस्वरूपभगवान् में योगिजन रमण करते हैं, इसलिए वे 'राम' हैं।' राम को राष्ट्र का प्रतीक मानते हुए संतों की परंपरा में 'रा' अर्थात् राष्ट्र और 'म' अर्थात् मंगल। यानी राम राष्ट्र के मंगल (कल्याण) के प्रतीक हैं।

राम की व्याप्ति और विस्तार

राम के परिचय का आधार 'रामकथा' है। भारतीय जीवन मूल्य की आन्तरिक संरचना के ताने-बाने में 'रामकथा' गुम्फित है। भारतीय संस्कृति के उदात्त-मूल्यों का सृजन 'रामकथा' के मूल में है। इसी रूप में इस कथा की कालजयिता भी सिद्ध होती है। 'रामकथा' में निबद्ध संवेदना भारतीयता के मूल स्वत्वों का विस्तार करती है। समय के बदलावों में इस कथा की शक्ति कभी क्षीण नहीं हुई। 'राम' कथा की यह सांस्कृतिक व्यापकता इतिहास के परिवर्तन के साथ विस्तार पाती गई। माना जाता है कि 'राम' ने अपने जीवन से लोक को अभिव्यक्ति दी तो लोक ने 'रामकथा' को युगानुरूप विकसित कर विस्तार दिया।

राम कथा का मूल आधार आदिकवि वाल्मीकि की संस्कृत भाषा में रचित 'रामायण' है। 'रामायण' के बाद ही साहित्य और समाज में राम का परिचय आया। संस्कृत के साथ अन्य भारतीय भाषाओं में इस रामायण को स्रोत रूप में ग्रहण किया गया। काव्य, नाटक, कथा और अन्य साहित्यिक विधाओं में 'रामायण' को आधार बनाकर विपुल साहित्य का सृजन हुआ। राम के जीवन पर शोध करने वाले कामिल बुल्के लिखते हैं, 'रामकथा अनेक रूप धारण करते हुए शनै: शनै: संपूर्ण भारतीय-संस्कृति में व्याप्त हो गयी है। उसकी अद्वितीय लोकप्रियता निरन्तर अक्षुण्ण ही नहीं वरन् शताब्दियों तक जिन कृतियों में उनकी झलक मिलती है उनमें - 'भुशुण्डिरामायण', 'योगवसिष्ठ', 'अध्यात्मरामायण', 'अद्भुत्रामायण', 'आनन्द रामायण', प्रमुख हैं।

उपनिषदों, पुराणों, जैन, बौद्ध और प्राकृत साहित्य में भी रामकथा व्याप्त है। बौद्ध परंपरा में श्रीराम से संबंधित दशरथजातक, अनामकजातक तथा दशरथकथानक नामक तीन जातक कथाएँ उपलब्ध हैं। जैन साहित्य में रामकथा सम्बन्धी कई मुख्य ग्रंथ -विमलसूरिकृत

'पउमचरियं' (प्राकृत), आचार्य रविशेणकृत 'पद्मपुराण' (संस्कृत), स्वयंभू कृत 'पउमचरिउ' (अपभ्रंश), रामचंद्र चरित्रपुराण तथा गुणभद्र कृत उत्तरपुराण (संस्कृत) आदि हैं। परमार भोज ने भी 'चंपुरामायण' में राम कथा का वर्णन किया है। महाभारत में भी 'रामोपाख्यान' के रूप में आरण्यक पर्व (वनपर्व) में प्राप्त होता है। इसके अतिरिक्त 'द्रोणपर्व' तथा 'शांतिपर्व' में भी राम के सन्दर्भ उपलब्ध हैं।

राम को विष्णु का अवतार माना गया। 'राम' का जीवन हमारे संवेगों को अधिक प्रभावित करता है। कुबेरनाथराय 'रामायण महातीर्थम्' नामक पुस्तक में लिखते हैं, 'श्रीराम भारतीय परंपरा में सर्वाधिक व्यापक और संकल्प-संवेग-संपन्न नायक हैं। भारतीय परंपरा पूरे एक समाज के सामने आती है और वह समाज भारत के आज के मानचित्र से ज्यादा व्यापक है। वह वंक्षुधारा से लेकर पूर्वीद्वीप समूह तक के संपूर्ण मनोमय भारत से है। यानी 'सेरेहिन्दी', 'लघुहिन्दी', 'हिन्दखास' एवं 'हिन्देशिया' के साथ-साथ महाचीन-तिब्बत तक। इस समूचे विशाल भूखण्ड में कुरतन (खोतान) से लेकर कम्पूचिया तक राम कथा के भिन्न-भिन्न संस्करण पाये जाते हैं। इस प्रकार इस बहुरूपी विस्तार से इसकी आन्तरिक ऋद्धि तो समृद्धतर हुई ही है, यह तथ्य इस बात का भी संकेत देता है कि राम का वास्तविक इतिहास है।'

आज की स्थिति में रमाकथा पर आधारित ग्रंथ तीन सौ से लेकर तीन हजार तक की संख्या में विविध रूपों में मिलते हैं। श्रीराम का चरित भारतीय भाषाओं में जैसे- मराठी, बांग्ला, तमिल, तेलुगु तथा उड़िया, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, असमिया, उर्दू, आदि में मिलता है।

गोस्वामी तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' ने विश्व के कोने-कोने में श्रीराम के चरित को पहुँचाया है। भगवान भोलेनाथ आदिदेव महादेव से प्रारंभ होकर यह राम का चरित, महर्षि नारद, लोमश, याज्ञवल्क्य, कागभुशुण्डि, महाकवि कालिदास, भट्ट, प्रवरसेन, क्षेमेन्द्र, भवभूति, राजशेखर, कुमारदास, विश्वनाथ, सोमदेव, समर्थ रामदास, संत तुकड़ोजी महाराज, केशवदास, सूरदास, स्वामी करपात्री, मैथिलीशरण गुप्त, आदि ऋषियों-मुनियों, संतों, आचार्यों और कवियों ने अलग-अलग भाषाओं में राम को जन-जन तक पहुँचाया है।

विदेशों में भी तिब्बती रामायण, पूर्वी तुकिर्स्तान की खोतानी रामायण, इंडोनेशिया की कबिन रामायण, जावा का सेरतराम, सैरीराम, पातानी रामकथा, इण्डो चायना की रामकेर्ति (रामकीर्ति), खमैर रामायण, बर्मा (म्यांम्मार) की यूतोकीरामयान, थाईलैंड की राम कियेन आदि में रामचरित्र का व्यापक विस्तार है।

लोक के राम

राम को भगवान विष्णु का अवतार माना जाता है। इन्हें श्रीराम, श्रीरामचन्द्र, रघुनन्दन, राजाराम जैसे सहस्त्रों नामों से जाना जाता है। रामायण में वर्णन के अनुसार अयोध्या के सूर्यवंशी राजा, चक्रवर्ती सम्राट दशरथ ने पुत्रेष्टि यज्ञ (पुत्र प्राप्ति यज्ञ) कराया, जिसके फलस्वरूप चार पुत्रों का जन्म हुआ। श्रीराम का जन्म त्रेतायुग में 'चैत्रेनावमिकेतिथौ।। नक्षत्रेऽदिति दैवत्येस्वोच्चसंस्थेषुपञ्चसु। ग्रहेषु कर्कटेलग्नेवाहस्पताविन्दुनासह।।' अर्थात् चैत्र मास की नवमी तिथि में पुनर्वसु नक्षत्र में, पाँच ग्रहों के अपने उच्च स्थान में रहने पर तथा कर्क लग्न में चन्द्रमा के साथ बृहस्पति के स्थित होने पर राम का जन्म देवी कौशल्या के गर्भ से अयोध्या में हुआ था। श्रीराम जी चारों भाइयों में सबसे बड़े थे। हर वर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को श्रीराम जयंती या रामनवमी का पर्व मनाया जाता है।

श्रीराम ने मर्यादा-पालन और लोक कल्याण के लिए राज्य, मित्र, माता-पिता, कुटुम्ब का भी परित्याग किया। राम रघुकुल में जन्में थे, जिसकी परंपरा 'रघुकुल रीति सदा चलि आई। प्राण जाई पर बचन न जाई।' की थी। माता-पिता के वचन की रक्षा के लिए राम ने खुशी से चौदह वर्ष का वनवास स्वीकार किया। पत्नी सीता ने आदर्श पत्नी का उदाहरण देते हुए, पति के साथ वन जाना उचित समझा। लक्ष्मण ने भी आदर्श भ्राता के रूप में राम के साथ चौदह वर्ष वन में बिताए। भरत ने न्याय के लिए माता का आदेश ठुकराया और बड़े भाई राम के पास वन जाकर उनकी चरण पादुकाएँ ले आए, जिन्हें ही राज गद्दी पर रखकर राजकाज किया। वनवासी अवधि में ही पत्नी सीता को रावण हरण कर ले गया। जंगल में राम को सुग्रीव जैसा मित्र और भक्त मिला, जिसने राम के सारे कार्य पूरे कराये। राम की विशेषता रही है कि उनके सम्पर्क में आने वाले छोटे से छोटे व्यक्ति का सहयोग लिया। भारतीय वैज्ञानिकता का उपयोग करते हुए राम समुद्र में पुल बना कर लंका पहुँचे और रावण का बध कर सीता को वापस ले कर अयोध्या आये। राम के अयोध्या लौटने पर भरत ने आदर्श का पालन करते हुए राज्य राम को सौंप दिया।

सनातनी भारत में आर्यों के जीवन इतिहास, उनके विकास, संस्कृति, परम्परा को समझने के लिए ऋषियों ने साधना की, राजाओं ने रक्षा की प्रजा ने उसे आचारण में उतारा। उसी आचारण की सीख राम ने गुरु वशिष्ठ से लेकर विश्वामित्र तक से प्राप्त की और वनवास काल में अनेक ऋषियों-मुनियों के आश्रम में जाकर विनम्र भाव से उनसे ज्ञान प्राप्त करते हैं। राम क्षात्रधर्म पालक और ऋषि संस्कृति के संरक्षक और उन्नायक हैं। कहा जाता है कि राम के काल में तीन महत्त्वपूर्ण ऋषि उपस्थित थे जिन्होंने भारत की अस्मिता और उसके संकट को ठीक से पहचाना था। वे थे विश्वामित्र जिन्हें उत्तर-पूर्व का तो वशिष्ठ को पश्चिम का और अगस्त्य को दक्षिण के परिस्थियों की गहरी पहचान थी।

राम न्याय प्रिय थे। उन्होंने शासन का एक ऐसा आदर्श सुराज स्थपित किया जिसे लोग आज भी 'रामराज्य' की उपमा देते हैं। भारतीय परंपरा के कई त्योहार, जैसे- दशहरा, रामनवमी और दीपावली राम की वन-कथा से जुड़े हुए हैं तथा जीवन संघर्ष हेतु प्रेरणा देते हैं।

राम की व्याप्ति (क) में आई टिप्पणियों में एक टिप्पणी है कि कबीर के राम अलग थे! इस सम्बन्ध में मेरा कहना है कि राम की व्यापकता से संसार का कोई भक्त , संत, मुनि, ऋषि, साधक, आस्तिक, नास्तिक अछूता नहीं था तो कबीर राम की व्यापकता से कैसे दूर रह सकते हैं। मेरा मानना है कि पहले तो राम को धाराओं में बाँटा गया फिर उसमें कुछ भक्त कवियों को बिठाया गया जो आज भी चल रहा है! इसे ठीक से समझना होगा। विद्यार्थियों को समझाने के लिए रामचंद्र शुक्ल जी कुछ सूत्र रूप में विषय तैयार करते थे और उसी सूत्र की देन है कबीर निर्गुनिया संत हो गए। इसके पीछे के भी कारण थे कि कबीर को जुलाहा से ऊपर उठाकर संत नहीं बनाया गया क्योंकि कबीर यदि जुलाहा है तो वे सगुन रूप को कैसे मान सकते हैं और आलोचकों ने अपने बनाए सांचे में कबीर को ढाल दिया। दूसरा तर्क है कि कबीर कहते हैं -दशरथ सुत तिहुँ लोक बखाना,राम नाम का मरम है आना। अब इसके अर्थ में नहीं सन्दर्भ में जाईये। राम नाम का मर्म क्या है ? कभी इसको उजागर नहीं किया गया क्यों?

वस्तुत: कबीर अपने को जीव और राम को ब्रह्मस्वरूप बता रहे हैं, क्यों ? क्योंकि उनका मानना है कि अहंकार और भगवत प्रेम दोनों साथ-साथ नहीं रह सकते। जरा इसे भी याद करलें -'हरि मेरा पिव मैं हरि की बहुरिया।' और इतना ही नहीं गुरु नानक भी कहते हैं- 'एक राम दशरथ का बेटा-एक राम घट घट में बैठा' और रैदास कहते हैं-'मन्दिर मस्जिद एक है, इन मंह अंतर नाहिं, रैदास राम रहमान का, झगड़ऊ कोऊ नाहिं।' भारतीय संतों ने कभी भी राम को निर्गुण सगुन के घेरे में नहीं बंधा। रविदास से इसको समझा जा सकता है।

दूसरी टिप्पणी थी कि राम बाल्मीक के पहले भी थे तो यह क्यों लिखा गया कि बाल्मीक से राम कथा या राम का आदि काव्य बाल्मीकि है ? प्रश्न अनुचित नहीं है किन्तु यह विचार करिए क्या वेदव्यास के पहले वेद (ज्ञान) नहीं थे। अनेक ऋषियों की अनुभूतियों को संग्रहीत कर चार वेद और मनचाहे वेद की शाखाएँ बनी हैं। इसे तुलसी से भी समझना होगा कि -

'रचि महेस निज मानस राखा।
पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा॥
तातें रामचरितमानस बर।
धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर॥'

फिर यदि आप बाल्मीकि नारद संवाद पढ़ें तो शायद यह भ्रम दूर हो जाएगा ?

हरि अनंत हरि कथा अनंता।
कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता॥
रामचंद्र के चरित सुहाए।
कलप कोटि लगि जाहिं न गाए॥

तर्ज कुतर्क आलोचक नुमा कुछ विशिष्ट जनों का काम हैं। अपने राम तो चराचर जीवों के राम हैं, इतना ही नहीं तो पत्थर के अन्दर बसे राम को राम ने उजागर कर संसार के सामने हृदयहीन मस्तिष्क को प्रेरणा दी है।

'राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी।
मत हमार अस सुनहि सयानी॥

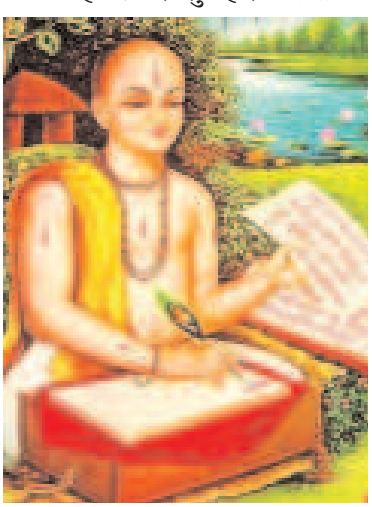

तदपि संत मुनि बेद पुराना।
जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना॥'

राम का रामत्व

राम : वाल्मीकि रामायण में नारद-वाल्मीकि संवाद से राम का संपूर्ण वैशिष्ट्य सामने आता है: महर्षि नारद श्रीराम के सम्पूर्ण व्यक्तित्व को इस प्रकार उजागर करते हैं- राम अत्यंत वीर्यवान, तेजस्वी, विद्वान, धैर्यशील, जितेन्द्रिय, बुद्धिमान, सुंदर, पराक्रमी, दुष्टों का दमन करने वाले, युद्ध एवं नीतिकुशल, धर्मात्मा, मर्यादा पुरुषोत्तम, प्रजावत्सल, शरणागत वत्सल, सर्व शास्त्रों के ज्ञाता एवं प्रतिभा सम्पन्न हैं। 'रामोविग्रहवान् धर्म:।' और यदि आज नारद जी होते तो लाखों वर्ष के राम (कुछ लोगों के अनुसार त्रेता के राम) के रामत्व को कैसे व्यक्त करते - ''हे राम! मैं तुम्हारा धन्यवाद करता हूँ, यह तुम्हारा रामत्व ही है कि शताब्दियों से आत्मग्लानि से भरे इस देश को, अपनी प्यारी सरयू नदी को तुमने एक गौरव प्रदान किया और विग्रह रूप में संसार के सामने फिर प्राण प्रतिष्ठित हुए।'' राम के रामत्व को स्मरण करते हुए नारद जी शायद यह भी कहते हैं कि- ''हे राम! तुम्हारे रामत्व के लिए इस कलियुग के प्राणी भी साधुवाद के पात्र हैं जिन्होंने तुम्हारे आचारण से प्रेरित होकर शताब्दियों से बंदी आस्था को मुक्त कराया। करोंड़ों धर्मार्थियों की आत्मग्लानि दूर हुई।''

बाल्मीक भी उस परिचर्चा में भागीदार होकर ऋषि अगस्त को भी प्रणाम करते, जिन्होंने राम तुम्हारे हाथों में इस देश की संस्कृति के संरक्षण के लिए सनातन की डोर सौंपी। राम का रामत्व ऐसे ही सनातन नहीं है, जरा विचार करें तो ध्यान में आता है कि इस रामत्व की नीव कहाँ से पड़ी। यह धरोहर कहाँ से होती हुई तुम्हारे पास आई। सूर्य से उत्पन्न मनु के पुत्र इक्ष्वाकु से लेकर कुकुत्स, पृथु, मान्धाता, हरिश्चंद्र, सगर, अंशुमान, दिलीप, भागीरथ, सुदास, रघु से होती हुई दशरथ से तुम्हें थाती के रूप में मिली। उसी रामत्व

का बोध यदि किसी को पहली बार हुआ था तो वह थीं तुम्हारी माता कौशल्या जो अचेतावस्था में आकाशवाणी से तुम्हारी वन्दना सुन तुम्हारे अस्तित्व का बोध कर रहीं थीं- ''नमामि नारायण ईश्वराय, जगदीश्वराय, नरोत्तमाय, गुरुत्तमाय, योगेश्वराय!! यही तो रामत्व था, है और आगे रहेगा।''

भारतीय ज्ञान परंपरा का सम्मान

सनातनी भारत में आर्यों के जीवन इतिहास, उनके विकास, संस्कृति, परम्परा को समझने के लिए ऋषियों ने साधना की, राजाओं ने रक्षा की प्रजा ने उसे आचारण में उतारा। उसी आचरण की सीख राम ने गुरु वशिष्ठ से लेकर विश्वामित्र तक से प्राप्त की और वनवास काल में अनेक ऋषियों-मुनियों के आश्रम में जाकर विनम्र भाव से उनसे ज्ञान प्राप्त करते हैं। राम क्षात्रधर्म पालक और ऋषि संस्कृति के संरक्षक और उन्नायक हैं। कहा जाता है कि राम के काल में तीन महत्त्वपूर्ण ऋषि उपस्थित थे जिन्होंने भारत की अस्मिता और उसके संकट को ठीक से पहचाना था। वे थे विश्वामित्र जिन्हें उत्तर-पूर्व का तो वशिष्ठ को पश्चिम का और अगस्त्य को दक्षिण की परिस्थियों की गहरी पहचान थी। राम गुरुकुल व्यवस्था में वशिष्ठ से, किशोरावस्था में गुरु विश्वामित्र से तथा अंत में ऋषि अगस्त्य से भेंट कर आर्यावर्त को समझा, ऋषियों के यज्ञभंग करने वाले राक्षसों का बध किया। अहल्या को जीवन दान दिया। भगवान शिव के धनुष की प्रत्यंचा चढ़ा अनेक अहंकारी राजाओं के गर्व का दलन कर श्रीराम ने अपनी विनम्रता से परशुराम का आशीर्वाद प्राप्त किया। चौदह वर्ष के वनवास काल में वन जाते समय राम ने निषाद को गले लगाया, केवट को मित्र बनाया, सबरी के बेर खाए और सामाजिक समरसता का उत्कृष्ट उदाहरण रखा। अखंड आर्यावर्त का अपने पूर्वजों और ऋषियों के संकल्प को पूरा किया। परम्परा के पालक राम तुम्हारे रामत्व को पुनः प्रणाम ।

रामत्व का आधार

वैभवशाली लंका को विजित करके भी राम को अयोध्या अपनी मातृभूमि में लौटना ही रुचिकर है। वे लक्ष्मण से कहते हैं-'अपिस्वर्णमयीलङ्का न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्चस्वर्गादपि गरीयसी॥' अर्थात् हे लक्ष्मण! यद्यपि यह लंका सोने की बनी है, वैभवपूर्ण है, फिर भी इसमें मेरी कोई रुचि नहीं है। क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान हैं। तो क्या यह अयोध्या के प्रति राम की आसक्ति है ? योग वाशिष्ठ में प्रसंग आता है जब राम कहते हैं ''महात्मन! जैसे रात में ऐसी अन्धकार-राशि नहीं होती, जो चन्द्रमा की चाँदनी से नष्ट न हो जाती हो, उसी प्रकार संसार में ऐसी दुश्चिन्ताएँ नहीं हैं, जो उत्तम अंत करनवाले महात्मा पुरुषों के संग से क्षीण न हो जाए। आयु वायु से टकराई हुई मेघों की घटा से झरते हुए जल बिन्दुओं के सामान क्षणभंगुर है। भोग मेघमाला के बीच में चमकती हुई बिजली के समान चंचल हैं तथा युवावस्था के मनोरंजन जल के वेग के सामान चपल हैं - ऐसा विचारकर मैंने इन सब को त्याग दिया और तुरंत ही चिरकाल तक बनी रहने वाली शांति को आज से अपने चित्त पर शासन करने के लिए सुदृढ़ अधिकार-मुद्रा समर्पित कर दी है।'' तुलसी के रामचरितमानस में जो रामराज्य का वर्णन है- दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहिं काहुहिं व्यापा॥ राम के इसी रामत्व को सामने रखता है।

वचन पालक राम

सीताहरण पश्चात वन-वन विचरते राम ने ऋषियों के संरक्षण के लिए भुजा उठाकर प्रतिज्ञा की, गीधराज जटायु को पिता समान आदर देकर तिलांजलि दी। सुग्रीव से मित्रता की, बाली को दिऐ वचन अनुसार अंगद को युवराज बनाय, विभीषण को राज दिया। भरत को दिए वचन को पूरा कर ठीक चौदह वर्ष की समाप्ति पर अयोध्या आकर स्वयं का राज्याभिषेक करा रामराज्य की व्यवस्था दी एवं लोक के लिए एक अनुकरणीय जीवन जीकर काल के आमंत्रण पर स्वैच्छिक-सचेतन दैहिक त्याग किया। राम तुम्हारा यह रामत्व भारत की इस धरती को यज्ञ भूमि बनाकर चौदह भुवनों का चिरकाल तक कल्याण करे। ❑

हम सृजन के वाहक बन समय की हर चाप और चोट को सरगम में पिरोते रहेंगे। श्रीराम के प्रति अपनी सामूहिक आस्था एवं विश्वास के बल पर हम भविष्य में भी हर प्रकार की विभाजनकारी-उपद्रवी-आतंकी शक्तियों के साथ साहस-सावधानी-सतर्कता से जूझेंगे, लड़ेंगे, अंततः विजय पाएँगे और जीतकर भी विनयशील रहेंगे। अयोध्यापति श्रीराम हमें समाज के अंतिम व्यक्ति की चिंता और हर हाल में लोक-मर्यादा के पालन की सीख देते हैं। अतः उल्लास व उत्सव की इस बेला में अंतिम व्यक्ति की चिंता व मर्यादा की लक्ष्मणरेखा हमारी दृष्टि से ओझल न होने पाए!

मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम भारत के पर्याय हैं

प्रणय कुमार
शिक्षाविद एवं
वरिष्ठ स्तंभकार

राम केवल एक नाम भर नहीं, बल्कि वे जन-जन के कंठहार हैं, मन-प्राण हैं, जीवन-आधार हैं। उनसे भारत अर्थ पाता है। वे भारत के पर्याय और प्रतिरूप हैं और भारत उनका। उनके नाम-स्मरण एवं महिमा-गायन में कोटि-कोटि जनों को जीवन की सार्थकता का बोध होता है। भारत के कोटि-कोटि जन उनके दृष्टिकोण से जीवन के विभिन्न संदर्भों-पहलुओं-परिप्रेक्ष्यों-स्थितियों-परिस्थितियों-घटनाओं-प्रतिघटनाओं का आकलन-विश्लेषण करते हैं। भारत से राम और राम से भारत को कभी विलग नहीं किया जा सकता। क्योंकि राम भारत की आत्मा हैं। भला आत्मा और शरीर को कभी विलग किया जा सकता है! एक के अस्तित्व में ही दूसरे का अस्तित्त्व है। राम निर्विकल्प हैं, उनका कोई विकल्प नहीं। राम के सुख में भारत के जन-जन का सुख आश्रय पाता है, उनके दुःख में भारत का कोटि-कोटि जन आँसुओं के सागर में डूबने लगता है। अश्रुओं की उस निर्मल-पवित्र धारा में न कोई ईर्ष्या शेष रहती है, न कोई अहंकार, न कोई लोभ, न कोई मोह, न कोई अपना, न पराया। सारा जग ही अपना जान पड़ता है। कितना अद्भुत है उनका जीवन-चरित, जिसे बार-बार सुनकर भी और सुनने की चाह बनी रहती है! इतना ही नहीं, उस चरित को पर्दे पर अभिनीत करने वाले, उस चरित को जीने वाले, लिखने वाले, उनकी कथा बाँचने वाले हमारी आत्यंतिक श्रद्धा के उच्चतम केंद्रबिंदु बन जाते हैं। उस महानायक से जुड़ते ही सर्वसाधारण के बीच से उठा-उभरा सामान्य व्यक्ति भी नायक-सा मान-सम्मान पाने लगता है। उनके सुख-दुःख, हार-जीत, मान-अपमान में हमें अपने सुख-दुःख, हार-जीत, मान-अपमान की अनुभूति होती है। उनकी प्रसन्नता में सारा जग हँसता प्रतीत होता है और उनके विषाद में सारा जग रोता। उस महामानव के प्रति यही हमारे चित्त की दशा-अवस्था है। यह अकारण नहीं कि करोड़ों लोग आज भी रामायण सीरियल के पुनर्प्रसारण और नवीन संस्करण को देख-देख भाव-विह्वल हो जाते हैं। करोड़ों लोग आज भी श्रीरामचरितमानस का पारायण कर स्वयं को कृतकृत्य अनुभव करते हैं।

शताब्दियों की प्रतीक्षा के पश्चात पौष शुक्ल द्वादशी को अभिजीत मुहूर्त में श्री रामलला के अपनी जन्मभूमि पर बने दिव्य और भव्य घर में विराजमान होने के पावन एवं महत्त्वपूर्ण अवसर पर यह प्रश्न उचित ही होगा कि आख़िर किस षड्यंत्र के अंतर्गत कभी तुलसी, कभी रामचरितमानस तो कभी स्वयं राम पर ही भ्रम और संशय निर्मित करने के बहुविध प्रयत्न किए जाते रहे? कौन नहीं जानता परंपरा से ही भारत की संस्कृति के केंद्रबिंदु राम, उनका चरित्र और उस चरित्र के सर्जक साहित्यकार रहे हैं। इसलिए विभाजनकारी शक्तियाँ वेश व रूप बदल-बदलकर इन पर हमलावर रही हैं। अधिक दिन नहीं बीते, जब तमाम पुरातात्विक अवशेषों और प्रमाणों के बावजूद श्रीराम के होने के प्रमाण माँगे जाते थे। आखिर किस षड्यंत्र के अंतर्गत उनकी स्मृति तक को उनके जन्मस्थान से मिटाने-हटाने के

असंख्य प्रयत्न किए जाते रहे? क्यों तमाम दलों एवं बुद्धिजीवियों को न केवल राम-मंदिर से, बल्कि राम-नाम के जयघोष से, चरित-चर्चा-कथा से, यहाँ तक कि सर्वोच्च न्यायालय द्वारा 9 नवंबर 2019 को उसके पक्ष में सुनाए गए ऐतिहासिक एवं बहुप्रतीक्षित फैसले तक से भी किसी-न-किसी रूप में आपत्ति रही ? एक लंबे अरसे तक क्यों उन्हें एक आक्रांता की स्मृति में खड़े गुलामी के प्रतीक से इतना मोह रहा? क्या वे नहीं जानते कि मज़हब बदलने से पुरखे नहीं बदलते, न संस्कृति ही बदलती है? क्या यह सत्य नहीं कि जिन दलों-राजनीतिज्ञों ने दशकों तक जातीय, सांप्रदायिक एवं पृथकतावादी राजनीति एवं खंडित अस्मिताओं को पाल-पोस-उभारकर राजनीतिक रोटियाँ सेंकीं, केवल उन्हें ही भारत की सामूहिक एवं सांस्कृतिक चेतना व अस्मिता के प्रतीकपुरुष श्रीराम, श्री राम के मंदिर और गोस्वामी तुलसीदास से आपत्ति एवं शिकायत रही? विभाजनकारी शक्तियाँ भली-भाँति यह जानती हैं कि श्रद्धा, आस्था एवं विश्वास के भावकेंद्र श्रीराम और रामचरितमानस के प्रति सर्वसाधारण के गहरे झुकाव, समर्पण व पवित्र भाव के रहते उनके द्वारा प्रयासपूर्वक रोपे गए विभाजन की विष-बेल के फलने-फूलने-पनपने की संभावना नगण्य या न्यूनतम रहेगी, इसलिए वे कोई-न-कोई बहाना बनाकर इन पर हमलावर रहती हैं। आशा है, कदाचित अब ऐसे अप्रिय प्रसंगों का पटाक्षेप हो!

गर्भगृह में विग्रह-रूप श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा के पावन अवसर पर प्रश्न तो यह भी उचित होगा कि पीढ़ी-दर-पीढ़ी जिस एक चरित्र को हम अपनी सामूहिक एवं गौरवशाली थाती के रूप में सहेजते-संभालते आए, आखिर किन षड्यंत्रों के अंतर्गत बड़ी ढिठाई एवं निर्लज्जता से उसे काल्पनिक बताया जाता रहा? उसके अस्तित्व को लेकर शंका के बीज वर्तमान पीढ़ी के हृदय में किसने और क्यों बोए? जो एक चरित्र करोड़ों-करोड़ों लोगों के जीवन का आधार रहा हो, जिसमें करोड़ों-करोड़ों लोगों की साँसें बसी हों, जिससे कोटि-कोटि जन प्रेरणा पाते हों, जिसने हर काल और हर युग के लोगों को संघर्ष व सहनशीलता, धैर्य व संयम, विवेक व अनुशासन की प्रेरणा दी हो, जिसके जीवन-संघर्षों के सामने कोटि-कोटि जनों को अपना संघर्ष बहुत छोटा प्रतीत होता हो, जिसके दु:खों के पहाड़ के समक्ष अपना दु:ख राई-रत्ती जान पड़ता हो, जिसके चरित्र की शीतल छाया में कोटि-कोटि जनों के ताप-शाप मिट जाते हों, जिसके व्यक्तित्व के दर्पण में व्यक्ति-व्यक्ति को जन्म से लेकर मृत्यु तक के अपने सभी श्रेष्ठ-सुंदर भाव-आचार-विचार-साहस-सौगंध-संस्कार-संकल्प का सहज प्रतिबिंब दिखाई देता हो, जिसका जीवन कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य, धर्म-अधर्म का सम्यक बोध कराता हो, जो मानव-मात्र को मर्यादा और लोक को ऊँचे आदर्शों के सूत्रों में बाँधता-पिरोता हो, जो हर युग और काल के मन-मानस को नए सिरे से मथता हो और विद्वान मनीषियों के हृदय में बारंबार नवीन एवं मौलिक रूप में आकार ग्रहण करता हो-ऐसे परम तेजस्वी, ओजस्वी, पराक्रमी, मानवीय श्रीराम को काल्पनिक बताना राष्ट्र की चिति, प्रकृति और संस्कृति का उपहास उड़ाना नहीं तो और क्या था? अच्छा तो यह होता कि स्वतंत्र भारत में भी श्रीराम-मंदिर के भव्य निर्माण में विलंब करने या जान-बूझकर अड़ंगा डालने वालों को कठघरे में खड़ा कर उनकी नीति और नीयत पर सवाल पूछे जाते!

पर समय और समाज आज इन प्रश्नों को छोड़कर बहुत आगे बढ़ चला है। लंबे संघर्ष के परिणामस्वरूप अंतत: आस्था एवं विश्वास की विजय होनी थी, सो हुई। श्रीराम के भव्य, दिव्य एवं विशाल मंदिर में रामलला के विराजने के पश्चात जनमानस में जो हर्ष, उल्लास एवं उत्साह दिखाई दे रहा है, वह असाधारण, अद्वितीय एवं अलौकिक है। उसकी आंशिक झलक देश-दुनिया ने श्रीराम जन्मभूमि निधि समर्पण अभियान के दौरान भी देखी थी। जितना लक्ष्य रखा गया था, इस देश के श्रद्धालु समाज ने उससे कई गुना अधिक राशि 'तेरा तुझको अर्पण' के भाव से श्रीराम मंदिर निर्माण ट्रस्ट को समर्पित कर दी थी। प्रभु श्रीराम ने सर्वसाधारण यानी वनवासी-गिरिवासी, केवट-निषाद-कोल-भील-किरात से लेकर वानर-भालु-रीछ जैसे वन्यप्राणियों को भी उनकी असीमित-अपराजेय शक्ति की अनुभूति कराई थी। उन्होंने लोकशक्ति का संचय, संग्रह और संस्कार कर आसुरी व अहंकारी शक्तियों पर विजय पाई थी। श्रीराम के राघव स्वरूप विग्रह की प्राण-प्रतिष्ठा अपने भीतर और लोक में व्याप्त उन्हीं आंतरिक एवं सामूहिक शक्तियों को स्थापित एवं प्रतिष्ठित करने का अनूठा प्रयास व पर्व है। यह पर्व विभाजनकारी विष-बेल को सींचने-पोसने-पालने वाली आसुरी शक्तियों पर अपने सामूहिक धैर्य, विवेक, संयम, साहस और अनुशासन से विजय पाने के संकल्प का पर्व है। उत्सवधर्मिता हम भारतीयों की मूल पहचान है। प्रतिकूल-से-प्रतिकूल परिस्थितियों में भी हम जीवन की अजेयता के, आस्था व विश्वास के गीत गाते रहे हैं, गाते रहेंगे। हमारी संस्कृति सृजनधर्मा है। हम सृजन के वाहक बन समय की हर चाप और चोट को सरगम में पिरोते रहेंगे। श्रीराम के प्रति अपनी सामूहिक आस्था एवं विश्वास के बल पर हम भविष्य में भी हर प्रकार की विभाजनकारी-उपद्रवी-आतंकी शक्तियों के साथ साहस-सावधानी-सतर्कता से जूझेंगे, लड़ेंगे, अंतत: विजय पाएँगे और जीतकर भी विनयशील रहेंगे। अयोध्यापति श्रीराम हमें समाज के अंतिम व्यक्ति की चिंता और हर हाल में लोक-मर्यादा के पालन की सीख देते हैं। अत: उल्लास व उत्सव की इस बेला में अंतिम व्यक्ति की चिंता व मर्यादा की लक्ष्मणरेखा हमारी दृष्टि से ओझल न होने पाए! ❑

भारतीय समाज में राम और रामराज्य की प्रासंगिकता

प्रो. रसाल सिंह
प्रोफेसर,
किरोड़ीमल कॉलेज,
दिल्ली विश्वविद्यालय

निरन्तर बदलते मानवीय मूल्यों ने समाज को आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक आदि अनेक स्तरों पर प्रभावित किया है। उपभोक्तावादी संस्कृति की चपेट में आकर समकालीन मनुष्य अपने संस्कार, रीति-रिवाजों और जीवन-दृष्टि आदि से विच्छिन्न होता जा रहा है। जिसका मुख्य कारण पश्चिमी जीवन शैली के प्रति मोह व भारतीय संस्कृति के प्रति अनासक्ति की भावना का बढ़ना है। कोई भी संस्कृति अकस्मात् जन्म नहीं लेती, बल्कि समाज की प्रत्येक पीढ़ी अपने संस्कारों, रीति-रिवाजों, खान-पान, जीवन-शैली का हस्तांतरण अगली पीढ़ी को करती है। यही प्रकिया 'परंपरा' का निर्माण करती है। कोई भी समाज संस्कृति के बिना जीवित नहीं रह सकता। परंपरा और नूतनता के समावेश से संस्कृति सदा प्रवाहमान बनी रहती है। किन्तु जब कोई समाज अपनी विचारधारा, सामाजिक मूल्यों, परंपराओं आदि से पृथक होने लगता है और किसी दूसरी संस्कृति को अपनाने लगता है, तब परोक्ष रूप से सामाजिक और सांस्कृतिक संकट बढ़ने लगते हैं।

वर्तमान युग सूचना क्रांति का युग है। इस क्रांति के परिणामस्वरूप विश्व-समाज में बहुत-सी अवधारणाएँ बदलने लगी हैं। एक अप्रत्याशित संक्रमण समाज और संस्कृति में देखने को मिल रहा है। बदलती अवधारणाओं व संक्रमण के कारण सामाजिक और सांस्कृतिक संकट का सामना विश्व के अनेक देश कर रहे हैं। भारतवर्ष भी इससे अछूता नहीं है। भारतीय समाज ने 'वसुधैव कुटुंबकम्' की अवधारणा को आत्मसात करते हुए सम्पूर्ण विश्व को सदैव एक परिवार माना है। इसलिए जहाँ एक ओर अनेक स्तरों पर भौतिक विकास हो रहा है, वहीं दूसरी ओर भारतीय समाज पश्चिम की संस्कृति को तीव्रता से अपना भी रहा है। हमारी विचारधारा, हमारी भाषा, खान-पान, रहन-सहन, पहनावा-पोशाक आदि सब कुछ पश्चिम का अनुगामी बनता जा रहा है। जबकि एक कटु सत्य यह है कि भारतीय और पश्चिमी समाज दो अलग

प्रकार के समाज हैं। ये दोनों कम से कम जीवन-शैली एवं विचार की दृष्टि से एक समान तो कत्तई प्रतीत नहीं होते। पश्चिमी संस्कृति के अंधानुगामी होने के कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ आज भारतीय जन-मानस को प्रभावित कर रही हैं। आज भारत का युवावर्ग अपनी जन्मभूमि, अपने राष्ट्र और राष्ट्रीय भावनाओं से विमुख होता जा रहा है। पश्चिमी संस्कृति की चकाचौंध उसे इस प्रकार आकर्षित करती जा रही है कि वह भारत की जगह पश्चिम के देशों में अपना जीवन-यापन करना चाहता है, अपनी बौद्धिक-क्षमता का उपयोग पश्चिम के देशों को समृद्ध करने में लगा रहा है। ऐसे में बरबस हमें श्रीराम का वह कथन याद आ जाता है जब वे लंका की चकाचौंध को महत्त्व न देकर अपनी मातृभूमि को स्वर्ग का दर्जा देते हुए कहते हैं -

अपि च स्वर्णमयी लंका,
लक्ष्मण मे न रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च
स्वर्गादपि गरीयसी।

भगवान राम छोटे भाई लक्ष्मण से कहते हैं कि पूरी लंका नगरी ऊपर से नीचे तक सोने से मढ़ी हुई है, फिर भी हे लक्ष्मण, यह मुझे जरा भी अच्छी नहीं लग रही। मेरे लिए तो माँ और जन्मभूमि स्वर्ग से भी अधिक मूल्यवान हैं। इस चौपाई से हमें यह सीख मिलती है कि जो व्यक्ति अपनी जन्मभूमि से जुड़ा रहता है, वहाँ के मूल्यों को आगे बढ़ाता है, उन्हें महत्त्व देता है, वही दूसरों से आगे रहता है।

वस्तुस्थिति यह है कि रामराज्य की संकल्पना वाले राष्ट्र में आज पश्चिमी संस्कृति पूरी तरह हावी होती जा रही है। भारत में आज मानवीय-मूल्य व्यक्ति केंद्रित होते जा रहे हैं और समाज के प्रति दायित्व-बोध की भावना व्यक्ति के भीतर खत्म होती जा रही है। इसका प्रमुख कारण भारतीय ज्ञान परंपरा के प्रति समाज की उदासीनता, अनभिज्ञता और पश्चिम की संस्कृति के प्रति आकर्षण है। तुलसीदास द्वारा जिस रामराज्य की संकल्पना भारतवर्ष के लिए की गई थी, आज समाज उस संकल्पना को ही नहीं, अपितु मर्यादा पुरुषोतम श्रीराम के चरित्र को भी भूलता जा रहा है। विशेषकर युवा वर्ग में हमारी पुरातन मान्यताओं, वेद-पुराण, रामायण-महाभारत, रामचरित-मानस आदि ग्रंथों के प्रति गौरव की भावना का निरंतर ह्रास होता जा रहा है। भारतीय मान्यताओं के प्रति युवा वर्ग की दृष्टि नकारात्मकता की ओर बढ़ रही है। इसके कारण अनेक प्रकार की समस्याएँ हमारे दैनंदिन जीवन का हिस्सा बन गई हैं। ऐसे में भारतीय मूल्यों को जाग्रत करने के लिए भारतीय ज्ञान-परंपरा के प्रति समाज की रुचि को पुनः जागृत करना अति आवश्यक है। तुलसीदास ने रामचरितमानस में कहा था -

दैहिक, दैविक, भौतिक तापा,
रामराज नाहिं काहुहि व्यापा।

अर्थात् राम के राज्य में देह से संबंधित रोग, दैवीय प्रकोप और भौतिक आपदा आदि किसी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं था। परन्तु आज हमारी वस्तुस्थिति क्या है, इस बारे में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। अभी कुछ समय पूर्व हम सभी ने कोरोना की त्रासदी का सामना किया है, दैहिक समस्याओं की इतनी बड़ी त्रासदी हमने शायद ही कभी देखी हो। उत्तराखंड में बाढ़ का प्रकोप, विश्व में आर्थिक संकट आदि रामराज्य का बोध तो कत्तई नहीं कराते। राम ने तो इन सभी पर विजय प्राप्त कर लिया था। उनके राज्य में दैहिक, दैविक और भौतिक तापों से सभी मुक्त थे। यही कारण है कि आज भारत सरकार द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव के माध्यम से भारतीय ज्ञान-परंपरा, पुरातन संस्कृति, रामराज्य की आवश्यकता जैसे विषयों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है। राम मंदिर के निर्माण की आवश्यकता भी इसी विचार दृष्टि से जुड़ी हुई है।

किन्तु रामराज्य की स्थापना के लिए सबसे प्रमुख कार्य राम के चरित्र को पुनः समाज के सम्मुख लाना है। उसे पुनर्प्रतिष्ठित करना है।वह समाज जो आज उपभोक्तावादी संस्कृति से ग्रसित हो गया है, उनके भीतर राम के चरित्र के माध्यम से ही पुनः दायित्वबोध, संवेदनशीलता, कर्तव्यबोध की भावना को जीवित व जागृत किया जा सकता है। राम का मर्यादा पुरुषोतम आदर्श चरित्र एकमात्र ऐसी शक्ति है जो समाज को पुनः भारतीय हृदय प्रदान करने की क्षमता

वर्तमान युग में पश्चिमी संस्कृति के प्रति मोह के कारण जब पारिवारिक विघटन चरम पर है, राजनीतिक सत्तापरस्तता एकमात्र विकल्प है, भौतिक्तावाद, स्वार्थपरता आदि समाज में निरंतर बढ़ रहा है, ऐसे में राम के चरित्र और रामराज्य की परिकल्पना को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी की रामराज्य की अवधारणा समाज को सही दिशा प्रदान कर सकती है। संभवतः समाज को पश्चिमी संस्कृति से होने वाली क्षतिग्रस्तता से बचाने का एकमात्र विकल्प आज प्रभु श्रीराम का चरित्र और रामराज्य की परिकल्पना ही है।

रखती है। राम के स्मरण मात्र से जीवन के आधे दुख दूर होने लगते हैं।

राजीव नयन धरें धनु सायक।
भगत बिपति भंजन सुखदायक।।

आज के समय में जब जगह-जगह अनाचार, अत्याचार बढ़ रहा है, ऐसे में राम की प्रासंगिकता भी बढ़ने लगती है। मानो प्रत्येक काल के लिए राम का चरित्र ग्रहणीय हो। मर्यादा पुरुषोतम रामकी जीवन-दृष्टि वर्तमान में युवाओं के भीतर उस चेतना का प्रसार करती है जिससे वे तटस्थ हो सकते हैं। सभी का आदर, माता-पिता और गुरु की आज्ञा का पालन, छोटे-बड़ों का सम्मान, नारी के प्रति सम्मान की भावना, त्यागबोध आदि वे सारे गुण राम के चरित्र में मौजूद हैं जो पश्चिमी संस्कृति के आकर्षण के कारण आज युवा पीढ़ी में स्थानांतरित नहीं हो पा रहे हैं।

राम के चरित्र की महत्ता इसलिए भी अधिक बढ़ गई है कि प्रत्येक स्तर पर व्यक्ति यांत्रिक हो गया है। उसके भीतर अहं की भावना का विकास चरम पर है और यह विचार समाज के सभी वर्गों को प्रभावित कर रहा है। मानवीय मूल्य जिस प्रकार से विघटित हो रहे हैं, उसके लिए श्रीराम और उनके त्याग को एक सुंदर उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। राम के द्वारा माता की आज्ञा के कारण अपने सम्पूर्ण जीवन को न्यौछावर कर देना, वनवास को अपनाना वर्तमान पीढ़ी के लिए त्याग का पाठ पढ़ाने का एक श्रेष्ठतम उदाहरण है। आज पारिवारिक संबंध छोटे-छोटे स्वार्थों के कारण निरंतर टूटते जा रहे हैं। संबंधों की मधुरता, भौतिकता और स्वार्थपरता के कारण नष्ट होती जा रही है। मनुष्य का मनुष्य के प्रति प्रेम भाव कम होता जा रहा है। ऐसे में श्रीराम का चरित्र मानव मात्र में प्रेम की भावना को आजीवन जीवित रखने का संदेश देता है। चाहे वह प्रेम माता-पिता के प्रति हो, पत्नी के प्रति या शबरी के प्रति। वर्तमान समय में पारिवारिक और सामाजिक संबंधों की मधुरता को बचाए रखने के लिए श्रीराम जैसे नायक को युवा पीढ़ी के सम्मुख लाना अत्यंत आवश्यक हो गया है।

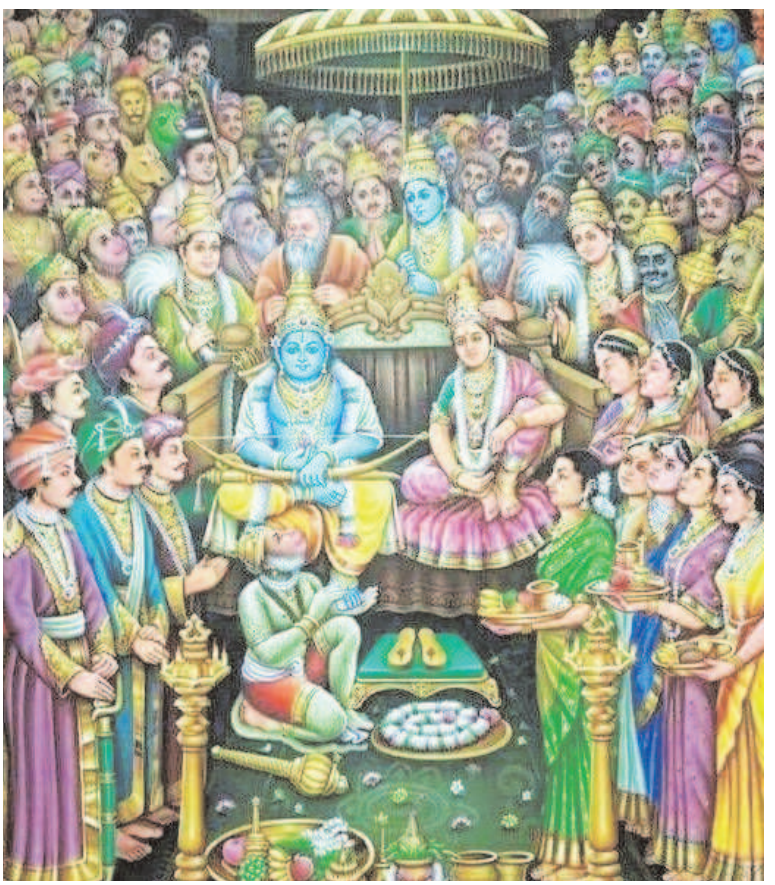

हम जानते हैं कि पश्चिमी संस्कृति व्यक्ति केंदित होने के कारण व्यक्ति को अधिक महत्त्व देती है। जबकि भारतीय मान्यताएँ परिवार और समाज को महत्त्वपूर्ण मानती हैं। भारत में सुख-दुख को बाँटने की प्राचीन परंपरा श्रीराम के समय से चली आ रही है। आज हमारा समाज अपनत्व की उस भावना से दूर हो गया है जहाँ पुत्र के लिए माता-पिता और गुरु की आज्ञा ही सर्वस्व मानी जाती थी। पश्चिमी संस्कृति के प्रभाववश आज भारत में भी भौतिकतावादी जीवन शैली समाज के भीतर अपनत्व, बंधुत्व, साहचर्य आदि की भावना को समाप्त करती जा रही है। रामराज्य की परिकल्पना इन भावनाओं को जीवन की आधारभूत आवश्यकताओं में से एक मानती है। आज राजनीति में स्वार्थपरता इतनी अधिक बढ़ती जा रही है कि प्रजा का हित संकट में है। प्रजा में राजा के प्रति सम्मान का भाव किसी भी सुशासित व सम्पन्न राज्य का उदाहरण होता है। राम ने राजा होते हुए भी प्रजा को सदैव प्रमुखता दी, जबकि आज का शासन सत्तापरस्त होकर केवल अपने हितों के विषय में

सोच रहा है। राजा राम और प्रजा के संबंधों की व्याख्या करते हुए रामकथा में लिखा है कि –

मुखिया मुख सों चाहिए,
खान पान को एक।
पालै पोसै सकल अंग,
तुलसी सहित विवेक॥

अर्थात् मुखिया को मुख या मुँह के समान होना चाहिए। तुलसीदासजी कहते हैं कि मुँह खाने पीने का काम अकेला करता है, लेकिन वह जो खाता पीता है, उससे शरीर के सारे अंगों का पालन पोषण करता है। इसलिए मुखिया को भी ऐसे ही विवेकवान होना चाहिए। विवेकवान होकर वह अपना काम अपनी तरह से करे, लेकिन उसका फल सभी में बाँटे। यहाँ मुखिया राजा और अंग प्रजा के द्योतक हैं। आज की राजनीति में राजा और प्रजा का संबंध शायद ही कहीं देखने को मिले। पश्चिमी राजनीति में ये दिखना तो दुर्लभ ही है। आज वैश्विक स्तर पर देखें तो अलग-अलग देशों के बीच विध्वंसक युद्ध हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण जनकल्याण नहीं, बल्कि एक-दूसरे को नीचा सिद्ध करना, अपनी शक्ति को अधिक दिखाना और साम्राज्यवाद का विस्तार करना बनता जा रहा है। चीन, पाकिस्तान जैसे देश बारंबार भारत से मित्रता दिखाने का मिथ्या प्रयास करते हैं और समय-समय पर पीठ में खंजर भोंकते हैं। अपने साम्राज्य का विस्तार करने की कोशिश करते हैं। रामकथा हमें ऐसे मित्रों से भी सावधान रहने की सीख देती है –

आगें कह मृदु बचन बनाई।
पाछें अनहित मन कुटिलाई॥
जाकर चित अहि गति सम भाई।
अस कुमित्र परिहरेहिं भलाई॥

किष्किंधा कांड में श्रीराम ने मित्रों के

लक्षण के विषय में बताया है। उन्होंने कहा कि अच्छा मित्र जीवन में बड़ी उपलब्धि है। ऊपर की चौपाई में लिखा है कि जो सामने तो कोमल वचन कहता है और पीठ-पीछे बुराई करता है, ऐसे लोगों से हमेशा दूरी बनाकर रखना चाहिए क्योंकि ये स्वार्थी होते हैं। भगवान राम अपने भाई लक्ष्मण से कहते हैं कि हे भाई, जिसका मन सांप की चाल के समान टेढ़ा है, ऐसे कुमित्र को तो त्यागने में ही आपकी भलाई है। सच्चा मित्र हमेशा स्पष्ट बात करता है। सच्चा मित्र आपको सही राय देता है। मित्रता में एक-दूसरे के प्रति खुला हृदय होना चाहिए।

इसलिए विश्व समाज आज लाखों-करोड़ों लोगों का विध्वंस देख रहा है। ऐसे में राम की युद्धनीति भी समाज के सम्मुख एक आदर्श प्रस्तुत करती है। रामराज्य यह बताता है कि युद्ध किसी समाज के लिए सुख का सूचक नहीं है।यही कारण है कि राम ने रावण से युद्ध करने की बजाय सर्वप्रथम युद्ध न करने का निवेदन किया था। कोई भी अच्छा शासक प्रजा का अहित नहीं चाहता। इसी सोच की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व समाज को है। राम जैसे भारतीय महानायक का चरित्र हर उस समस्या का समाधान है जिससे समकालीन विश्व जूझ रहा है। यही कारण है कि गाँधी जी ने भी बार-बार अपने स्वराज की संकल्पना को रामराज्य से जोड़ा था। रामराज्य की अवधारणा समाज को सकारात्मकता की ओर ले जाती है। इसमें स्त्री का सम्मान है, विपक्षी राजा के प्रति भी घृणा का भाव नहीं, अपितु सम्मान का भाव है। रामराज्य की संकल्पना में प्रजा दयनीय स्थिति में नहीं दिखाई पड़ती और अपने पक्ष को रखने के लिए स्वतंत्र होती है। अर्थात् रामराज्य उस विचार का सूचक है जहाँ सब सुखमय और प्रजाहितकारी है।

वर्तमान युग में पश्चिमी संस्कृति के प्रति मोह के कारण जब पारिवारिक विघटन चरम पर है, राजनीतिक सत्तापरस्तता एकमात्र विकल्प है, भौतिकतावाद, स्वार्थपरता आदि समाज में निरंतर बढ़ रहा है, ऐसे में राम के चरित्र और रामराज्य की परिकल्पना को अपनाना अत्यंत आवश्यक हो जाता है। गोस्वामी तुलसीदास जी की रामराज्य की अवधारणा समाज को सही दिशा प्रदान कर सकती है। संभवत: समाज को पश्चिमी संस्कृति से होने वाली क्षतिग्रस्तता से बचाने का एकमात्र विकल्प आज प्रभु श्रीराम का चरित्र और रामराज्य की परिकल्पना ही है। ❑

श्रीराम के आदर्श और समाज - जीवन

गोपाल कृष्ण दुबे
सेवानिवृत्त व्याख्याता
रा.उ.मा.वि. झालावाड़
(राजस्थान)

श्रीराम एक विचार हैं, जो जीवन और समाज को नए प्रकाश की दिशा देते हैं। श्री राम एक दृष्टि हैं, जो स्वस्थ राजनीति और राष्ट्रनीति को और अधिक महिमा मण्डित कर सकते हैं। श्री राम मंगल के भवन और मनुष्य और समाज के अमंगल का हरण करने वाले हैं। श्री राम उच्च मानवीय मूल्यों के आदर्श हैं, श्री राम विविध जाति वर्ग सम्प्रदाय को जोड़ने वाले सेतु हैं। राम के वचन और कर्म प्रत्येक युग के लिए दिशा बोधक हैं, जिनका अनुसरण कर राम राज्य की स्थापना किसी भी युग में हो सकती है। श्री राम का आचरण स्वयं में एक आदर्शों का ग्रन्थ है, जिसे पढ़-सुन-समझकर मानव समाज का जीवन कुपथ से सुपथ की ओर अग्रसर हो सकता है । जब हम एक आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श प्रजापालक राजा तथा एक आदर्श मित्र आदि की कल्पना करते हैं, तो सहसा हमारे मन में राम का चरित्र प्रकट हो जाता है। श्रीराम का उदात्त चरित्र ही उन्हें मानव से महामानव बनाता है। भक्तों की आस्था आज पल्लवित पुष्पित और फलित हो रही है। इसीलिए समस्त धर्म प्राण जनता आज पुलकित और गद्‌गद् है। अयोध्या में श्रीराम की प्राण-प्रतिष्ठा की तारीख भविष्य में सदियों तक इतिहास का एक स्वर्णिम अध्याय बन जाएगा। संभवतः आज इसी अतिविशिष्ट प्रसंग के कारण हजारों लेखकों की कलम, कवियों की वाणी और मीडिया इस प्रसंग पर अभिव्यक्तियाँ देते थक नहीं रहे हैं।

आदिकवि वाल्मीकि के अलौकिक महापुरुष राम से लेकर राम-काव्य की सुदीर्घ परम्परा से गुजरते हुए जनमानस में बसे अनादि ब्रह्म, भगवान विष्णु के पूर्ण अवतार, शील-शक्ति-सौन्दर्य समन्वित मर्यादा पुरुषोत्तम राम के लोक पावन, लोक रक्षक रूप को हम देख

सकते हैं। पूरे भारतीय वाङ्मय में राम का चरित्र एक प्रजापालक राजा का है। जिसमें सभी का विकास और सुख की मंगल कामना है। भारत की विभिन्न विरोधी विचार धाराओं का सामंजस्य एवं उच्च आदर्शों की स्थापना श्रीराम के चरित्र में होती है। तुलसी जैसे महाकवि यदि समन्वयवादी लोकनायक कवि बन सके, इसका कारण राम चरित्र के पावन आदर्शों में दिखाई देता है।

श्रीराम के जीवन चरित्र के बाल्यकाल से जीवन पर्यन्त आदर्शों का भव्य साम्राज्य मिलता है, जिसकी झलक उनकी बाल लीलाओं से मिलनी शुरू हो जाती है। भ्रातृत्व प्रेम का ऐसा आदर्श कि राम के प्रेम से परिपूरित भरत यहाँ तक कह देते हैं कि 'हारेहु खेल जिताबहिं मोही' श्रीराम बचपन में जानबूझकर भरत से हार जाते थे। यही घटना भ्रातृ-प्रेम के आदर्श को उस ऊँचाई पर पहुँचा देती है, जहाँ मानवता मुस्कुरा उठती है। राम रघुकुल चक्रवर्ती नरेश के बेटे थे। फिर भी आम समाज के बच्चों की तरह गुरु वशिष्ठ के गुरुकुल में पढ़ने गए। वो भी किसी विशिष्ट व्यवस्था के बिना। यह एक संदेश था आज कल के सामाजिक सामरस्य के लिए। ऊँच-नीच, जात-पात, धनवान-गरीब सारे विभेदों का लय बाल राम के इस आदर्श में हो जाता है। श्रीराम किशोरावस्था में पहुँचे तो विश्वामित्र के साथ राजकीय ठाठ बाट रथ आदि से नहीं गए, उन्होंने गुरु के ऋषि जीवन का अनुसरण किया समाज और धर्म को स्थिरता देने के लिए दुष्ट-दानवों का दमन किया। राम का आदर्श नारी उत्थान का भी रहा। छल से इन्द्र और छली गई निर्दोष अहल्या का उद्धार नारी अस्मिता की स्थापना का सबक है, क्योंकि अहल्या निर्दोष थी। भारतीय

मर्यादाओं के हाँसिये में निर्वैर और निर्विकार भाव से सर्वतोन्मुखी समाज के विकास का मार्ग, श्रीराम के उच्च आदर्शों के प्रकाश में सुदृढ़, सुविकसित, सभी के लिए सुखद, निर्भय, लोकमंगलकारी रामराज्य की ओर ले जाता है। श्रेष्ठता और संभावनाओं की कोई अंतिम ऊँचाई नहीं होती। श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा भारतीय जनमानस में एक नवजागरण का रूप ले। इस हर्षोल्लास के वातावरण में जन-जन का मन, पूरा समाज राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के साथ स्वस्थ सामाजिक विकास की ओर कदम बढ़ाता रहे, तो संकल्पित राम-राज्य अवश्यमेव भारत में पुनः संस्थापित हो सकेगा।

समाज में निर्दोष होते हुए भी नारी को दोषी ठहराने की पुरुष प्रधान समाज की कुपरम्परा को राम ने निर्मूल कर दिया। एक और अद्भुत आदर्श जिसमें उदात्त चरित्र की पराकाष्ठा देखी जा सकती है। पुष्पवाटिका प्रसंग में श्रीराम लक्ष्मण से कहते हैं -

मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी।
जेहि सपनेहु पर नारी न हेरी।।

इन पंक्तियों में भारतीय समाज में नारी-सम्मान और सुरक्षा का मार्ग प्रशस्त होता है। अगर समाज के सभी पुरुष ऐसे ही हो जाएँ तो अनाचार-अपहरण जैसी घटनाएँ कहीं हो ही नहीं सकतीं। राम-चरित्र का आदर्श है 'जननी सम जानहिं पर नारी। जहाँ मर्यादा और धर्म है, वहाँ विजय है। जहाँ त्याग है, वहाँ शान्ति है। जहाँ करुणा और प्रेम है, वहाँ अपनत्व का आगार। जहाँ नैतिकता का सेतु है, वहाँ जय-जयकार। जहाँ विषम परिस्थितियों में धैर्य है, वहाँ समाधान का तट। समाज में इन सद्गुणों के विकास एवं विस्तार से लौकिक मानव अलौकिक, साधारण पुरुष पुरुषोत्तम, साधारण मानव महामानव बन जाता है। साधारण मानव शक्तिपुंज बनकर समाज के लिए अजस्र ऊर्जा का स्रोत बन जाता है। दुर्बलता भी बल बन जाती है। चक्रवर्ती राम ने राजकीय सेना के साथ महापराक्रमी रावण पर विजयी नहीं पाई, बल्कि वनचारी एकाकी राम का संकल्प विजय हुआ। राम ने मानव के रूप में जिस आदर्श चरित्र की स्थापना की उसी ने उन्हें मर्यादा पुरुषोत्तम बना दिया। धर्म मानो कर्म का रूप धारण करके राम के रूप में साकार हो गया।

श्रीराम 'शांतं शाश्वतमप्रमेयमनघं' रूप में ही पूरे समाज के महानायक बन सके। सत्य-प्रेम-करुणा राम के समग्र जीवन का अमृत है, जो समाज छल छिद्र, कपट से परे हो जो सबका शुभचिंतक हो वहीं राम रमते हैं। राम सीताहरण से आहत थे पर स्वयं से पहले उन्होंने सुग्रीव के दुख का निवारण किया, यह उनकी मैत्री का आदर्श है। राम ने मैत्री में धर्म, जाति और स्टेटस नहीं देखा। कोल-भील, वनचारी तथाकथित वानर भालुओं से मैत्री की, वही राम के सैनिक बने। आमजन की शक्ति से ही बड़ी से बड़ी दंभियों, शक्तिशालियों की लंका ढहाई जा सकती है। जाति-पाँति के दंभ में सर्वतोमुखी समाज की सृष्टि नहीं हो सकती। परशुराम संवाद में राजाओं के दंभ और परशुराम के क्रोध नामक विकार का उपशमन हुआ है।

रामचरित्र की एक-एक घटना उदात्त

भावों का दर्पण है, जिनके चरित्र का चिंतन-मनन एवं आचरण का अनुकरण कर समाज सुपथ पर चलते हुए उच्चता के सोपानों पर अपने कदम बढ़ा सकता है, जिससे स्वस्थ-शालीन-सभ्य, नैतिक, धर्मनिष्ठ निरापद समाज का निर्माण हो सकता है। यही राम-राज्य की सामाजिक परिकल्पना है, जो नैतिकता के मार्ग से धर्म-पथ पर चलकर ही साकार हो सकती है। मानसिक-शारीरिक, आचरण एवं संकल्प-शक्ति की दुर्बलताएँ मनुष्य को पतनोन्मुख बनाती हैं। दंभ और अहंकार जहाँ रावणत्व की सृष्टि करता है, वहीं सत्य-प्रेम-करुणा राम-राज्य लाते हैं। भारतीय संस्कृति राम-चरित्र से महिमामण्डित है। राम के कर्म-सौन्दर्य ने ही मानवता के सत्पथ को आलोकित किया। राम नय और विनय की प्रतिमूर्ति हैं। नय में वे वज्रादपि कठोर हैं, विनय में वे कुसुमादपि कोमल। विनम्रता निरुपद्रव पथ प्रशस्त करती है। इसलिए श्रीराम सागर तक से मार्ग देने की विनय करते हैं।

श्रीराम कभी अनियंत्रित स्वेच्छाचारी मार्ग पर नहीं चले। नीति-पथ और अनीति-पथ में यही अंतर है। श्रीराम गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र, भारद्वाज, वाल्मीकि तथा अगस्त जैसे ऋषियों के द्वारा निर्देशित पथ पर चलते हैं। ये ऋषि त्रिकालदर्शी थे। सुन्दर समाज के निर्माण के लिए अतीत में अच्छा या बुरा क्यों घटित हुआ, वर्तमान में उस अतीत की बुनियाद पर क्या परिस्थिति बनी और इसका भविष्य क्या होगा, जो इसे समझता है, वही त्रिकालज्ञ है ।

ऐसे त्रिकालज्ञों के निर्देशन में ही राम ने भविष्य का पथ तैयार किया और अंतत: रामराज्य के रूप में सुन्दर समाज का निर्माण संभव हो सका। इसके विपरीत रावण खुद के दंभ से मनमाने पथ पर चलता है। नय विनय से मुक्त पथ राक्षसत्व की ओर ले जाता है। गुरु निर्देशित विवेक द्वारा सुविचारित पथ रामत्व की ओर ले जाता है। श्रीराम की युवाशक्ति मनीषियों ऋषियों मुनियों के द्वारा नियंत्रित रही, इसलिए राम 'राम' बन सके। आज की युवा शक्ति के लिए यह बात प्रेरक है। राम का पग जिस मग पर पड़ता है, वह श्रुति-सेतु पर बढ़ता है, गुरु निर्दिष्ट पथ पर बढ़ता है, चित्रकूट की उर्ध्वता की ओर बढ़ता है, गंगा से सागर की ओर बढ़ता अर्थात् संकुचित से विस्तार की ओर बढ़ता है, निम्नता से उर्ध्वता की ओर बढ़ता है। श्रीराम के चरित्र का एक अंश भी व्यक्ति अपने व्यक्तित्व में धारण कर ले तो जीवन धन्य हो जाए। ऐसी विनम्रता, दयालुता, ऐसा त्याग, मृदुल स्वभाव, सत्यनिष्ठा, पुरुषार्थ, शील गुण तथा दुष्टों के दमन के लिए ऐसा शौर्य आदि गुण एक साथ जिसमें होते हैं, ऐसा महापुरुष ही भगवान का अवतार कहलाता है।

श्रीराम में ओज एवं माधुर्य का, विनय एवं शौर्य का अद्भुत समन्वय मिलता है। निर्वैर होकर ही आपसी सद्भाव से मानवता का विकास संभव है। धर्म-दर्शन, ज्ञान-भक्ति, मत- पंथ, जातिगत समन्वय की भावभूमि, आदर्श समाज, 'वसुधैव कुटुम्बकम्' को साकार करती है, जो दिल्ली के जी-20 सम्मेलन में 'वन अर्थ, वन फैमेली, वन फ्यूचर' के रूप में दिखाई दी, वह भारतीय उदार संस्कृति का ही प्रतिफल था। मर्यादाओं की सीमा में निर्वैर और निर्विकार भाव से सर्वतोमुखी समाज के विकास का मार्ग, श्रीराम के उच्च आदर्शों के प्रकाश में सुदृढ़, सुविकसित, सभी के लिए सुखद, निर्भय, लोकमंगलकारी रामराज्य की ओर ले जाता है। श्रेष्ठता और संभावनाओं की कोई अंतिम ऊँचाई नहीं होती। श्री रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा भारतीय जनमानस में एक नवजागरण का रूप ले। इस हर्षोल्लास के वातावरण में जन-जन का मन, पूरा समाज राष्ट्रीय प्रतिबद्धता के साथ स्वस्थ सामाजिक विकास की ओर कदम बढ़ाता रहे, तो संकल्पित राम-राज्य अवश्यमेव भारत में पुन: संस्थापित हो सकेगा। ❑

राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण और श्रीराम

डॉ. गोरधन लाल शर्मा
राजस्थान प्रशासनिक सेवा
जयपुर (राजस्थान)

राम भारतीय उपमहाद्वीप की सामाजिक सांस्कृतिक जीवनशैली में गहराई के साथ रचे बसे हैं। अयोध्या में श्रीराम मंदिर का पुनर्निर्माण और रामलला की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा मात्र एक धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि यह भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण और अभ्युदय का अमृतकाल है। सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि से भरे हमारे देश में सांस्कृतिक धरोहर हमारी पहचान है। धर्म, भाषा, रूपरेखा, शैली और विविध संस्कृतियों और जीवन शैलियों के बाद भी भारत एक है। उसकी आत्मा एक है। हम सब एक-दूसरे से अपनी सांस्कृतिक पहचान से जुड़े हुए हैं। इसी जुड़ाव को बढ़ाने की दिशा में प्रभु श्रीराम के मंदिर का निर्माण एक महत्त्वपूर्ण कदम है। अयोध्या में भव्य श्रीराम मंदिर हमें अपनी साझी धार्मिक और सांस्कृतिक धरोहर को अक्षुण्ण रखने में मदद देगा।

सदियों की गुलामी के बाद भारत को 1947 में राजनीतिक स्वतंत्रता तो मिल गई, लेकिन सांस्कृतिक स्वतंत्रता पाने के लिए काफी लंबा इंतजार करना पड़ा। जन्मभूमि अयोध्या में राम का मंदिर राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की सुबह के समान है। जम्मू कश्मीर के राजनेता फारूक अब्दुल्ला जैसों का यह कहना, कि ''राम केवल हिंदुओं के नहीं हैं, अपितु राम सभी हिंदुस्तानियों के हैं'', सचमुच एक महान परिवर्तन की ओर संकेत करता है। भगवान राम विष्णु के अवतार होने के साथ-साथ एक महान धार्मिक और सांस्कृतिक चेतना के प्रतीक भी हैं, जिन्होंने न केवल पूरे भारत, बल्कि दुनिया के विभिन्न क्षेत्रों को भी प्रभावित किया है।

मर्यादा पुरुषोत्तम रूपी आदर्श जीवन के मूलाधार हैं श्रीराम

श्रीराम भारतीय संस्कृति के प्रेरणा पुरुष हैं। एक आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई, आदर्श पति, आदर्श मित्र हैं। हम भारतीय जिन सात्विक मानवीय गुणों को सदियों से पूजते आए हैं, वे सभी राम के व्यक्तित्व में निहित हैं। इसीलिए श्रीराम, मर्यादा पुरुषोत्तम हैं और हमारी आस्था के केंद्र में हैं। राम हमारे चेतन-अवचेतन और अचेतन मन में हैं और चिरकाल से इस देश के मानस में बसे हुए हैं। यहाँ राम सब के हैं और सब राम के हैं। चाहे पूरब हो या पश्चिम, उत्तर हो या दक्षिण, राम हमारे मानस में समाए हुए हैं। देश के किसी भी हिस्से में जाएँ और आपको लोगों के नाम में राम मिलेगा- दक्षिण में रामय्या, रामचन्द्रन या रामनाथन हो या उत्तर में रामशरण, राम सिंह या रामदास, राम सभी में हैं।

सुबह की राम-राम से लेकर जय रामजी की तथा जय सिया राम और जय श्रीराम के अभिवादन व अभिनन्दन हमारे व्यवहार में समाहित हैं। राम जन्म से मृत्यु तक हमारे जीवन का अहम हिस्सा है। अगर कोई निष्क्रिय या मृतप्राय हो जाता है तो हम कहते हैं कि इसका तो राम ही निकल गया। मृत्यु के बाद भी शव यात्रा के दौरान राम नाम सत्य है बोला जाता है। राम हमारे सामाजिक सांस्कृतिक जीवन के मूलाधार हैं।

'रामचरित्र' न केवल सार्वभौमिक और कालातीत है, बल्कि सर्व-समावेशी और सभी पंथों और जातियों से परे है। यह अकारण नहीं है कि सभी क्षेत्रों, भाषाओं, जातियों और पंथों के लोगों ने 'रामकथा' को अपने-अपने तरीके से सुनाया है। हिंदुओं द्वारा पूजनीय वाल्मीकि की संस्कृत रचित आदिरामायण या तुलसीदास की रामचरितमानस के अलावा बौद्ध धर्म में राम से संबंधित 'दशरथ जातक', 'अनामक जातक' और 'दशरथ कथानक' जैसी जातक कथाएँ भी लोकप्रिय हैं।

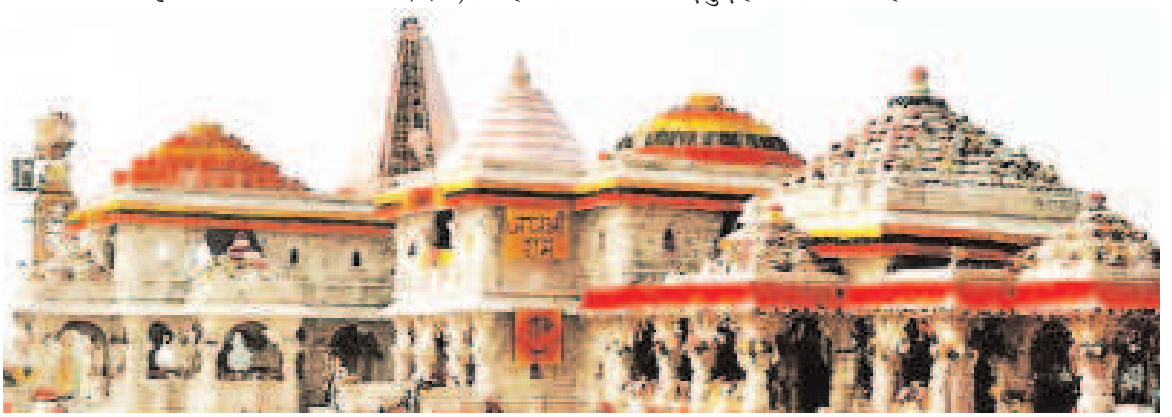

सदियों चले रामजन्मभूमि आंदोलन का सपना हुआ साकार

अयोध्या में नव निर्मित राममन्दिर न केवल करोड़ों लोगों की आस्था, विश्वास और भारत के पुनर्जागरण का प्रतीक है बल्कि यह भारत की सोयी अस्मिता और आत्मविश्वास के जागरण का प्रतीक भी है। श्रीराम जन्म भूमि का आंदोलन हिन्दू समाज का आत्मोत्थान है। यह इस बात का प्रमाण है कि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हिन्दू साढ़े पाँच सौ बरस की लंबी लड़ाई लड़ने और जीतने में सक्षम हैं। सच में अयोध्या में रामलला का भव्य और दिव्य मंदिर का निर्माण सभी भारतीय नागरिकों के लिए सदियों पुराने सपने के पूरे होने जैसा है। पाँच सौ वर्षों बाद रामनगरी का वैभव व कीर्ति लौट रही है।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के प्रमुख महंत श्री नृत्य गोपाल दास के शब्दों में, ''मंदिर निर्माण के साथ सिर्फ अयोध्या ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारत के भाग्य का नया सूर्य उदित होगा। नि:संदेह यह अवसर हर्ष और उल्लास का है। अयोध्या ही नहीं अपितु पूरा भारतीय उपमहाद्वीप इस तरह प्रसन्न है, जैसे कि अपने आराध्य का पुन: प्राकट्य हो रहा है।''

समाजशास्त्रियों का मत है कि सामूहिक चेतना से जो काम होते हैं, उनमें अलग ही आनंद की अनुभूति होती है। राममंदिर निर्माण से सम्पूर्ण देश प्रसन्न है, जनमानस आह्लादित है। जिन पुण्य आत्माओं ने राममंदिर आंदोलन में अपने प्राणों की आहुति दी है, उनकी आत्माएँ प्रसन्न हो रही होंगी, क्योंकि उनका बलिदान अब सार्थक होने जा रहा है। राम नाम की सामूहिक अभिव्यक्ति ने भारतीय जनमानस की सांस्कृतिक चेतना को एक सूत्र में पिरोकर रखने का काम किया। रामराज्य और सुराज की स्थापना के उद्देश्य से गांधीजी के नेतृत्व में स्वाधीनता आंदोलन की सफलता इसी सामूहिक चेतना का परिणाम था।

राम के असंख्य आख्यान

रामकथा जैन साहित्य में भी उपलब्ध है। इसमें विमलसूरि द्वारा लिखित 'पउमचरियु' और 'चरित्र पुराण' जैसे ग्रंथ शामिल हैं। इसके अलावा श्री राम का सिख धर्म में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है, जहाँ उन्हें 'अवतार राम' या 'राजा राम' कहा जाता है। राम शब्द गुरु ग्रंथ साहिब में 2,500 से अधिक बार आता है। गुरु गोबिंद सिंह द्वारा लिखित 'दशम ग्रंथ' में '24 अवतारों' में राम का उल्लेख भगवान विष्णु के 24 दिव्य अवतारों में से एक के रूप में किया गया है।

मध्यकाल में तुलसीदास के समकालीन मुस्लिम कवि रहीम राम की महानता की प्रशंसा करते हैं। उर्दू कवि इकबाल आगे कहते हैं कि ''हिंदुस्तान का प्याला सच्चाई से भरा है, और 'मगरिब' (पश्चिम) में रहने वाले सभी दार्शनिक भारत के श्री राम के विस्तार हैं।''

भारत में बेल्जियम के जेसुइट मिशनरी, राम कथा के सबसे प्रसिद्ध विद्वान और शोधकर्ता फादर कामिली बुल्के के अनुसार, ''जिन आदर्शों, मूल्यों और सामाजिक सद्भाव के लिए श्रीराम जीए और लड़े, वे भारतीय मन, जीवन में गहराई से बसे हुए हैं।'' कहने की आवश्यकता नहीं है कि श्री राम सभी संप्रदायों और पंथों से परे एक सांस्कृतिक प्रतीक हैं जो भारत के संविधान की प्रस्तावना में प्रयुक्त 'धर्मनिरपेक्ष' शब्द के सच्चे प्रतीक प्रतीत होते हैं।

वर्तमान राम मंदिर के निर्माण में न केवल जैन, बौद्ध और सिख समुदाय बल्कि मुस्लिम, ईसाई और पारसियों ने भी उदारतापूर्वक योगदान दिया है। यह भारत देश हर उस व्यक्ति, संगठन, नेता या दल का ऋणी है जिसने राम मंदिर का सपना साकार किया। यह सच है कि राम का मंदिर बन गया है, लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि ये राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भोर का संकेत भी है।

इसके अलावा यदि स्थानिक दृष्टि से विचार किया जाए तो पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक भारत के कण-कण में 'राम कथा' गूंजती है। उत्तर में, वाल्मीकि रामायण और रामचरितमानस है, जबकि दक्षिण में, कम्ब रामायण और रंगनाथ रामायणम है। पूर्व में, कृतिवास रामायण या पूर्वोत्तर की विभिन्न रामायणें हैं, जबकि महाराष्ट्र और पश्चिमी भाग में, भावार्थ रामायण हैं।

विभिन्न भारतीय भाषाओं में से, हिंदी में 11, मराठी में आठ, बंगाली में 25, तमिल में 12, तेलुगु में 12 और उड़िया में छह रामायणें पाई जाती हैं। इसके अलावा गुजराती, मलयालम, कन्नड़, असमिया, कश्मीरी, उर्दू, अरबी, फारसी, संथाली और पूर्वोत्तर की कई भाषाओं में भी रामकथा की रचना की गई है।

रामकथा - वैश्विक परिदृश्य

रामचरित्र पर आधारित साहित्य और कथानक भारत की सीमाओं को पार कर भारत के बाहर विश्व के कई देशों में उपलब्ध है। इंडोनेशिया में काकाबिनरामायण; जावा में सेराट्रम, सैरीराम, रामकेलिंग, पटानिरामकथा; थाईलैंड में रामकियेन; तिब्बत में तिब्बती रामायण; तुर्किस्तान में खोतानिरामायण; भारत-चीन में रामकेर्ति, खमाई रामारायण; और म्यांमार में उतोकी रामायण श्री राम की सार्वभौमिकता के कुछ उदाहरण हैं।

श्रीराम सामाजिक समरसता और सर्व-समावेश के भी सच्चे प्रतीक हैं।

गौरतलब है कि भारतीय समाज में सभी जाति-वर्ग, वनवासी और आदिवासी समुदाय श्रीरामचरित्र को बड़े आदर सम्मान के साथ मनाते हैं। मध्यकाल में, मुस्लिम और मुगल शासन के दौरान, जुलाहा जाति के महान संत कबीर ने अपनी कविता में 'हम घर आए राजा राम भरतार' कहकर अपनी भक्ति का उत्व मनाया। इसी प्रकार चर्मकार जाति के संत रैदास ने 'जब मन मिलो राम-सागर सो' (जब मेरा दिल और दिमाग राम में डूब गया) गाया। दर्जी जाति के संत कवि नामदेव ने 'दहदसी राम रह्या भरपुरी' लिखा। इसका आशय है कि राम सभी दिशाओं में विद्यमान है। जबकि नाई जाति के संत कवि सेन ने 'राम नाम भज लेय' (आओ राम नाम जपें) प्रसिद्ध कीर्तन की रचना की।

समरसता के प्रतीक हैं श्रीराम

श्री राम, सामाजिक समरसता के साक्षात प्रतीक, शाही वंश से होने के बावजूद, सभी समुदायों, जातियों और वर्गों के प्रति सहानुभूति रखते थे, चाहे वे अब मान्यता प्राप्त ओबीसी समुदायों - केवट और निषादराज - या कोल, किरात, भील के प्रतिनिधि हों या आदिवासी लोग। वह भील भक्त शबरी माता के आधे खाए हुए बेरों का प्रसाद ग्रहण करने से भी नहीं कतराते थे।

राम का जीवन और चरित्र आज उन निहित स्वार्थों के लिए एक जोरदार और स्पष्ट संदेश प्रस्तुत करता है जो हिंदू समाज को जाति और वर्ग या आदिवासी और गैर-आदिवासी के नाम पर विभाजित करने की कोशिश करते हैं। जहाँ श्री राम को दयालु और कृपालु के रूप में देखा जाता है, वहीं वे बहादुर और वीर भी हैं, उन्होंने राक्षसों के आतंक को समाप्त किया, 'राक्षसों' का विनाश किया, जो प्रचलित बुराई के खिलाफ अच्छाई के कई पहलुओं और उस पर काबू पाने की ताकत का प्रतीक हैं। विभिन्न प्रकार के आतंकवाद और उग्रवाद से त्रस्त देश और दुनिया के लिए श्री राम का यह चेहरा एक वैश्विक संदेश है।

रामराज्य की संकल्पना

मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम जैसे सर्वमान्य और महान चरित्र ने न केवल प्राचीन ऋषि-मुनियों, संतों, भक्तों और कवियों को बल्कि स्वामी विवेकानन्द, महर्षि अरविन्द, बाल गंगाधर तिलक, रवीन्द्रनाथ टैगोर, महात्मा गांधी, विनोबा भावे जैसे आधुनिक युग के महान विचारकों और राजनेताओं को भी प्रभावित किया। गांधीजी के राम राज्य की संकल्पना आधुनिक सुशासन का ही प्रतिरूप था। आधुनिक काल के समाजवादी विचारकों में राम मनोहर लोहिया भी शामिल हैं, जिन्होंने राम को अपने लेखन और विमर्श का विषय बनाया।

राम के आदर्शों के प्रति हमारी प्रतिबद्धता एक लोकहितकारी न्यायपूर्ण शासन व्यवस्था को जिसमें सभी के लिए शांति, न्याय और समानता हो, सुनिश्चित करती है। इसीलिए श्रीराम मंदिर का निर्माण न केवल भारतीय सांस्कृतिक एकता का एक अद्वितीय प्रतीक है, यह सुशासन और सामाजिक समरसता की ओर प्रवृत्त करने की दिशा में एक अहम प्रयास भी है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी कहते हैं कि जन्मभूमि अयोध्या में रामलला के भव्य मंदिर का निर्माण भारतीय संस्कृति के नवयुग के नये कालचक्र का शुभारंभ है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि कुछ राजनेताओं या राजनीतिक दलों और निहित स्वार्थों वाले तथाकथित धर्मनिरपेक्ष बुद्धिजीवियों ने लगातार हमारे सांस्कृतिक प्रतीक श्री राम के मंदिर के निर्माण में बाधाएँ पैदा कीं। उनके संबंध में नकली आख्यान गढ़े। पहले श्रीराम के अस्तित्व पर सवाल उठाए, फिर राम को काल्पनिक पात्र के रूप में स्थापित करने के असफल प्रयास भी किए गये। सनातन विरोधी लोगों को समझना होगा कि राम भारत के 'जन गण मन' की गहराई में मौजूद हैं।

गौरतलब है कि वर्तमान राम मंदिर के निर्माण में न केवल जैन, बौद्ध और सिख समुदाय बल्कि मुस्लिम, ईसाई और पारसियों ने भी उदारतापूर्वक योगदान दिया है। यह भारत देश हर उस व्यक्ति, संगठन, नेता या दल का ऋणी है जिसने राम मंदिर का सपना साकार किया। यह सच है कि राम का मंदिर बन गया है, लेकिन इससे भी बड़ी बात यह है कि ये राष्ट्रीय सांस्कृतिक पुनर्जागरण की भोर का संकेत भी है। ❑

श्री राम का कृतित्व ही हमारी आचार संहिता

डॉ. अंजनी कुमार झा
विभागाध्यक्ष, मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी (बिहार)

त्रेता युग के मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम का नाम ही आदर्श रूप से जीवन जीने की प्रवृति का नाम है। मन को वश में करना ही मनुष्य रूप है। अयोध्या जिसे साकेत और रामनगरी भी कहा जाता है, यह ऐतिहासिक और धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण नगर है। सरयू नदी के तट पर बसी इस नगरी का वाल्मीकि रामायण में अयोध्या नाम वर्णित है। अथर्ववेद में अयोध्या को भगवान का नगर बताया गया है। पुराणों में भी इसका उल्लेख है। जो बीज वाल्मीकि ने बोए, वे फल-फूल रहे हैं। उनका सम्पूर्ण दृष्टिकोण चरित्रयोग की जिज्ञासा है। चरित्रवान व्यक्ति को ढूँढ़ने के लिए ही आदि-काव्य 'रामायण' की रचना की गई। उनके लिए चरित्र और धर्म पर्यायवाची हैं। श्री राम सनातन धर्म वृक्ष के बीज हैं। वे नीतिमान और वाग्मी, कुशल वक्ता हैं। रामचरितमानस तुलसीदास के लिए लोकजागरण और लोक संस्कार का माध्यम है। राम शील, सौन्दर्य और शक्ति का समन्वित रूप है और उनका चरित्र आदर्श है। राम कथा की रचना उड़िया, बांग्ला, कश्मीरी, पंजाबी, गुजराती, मराठी, तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम आदि में है। अपने राज्याभिषेक के बाद भी उनका अभियान जारी रहा। उन्होंने लक्ष्मण, शत्रुघ्न और हनुमानजी को विभिन्न दिशाओं में भेजा और पूरे भारत को एक सूत्र में पिरोया। भारतीय संस्कृति समूची वसुधा को कुटुंब मानती है और संसार का एक - एक प्राणी उसके अंग हैं। सभी समाज, वर्ग और क्षेत्र जन परस्पर प्रीति करें, एक-दूसरे का पूरक बनें ,यह संदेश उनकी प्रत्येक यात्रा और अभियान में रहा। आसुरी प्रवृतियाँ वन में थीं, इसीलिए वही चुना और संत समाज और मनुष्य को शांति प्रदान की। देवों की पुरी और आठ चक्रों वाली स्वर्ण नगरी अयोध्या के चक्रवर्ती को सूर्य का अवतार भी माना जाता है। मुनि अगस्त्य उन्हें सूर्य की स्तुति के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र रावण के संहार के लिए देते हैं। बौद्ध धर्मावलम्बी उन्हें बुद्ध का विशेष अवतार मानते हैं। जैन मतावलंबियों के लिए भी इसका महात्म्य है ।'राम' शब्द ईश्वर का पर्यायवाची या दशरथनन्दन श्रीराम के नाम की सूचक, व्यक्तिवाचक संज्ञा ही नहीं है। इस देश के अमृत-पुत्रों, ऋषि-मुनियों, साधु-संतों, श्रमिकों-कृषकों, यहाँ तक कि भिक्षुओं के जीवन में इस शब्द कि अनिवार्य सत्ता और असीम

महत्ता सदैव देखी जा सकती है। उनका जन्म भी इस शब्द के उच्चारण के साथ होता है। मनुष्य को मृत्यु के बाद मोक्ष भी उन्हीं के नाम के स्मरण से होता है। जीवन का हर छोटा-बड़ा कार्य और परस्पर मिलने के लिए भी उन्हीं के नाम का सहारा लेना पड़ता है। उनका चरित्र तो सिंधु की भाँति है। अपार-अपरिमित, अनंत। उनके लिए केवट, शबरी, जटायु, सुग्रीव और हनुमान सभी बराबर हैं। सामाजिक समरसता का यह सटीक उदाहरण है। पूरा समाज एक शरीर की तरह है। इसे उन्होंने अपने कर्म से दिखलाया। इस माध्यम से एक संदेश दिया कि मनुष्य के अंदर एक ही जीव आत्मा है- ईश्वर अंश जीव अविनाशी। श्रीराम ने - विप्र धेनु सुर संत हित, लिन्ही मनुज अवतार को ही चरितार्थ किया है। राम और रावण का युद्ध विचारों का है। भौतिकतावाद की अंध दौड़ में आध्यात्म को त्याज्य करने को लेकर है। राम कथा धरती का कल्पवृक्ष है। वे धर्मज्ञ हैं, धर्म-प्राण, धर्म-रक्षक, धर्म-ज्ञाता, धर्म के व्याख्याता हैं। वे आदर्श राजा, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई और आदर्श पति हैं। राम उत्तर से दक्षिण को जोड़ते हैं। कबीर मुख से सदा राम ही बोलते रहे। उनसे जुड़े मूल्य ही भारतीय सभ्यता के मर्मभूत मूल्य हैं । वे एक ऐसे अवतारी पुरुष हैं, जिसमें सर्वोच्च दैवीय शक्ति अभिव्यक्त हुई है।

काम कोह मद मान न मोहा, लोभ न छोभ न राग न द्रोहा। जिन्ह के कपट दंभ नहिं माया। तिन्ह के हृदय बसहु रघुराया। प्रत्येक भारतीय को अपने हृदय को ऐसा बनाना चाहिए। तुलसीदास ने मर्यादा पुरुषोत्तम के व्यक्तित्व पर कहा-राम ही ब्रह्म थे-अचिंत्य, अदृष्ट, अखण्ड, संपूर्ण, निर्विशेष चिन्मात्र्म, सर्वव्यापी और निर्गुण। इसी बात को गोस्वामीजी ने पूरे मानस में रेखांकित किया है।

राज्य व्यवस्था का यह उच्चतम आदर्श है। वे संवैधानिक नैतिकता के शलाका पुरुष हैं। यह संविधानवाद के आचरण की उच्चतर अवस्था है। वे यश-कामना से दूर रहते हैं। स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति को वे उचित नहीं मानते हैं। वे नीति से प्रीति रखते हैं। राजा रूप में अपने पहले ही सम्बोधन में कहा था - परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई। अर्थात् दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को दुख पहुँचाने के समान कोई नीचता नहीं है।

रामावतार की विशिष्टता उनके मर्यादा पुरुषोत्तम होने की है, जो सत्यनिष्ठा के प्रतीक, निष्कलंक आचरण की कसौटी और एक आदर्श मनुष्य के साकार-रूप हैं। वे कलह के नहीं सद्भाव के, विभाजन नहीं संयोग के, शत्रुता नहीं, सौहाद्र के और कटुता नहीं, सद्भावना के पक्षधर थे। राम सभी के हैं। राम सभी में हैं। वे सगुण साकार भी हैं और निर्गुण निराकार । दोनों ही दृष्टियों, धारणाओं-अवधारणओं के राम गुणों से समृद्ध हैं, सद्गुणों के स्वामी हैं। वाल्मीकि तो समग्र रामाख्यान के प्रत्यक्षदर्शी हैं। उनके राम, उनके लिए समकालीन हैं, राजर्षि हैं और एक आदर्श राज्य के संस्थापक हैं। गुरुनानक देव उनमें आत्मरूप और अनंतता के मात्र दर्शन ही नहीं करते हैं, बल्कि उनमें चक्षु भर निहारते रहते हैं। सरजू जल मंजन कीया, दरसन राम निहार, आत्मरूप अनंत प्रभ, चले मगन हितु घार। कबीर प्रामाणिक राम पंथी हैं। वह कहते हैं- एक राम दशरथ का बेटा, एक राम घट-घट में बैठा, एक राम का संकल पसरा, एक राम त्रिभुवन से न्यारा। रहीम ने तो मात्र एक दोहे में राम के प्रति अपर अपनत्व का प्रगटीकरण कर दिया। गहि सरनागत राम की, भवसागर की नाव, रहिमन जगत उधार को, और न कछू उपाव। वे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक वंचितों के उद्धारक हैं। वह निषादराज के अभिन्न मित्र हैं, सखा हैं। वह भीलनी शबरी के जूठे बेर ग्रहण करने में संकोच नहीं करते। वह सुग्रीव को राज्य सौंप कर आगे बढ़ जाते हैं और विभीषण को लंकाधिपति बना कर अयोध्याजी लौट जाते हैं। वह चक्रवर्ती हैं, किन्तु विस्तारवाद के विरुद्ध हैं। उनका कृतित्व हमारी आचार संहिता है। समाजवादी विचारक डॉ. लोहिया के मत में, राम का जीवन किसी का कुछ भी हड़पे बिना फलने की कहानी है। वे लोकशाही के जीवंत प्रतीक हैं। वह लोगों से कहते हैं - जो अनीति कछु भाखहूँ भाई, मुझको बरिजहूँ भाय बिसराई। अर्थात् राज्यवासियों यदि मैं अनीति की बात कहूँ तो आप बिना किसी भय के मुझे तुरंत रोक दीजिये। वे अपनी प्रजा को अधिकार देते हैं कि वह अपने राजा को गलती करने से रोक दें। राज्य व्यवस्था का यह उच्चतम आदर्श है। वे संवैधानिक नैतिकता के शलाका पुरुष हैं। यह संविधानवाद के आचरण की उच्चतर अवस्था है। वे यश-कामना से दूर रहते हैं। स्वयं को सर्वश्रेष्ठ मानने की प्रवृत्ति को वे उचित नहीं मानते हैं। वे नीति से प्रीति रखते हैं। राजा रूप में अपने पहले ही सम्बोधन में कहा था - परहित सरिस धर्म नहिं भाई। पर पीड़ा सम नहिं अधमाई। अर्थात् दूसरों की भलाई के समान कोई धर्म नहीं है और दूसरों को दुख पहुँचाने के समान कोई नीचता नहीं है। ❑

श्रीरामचरितमानस में भक्तियोग की अवधारणा

डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता
प्रवक्ता, अग्रवाल महिला शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय, गंगापुर सिटी, सवाई माधोपुर (राजस्थान)

(1) श्रीरामचरितमानस में सगुण, निर्गुण एवं 'राम-नाम' भक्ति का निरूपण

श्रीरामचरितमानस में भक्ति के तीन स्वरूपों का वर्णन किया गया है। वे हैं - सगुण भक्ति, निर्गुण भक्ति और परा भक्ति। इन तीनों में सगुण भक्ति सबसे सरल और सुगम है क्योंकि इनमें जिस किसी देवी-देवता या इष्ट देव को सच्ची श्रद्धा से मानकर पूजते हैं, वे उन्हीं रूप में उनके सामने प्रकट हो जाते हैं। उदाहरणार्थ- मानस के प्रथम काण्ड का एक प्रकरण प्रस्तुत है- 'सीता भगवान् राम के स्वरूप को देख आकर्षित हो, मन में उन्हें पति मान, भगवती पार्वती के मंदिर में आकर; भगवान् राम को पति रूप में पाने के लिए सच्ची श्रद्धा से पूजा करती हैं और भगवती पार्वती प्रकट हो उन्हें आशीर्वाद देती हैं कि तुम्हारा मन जिसमें रम गया है, वही श्यामला पति निश्चित रूप से मिलेगा। नारद का कथन मिथ्या नहीं हो सकता है। प्रस्तुत प्रकरण में सगुण भक्ति का सजीव चित्रण हुआ है। यहाँ गोस्वामी तुलसीदास के सगुण भक्ति मत का स्फुट दार्शनिक विश्लेषण प्राप्त होता है। यह प्रसंग मानस में तुलसीदास जी ने इस प्रकार वर्णित किया है-

सकुचि सीयँ तब नयन उघारे।
सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे।।
नख सिख देखि राम कै सोभा।
सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा।।

एक सखी सीता का हाथ पकड़कर बोली- 'गिरिजा जी का ध्यान फिर कर लेना, इस समय राजकुमार को क्यों नहीं देख लेतीं? तब सीता ने सकुचाकर नेत्र खोले और रघुकुल के दोनों सिंहों को अपने सामने देखा। नख से शिखा तक भगवान् राम की शोभा देखकर और फिर पिता का प्रण याद करके उनका मन बहुत क्षुब्ध हो गया।

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति।
चली राखि उर स्यामल मूरति।।
प्रभु जब जात जानकी जानी।
सुख सनेह सोभा गुन खानी।।

शिव के धनुष को कठोर जानकर वे बिसूरती हुई हृदय में भगवान् राम की साँवली मूर्ति को रखकर चली। भगवान् राम ने जब सुख, स्नेह, शोभा और गुणों की खान जानकी को जाती हुई जाना।

परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही।
चारू चित्त भीतीं लिखि लीन्हीं।।
गई भवानी भवन बहोरी।
बंदि चरण बोली कर जोरी।।

परमप्रेम की कोमल स्याही बनाकर

उनके स्वरूप को अपने सुन्दर चित्तरूपी भित्ति पर चित्रित कर लिया। सीता जी पुनः भवानीजी के मंदिर में गयी और उनके चरणों की वन्दना करके हाथ जोड़कर बोली।

जय जय गिरिबरराज किसोरी।
जय महेस मुख चंद चकोरी।।
जय गजवदन षडानन माता।
जगत जननि दामिनि दुति गाता।।

हे श्रेष्ठ पर्वतों के राजा हिमाचल की पुत्री पार्वती! आपकी जय हो, जय हो; हे महादेवजी के मुख रूपी चन्द्रमा की चकोरी! आपकी जय हो; हे हाथी के मुख वाले गणेशजी और छः मुखवाले स्वामी कार्तिकजी की माता! हे जगज्जननी! हे बिजली की सी कान्तियुक्त शरीरवाली! आपकी जय हो!

नहिं तव आदि मध्य अवसाना।
अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना।।
भव भव बिभव पराभव कारिनि।
बिश्व बिमोहनि स्वबस बिहारिनि।।

आप का न आदि है, न मध्य है न अन्त है। आपके असीम प्रभाव को वेद भी नहीं जानते। आप संसार को उत्पन्न, पालन और नाश करने वाली हैं। विश्व को मोहित करने वाली और स्वतन्त्र रूप से विहार करनेवाली हैं।

पतिदेवता सुतीय महुँ
मातु प्रथम तव रेख।
महिमा अमित न सकहिं
कहि सहस सारदा सेष।।

हे माता! पति को इष्टदेव मानने वाली नारियों में श्रेष्ठ आपकी प्रथम गणना है। आपकी अपार महिमा को हजारों सरस्वती और शेषजी भी नहीं कह सकते।

सेवत तोहि सुलभ फलचारी।
बरदायनी पुरारि पिआरी।।
देबि पूजि पद कमल तुम्हारे।
सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे।।

हे वर देने वाली! हे त्रिपुर के शत्रु शिवजी की प्रिय पत्नी! आपकी सेवा करने से चारों फल सुलभ हो जाते हैं। हे देवि! आपके चरण कमलों की पूजा करके देवता, मनुष्य और मुनि सभी सुखी हो जाते हैं।

> भगवान् राम ने कहा मेरे भक्तों के जितने लक्षण हैं उन्हें सरस्वती और वेद भी नहीं कह सकते। मेरे भक्त सदा मेरी लीलाओं को गाते और सुनते हैं और बिना कारण दूसरों के हित में लगे रहनेवाले होते हैं। इस प्रकार देवर्षि नारद भगवान् के श्रीमुख से भक्तों (संतों) के लक्षण को सुन अत्यन्त प्रसन्न हो भगवान् के श्रीचरण कमलों में बार-बार सिर नवाकर ब्रह्मलोक को चले गये। इस प्रकार भक्त के लक्षणों को मानस में अन्य विभिन्न स्थलों पर भी देखा जा सकता है।

मोर मनोरथु जानहु नीकें।
बसहु सदा उर पुर सबहीं के।।
कीन्हेउँ प्रगट न कारण तेहीं।
अस कहि चरन गहे बैदेही।।

मेरे मनोरथ को आप भलीभाँति जानती हैं; क्योंकि आप सदा सबके हृदय रूपी नगरी में निवास करती हैं। इसी कारण मैंने उसको प्रकट नहीं किया। ऐसा कहकर जानकी ने उनके चरण पकड़ लिये।

बिनय प्रेम बस गई भवानी।
खसी माल मूरति मुसुकानी।।
सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ।
बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ।।

भगवती भवानी सीता के विनय और प्रेम के वश में हो गयी। उनकी माला खिसक पड़ी और मूर्ति मुसकरायी। सीता ने आदर पूर्वक उस प्रसाद को सिर पर धारण किया। भगवती भवानी का हृदय हर्ष से भर गया और बोली –

सुनु सिय सत्य असीस हमारी।
पूजिहि मन कामना तुम्हारी।।
नारद बचन सदा सुचि साचा।
सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा।।

सीता! हमारी सच्ची आषिष सुनो, तुम्हारी मनःकामना पूरी होगी। नारदजी का वचन सदा पवित्र और सत्य है। जिसमें तुम्हारा मन अनुरक्त हो गया है, वही वर तुमको मिलेगा।

मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो
बरु सहज सुंदर साँवरो।
करुणा निधान सुजान सीलु
सनेहु जानत रावरो।।
एहि भाँति गौरि असीस सुनि
सिय सहित हियँ हरषीं अली।
तुलसी भवानिहिं पूजि पुनि पुनि
मुदित मन मंदिर चली।।

जिसमें तुम्हारा मन अनुरक्त हो गया है, स्वभाव से ही सुन्दर वही साँवला वर तुमको मिलेगा। वह दया का निधान और सुजान है, तुम्हारे शील और स्नेह को जानता है। इस प्रकार भगवती भवानी का आशीर्वाद सुनकर जानकी समेत सब सखियाँ हृदय में हर्षित होकर चलीं। तुलसी कहते हैं- भगवती भवानी को बार-बार पूजकर सीता प्रसन्न मन से राजमहल को लौट चली। यहाँ भक्ति का यह सगुण रूप ही है। मानस के उपर्युक्त उदाहरण में सगुण भक्ति का सुन्दर और स्पष्ट वर्णन हुआ है। साथ ही मानस में अन्यत्र भी ईश्वर और ब्रह्म के दोनों स्वरूपों का वर्णन हुआ है। गोस्वामी तुलसीदास जी के अनुसार-

अगुण सगुण दुइ ब्रह्म सरूपा।
अकथ अगाध अनादि अनूपा।।
मोरें मत बड़ नामु दुहु तें।
किए जेहिं जुग निज बस बूतें।।

निर्गुण और सगुण - ब्रह्म के दो स्वरूप हैं। ये दोनों ही अकथनीय, अथाह, अनादि और अनुपम हैं। वास्तव में नाम इन दोनों से बड़ा है, जिसने अपने बल से दोनों को अपने वश कर रखा है।

प्रौढ़ि सुजन जनि जानहिं जन की।
कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की।
एकु दारुगत देखिअ एकू।
पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू।।
उभय अगम जुग सुगम नाम तें।
कहेउँ नामु बड़ ब्रह्म राम तें।।
व्यापकु एकु ब्रह्म अबिनासी।
सत चेतन घन आनँद रासी।।

प्रसंगवश संत तुलसी कहते हैं सज्जनगण इस बात को मुझ दास की ढिठाई या केवल काव्योक्ति न समझें। मैं अपने मन के विश्वास, प्रेम और रुचि की बात कहता हूँ। दोनों प्रकार के ब्रह्म का ज्ञान अग्नि के समान है। निर्गुण उस अप्रकट अग्नि के समान है जो काठ के अंदर है, परंतु दीखती नहीं; और सगुण उस प्रकट अग्नि के समान है जो प्रत्यक्ष दीखती है। दोनों ही जानने में बड़े कठिन हैं, परंतु नाम से दोनों सुगम हो जाते हैं। इसी से नाम को (निर्गुण) ब्रह्म से और (सगुण) राम से बड़ा कहा है, ब्रह्म व्यापक है, एक है, अविनाशी है; सत्ता, चैतन्य और आनन्दघन की राशि है। 'परा' भक्ति का वर्णन करते हुए तुलसीदास कहते हैं कि एक सगुण और निर्गुण दोनों से परे नाम हैं जिनसे अनन्त ब्रह्मा, विष्णु और महेश की सृष्टि होती है उसे ही भगवान् शंकर ने अपने हृदय में धारण कर लिया है।

ब्रह्म राम तें नामु बड़
बर दायक बर दानि।
रामचरित सत कोटि महँ
लिय महेस जियँ जानि।।

इस प्रकार नाम, निर्गुण ब्रह्म और सगुण राम दोनों से बड़ा है। यह वरदान देने वालों को भी वर देने वाला है। भगवान् शिव ने अपने हृदय में यह जानकर ही सौ करोड़ श्रीरामचरितमानस में से इस 'राम' नाम (सार रूप से चुनकर) ग्रहण किया है। श्रीरामचरितमानस में नाम भक्ति का अत्यन्त सुन्दर वर्णन हुआ है। भगवान् गणेश नाम के प्रभाव से ही सबसे पहले पूजे जाते हैं। 'राम' नाम का स्मरण कर भगवान् शंकर ने कालकूट जहर को पी लिया।

शषे हेतु हेरि हर ही को।
किय भूषन तिय भूषण ती को।।
नाम प्रभाउ जान सिव नीको।
कालकूट फलु दीन्ह अमी को।।

नाम के प्रति पार्वतीजी के हृदय की ऐसी प्रीति देखकर भगवान् शिव हर्षित हो गये और उन्होंने स्त्रियों में भूषण रूप पार्वती को अपना भूषण बना लिया। नाम के प्रभाव को भगवान् शिव भली-भाँति जानते हैं, जिसके कारण कालकूट जहर ने उनको अमृत का फल दिया। नाम के पीछे नामी चलते हैं। इस प्रकार नाम भक्ति की महिमा गायी गयी है।

(2) श्रीरामचरितमानस में भक्त के लक्षण

संत तुलसीदास ने रामचरितमानस में भक्त के लक्षण बताते हुए कहा है कि भक्त चार प्रकार के होते हैं। चारों ही भक्त बड़े पुण्यात्मा होते हैं।

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी।
बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।।
ब्रह्म सुखहि अनुभवहि अनूपा।
अकथ अनामय नाम न रूपा।।

ब्रह्मा के बनाये हुए इस प्रपंच से भलीभाँति छूटे हुए वैराग्यवान् मुक्त योगी पुरुष इस नाम को ही जीभ से जपते हुए (तत्त्वज्ञानरूपी दिन में) जागते हैं और नाम तथा रूप से रहित अनुपम, अनिर्वचनीय अनामय ब्रह्मसुख का अनुभव करते हैं।

जाना चहहिं गूढ गति जेऊ।
नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ।।
साधक नाम जपहिं लय लाएँ।
होहिं सिद्धि अनिमादिक पाएँ।।

जो परमात्मा के गूढ़ रहस्य को (यथार्थ महिमा) जानना चाहते हैं, वे (जिज्ञासु) भी नाम को जीभ से जपकर उसे जान लेते हैं। (लौकिक सिद्धियों के चाहने वाले अर्थार्थी) साधक लौ लगाकर नाम का जप करते हैं और अणिमादि सिद्धियों को पाकर सिद्ध हो जाते हैं।

जपहिं नामु जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।
राम भगत जग चारि प्रकारा।
सुकृती चारिउ अनघ उदारा।।

आर्त भक्त नाम जप करते हैं तो उनके बड़े-बड़े संकट मिट जाते हैं और वे सुखी हो जाते हैं। रामचरितमानस में चार प्रकार के भक्त बताये गये हैं- ज्ञानी, जिज्ञासु, अर्थार्थी एवं आर्त-

ज्ञानी- नामु जीहँ जपि जागहिं जोगी।
बिरति बिरंचि प्रपंच बियोगी।।
जिज्ञासु- जाना चहहिं गूढ़ गति जेऊ।
नामु जीहँ जपि जानहिं तेऊ।।
अर्थार्थी- साधक नाम जपहिं लय लाएँ।
होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ।।
आर्त-जपहिं नामु जन आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी।।

जगत् में चार प्रकार के राम भक्त हैं - (1) ज्ञानी- भगवान् को तत्त्व से जानकर स्वाभाविक ही प्रेम से भजने वाले भक्त हैं। (2) जिज्ञासु- भगवान् को जानने की इच्छा से भजने वाले भक्त हैं। (2) अर्थार्थी- धनादि की चाह से भगवान् को भजने वाले हैं। (4) आर्त- दु:खी व्यक्ति संकट की निवृत्ति के लिए भगवान् को भजते हैं। चारों ही भक्त पुण्यात्मा, पापरहित और उदार हैं।

चहू चतुर कहुँ नाम अधारा।
ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा।।
चहुँ जुग चहुँ श्रुति नाम प्रभाउ।
कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ।।

इन चारों ही चतुर श्रेष्ठ भक्तों को 'नाम' का ही आधार है; इनमें ज्ञानी भक्त प्रभु को विशेष रूप से प्रिय है। यों तो चारों युगों में और चारों ही वेदों में नाम का प्रभाव है, परंतु कलियुग में विशेषरूप से है। क्योंकि इस युग में अनेक कारण से लोग भगवान् के पूजन और ध्यान नहीं कर पाते हैं। यदि किसी समय भगवान् का नाम मात्र भी स्मरण हो जाये तो उनका कल्याण हो जाता है। वे (भक्त) स्वयं अनुभव करते हैं कि

मुझे राहत मिली है। तुलसीदास जी कहते हैं कि इसमें तो नाम को छोड़कर दूसरा कोई उपाय ही नहीं है। नाम चाहे किसी भी इष्टदेव का क्यों न हो। नाम के पीछे नामी स्वयं दौड़े चले आते हैं और अपने भक्त का कल्याण करते हैं। भगवान् अपने भक्त के सभी कामनाओं की पूर्ति कर देते हैं।

सकल कामना हीन जे
राम भगति रस लीन।
नाम सुप्रेम पियूष ह्रद
तिन्हहुँ किए मन मीन।।

गोस्वामी तुलसीदासजी के मानस में वर्णित है- जो भक्त सब प्रकार की कामनाओं से रहित हैं अर्थात् भोग और मोक्ष की इच्छाओं से भी रहित हो रामभक्ति के रस में लीन हैं; उन्होंने भी नाम के सुन्दर प्रेमरूपी अमृत के सरोवर में अपने मन को मछली बना रखा है। क्योंकि नाम का उच्चारण कहीं भी किसी भी परिस्थिति में किया जा सकता है, और भगवान् उनकी कामना की पूर्ति वहीं कर देते हैं। भक्त भगवान् की अनुभूति का अनुभव कर नामरूपी सुधा का निरन्तर आस्वादन करते रहते हैं, क्षणभर भी उससे अलग होना नहीं चाहते हैं। मानस में श्रीभरत जी के सम्बन्ध में वर्णन है-

भरत सरिस को राम सनेही।
जगु जप रामु जप जेही।।

अर्थात् भरत के समान भगवान श्रीराम का परम स्नेही दूसरा और कौन हो सकता है क्योंकि भरत प्रेम और भक्ति की प्रतिमूर्ति हैं, उन्हें अर्थ, धर्म, काम कुछ भी नहीं चाहिए केवल उन्हें प्रभु राम के श्रीचरणों में प्रेम चाहिए। राम की भक्ति ही उनके जीवन का सर्वस्व है। इसीलिए सम्पूर्ण जगत् प्रभु राम का स्मरण करता है और स्वयं मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम भरत का स्मरण करते हैं। प्रायः महापुरुषों ने धर्म की रक्षा के लिए सतत् प्रयास किया है और परमात्मा स्वयं धर्म रक्षा हेतु भारत की पावन भूमि पर अवतार भी लेते रहे हैं। इसी प्रकार जब अधर्माचरण बढ़ने लगा और देवताओं, ब्राह्मणों और गुरुओं का निरादर होने लगा। धर्म के प्रति लोगों की अरुचि, अनास्था देखकर पृथ्वी अत्यन्त भयभीत और व्याकुल हो गयी। उन्हें पर्वतों, नदियों और समुद्रों का भार उतना भारी नहीं लगता था, जितना पापी का पाप। रावण से भयभीत हुई वह कुछ बोल नहीं सकती थी। दुःख के निवारण हेतु वे जहाँ देवता, मुनि आदि छिपे थे, वहाँ गयी। सब मिलकर भगवान् ब्रह्मा के पास गये। वे बोले जिसकी दासी हैं उसी को भज, वे ही हमारा और तुम्हारा कल्याण करेंगे। भगवान् को कहाँ पाऊँ इसके सम्बन्ध में सब अपनी-अपनी भक्ति और पहुँच के अनुसार विचार रखें। भगवान् शंकर बोले - जिसके हृदय में जैसी भक्ति और प्रीति होती है, प्रभु वहाँ सदा उसी रीति से प्रकट होते हैं।

जाके हृदयँ भगति जसि प्रीती।
प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती।।
तेहिं समाज गिरिजा मैं रहेऊँ।
अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ।।

यह बात भगवान् शंकर भगवती पार्वती से कह रहे हैं कि मैं तो यह जानता हूँ कि भगवान् सब जगह समान रूप से व्यापक हैं, प्रेम से वे प्रकट हो जाते हैं। देश, काल, दिशा, विदिशा में बताओ, ऐसी जगह कहाँ है, जहाँ भगवान् नहीं हैं।

हरि व्यापक सर्वत्र समाना।
प्रेम तें प्रगट होहिं मैं जाना।।
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं।
कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नहीं।।

देवताओं, मुनियों, गन्धर्वों आदि के समाज में भगवान् शंकर का यह विचार सबसे अच्छा लगा। ब्रह्माजी सावधान होकर हाथ जोड़कर स्तुति करने लगे- हे देवताओं के स्वामी, लोगों को सुख देने वाले, शरण मे आने वालों की रक्षा करने वाले भगवान्! आप की जय हो! जय हो! हे गो-ब्राह्मणों का कल्याण करने वाले, असुरों का विनाश करने वाले, समुद्र के कन्या के प्रिय स्वामी! आपकी जय हो। हे देवता और पृथ्वी का पालन करने वाले! आपकी लीला अद्भुत है, उसका भेद कोई नहीं जानता है। जो सहज ही कृपालु और दीनदयालु हैं, वे हम पर कृपा करें।

जय जय सुरनायक जन
सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय
असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता।।
पालन सुर धरनी अद्भुत
करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला
दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई।।

हे अविनाशी, हृदयवासी, सर्वव्यापक, परमानन्दस्वरूप, अज्ञेय, इन्द्रियों से परे, पवित्र चरित्र, माया से रहित मोक्षदाता आप की जय हो। संसार के भय का नाश करने वाले, मुनियों के मन को आनन्द देने वाले और विपत्तियों के समूह का नाश करने वाले हम आप की शरण में आये हैं जिन्हें सरस्वती, वेद, शेषजी और सम्पूर्ण ऋषि कोई भी नहीं जानते हैं, जिन्हें दीन प्रिय हैं, ऐसा वेद पुकार कर कहते हैं। वे ही श्री भगवान् हम पर कृपा करें। हे संसार रूपी समुद्र के मथने के लिए मन्दराचल रूप, सब प्रकार से सुन्दर, गुणों के धाम और सुखों की राशि स्वामी! आपके चरणकमलों में मुनि, सिद्ध और सभी देवता भय से अत्यन्त व्याकुल होकर नमस्कार करते हैं।

सारद श्रुति सेषा रिषय
असेषा जा कहुँ कोउ नहिं जाना।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे
द्रवउ सो श्री भगवाना।।
भव बारिधि मंदर सब बिधि
सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम
भयातुर नमत नाथ पद कंजा।।

सबको भयभीत जानकर और उनके स्नेह युक्त वचन सुनकर गम्भीर आकाशवाणी हुई - मुनि, सिद्धों और

देवताओं के स्वामियो! डरो मत। तुम्हारे हित के लिए मैं मनुष्य का रूप धारण करूँगा और पवित्र सूर्यवंश में अंशों सहित मनुष्य का अवतार लूँगा। कश्यप और अदिति ने बड़ा भारी तप किया था। मैं पहले ही उन्हें वर दे चुका हूँ। वे ही राजा दशरथ और रानी कौशल्या के रूप में अयोध्यापुरी में प्रकट हुए हैं। उन्हीं के घर में चार भाइयों के रूप में अवतार लूँगा। नारद के सब वचन मैं सत्य करूँगा और पराशक्ति समेत अवतार लूँगा।

तिन्ह कें गृह अवतरिहउँ जाई।
रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई।।
नारद बचन सत्य सब करिहउँ।
परम सक्ति समेत अवतरिहउँ।।

इस प्रकार आर्त भक्त की पुकार सुन भगवान् प्रसन्न हो उन्हें आश्वासन देते हैं और आगे चलकर पूर्ण भी कर देते हैं। अर्थार्थी भक्त अर्थ, ऐश्वर्य के लिए भगवान् को भजते हैं और धन, ऐश्वर्य प्राप्त करते हैं। रावण, कुम्भकर्ण और विभीषण पुलस्त्य ऋषि के पवित्र और निर्मल कुल में उत्पन्न हुए लेकिन पूर्वजन्म में ब्राह्मणों के शापवश राक्षस हुए। उन्होंने कठिन तपस्या की और ब्रह्मा जी से वर प्राप्त किया। रावण ने ब्रह्माजी के चरण पकड़कर कहा – हे जगदीश्वर! हम वानर और मनुष्य इन दो जातियों को छोड़कर किसी के मारे न मरें।

करि बिनती पद गहि दससीसा।
बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा।।
हम काहू के मरहिं न मारें।
बानर मनुज जाति दुइ बारें।।

भगवान् शंकर और ब्रह्मा ने उन्हें आशीर्वाद दिया कि ऐसा ही हो, तुमने बड़ा तप किया है।

एवमस्तु तुम्ह बड़ तप कीन्हा।
मैं ब्रह्माँ मिलि तेहि बर दीन्हा।।

रावण ने शक्ति पाकर मद में अनुचित रीति से अपार धन और ऐश्वर्य को प्राप्त कर लिया। यह आसुरी भक्ति है। भक्त के लक्षण से स्पष्ट हो जाता है कि किस प्रकार भक्त अपनी कमी को भगवान् की प्रेरणा से निकालते हैं और स्वयं उन कमियों को दूर भी कर देते हैं। देवर्षि नारद भगवान् राम से कहते हैं कि आप किस गुण के कारण भक्त के वशीभूत रहते हैं, उन्हें कृपा कर कहिये। भगवान् राम ने कहा मैं संतों के जिन गुणों (लक्षणों) के वश में रहता हूँ वह सुनो।

संतन्ह के लच्छन रघुबीरा।
कहहु नाथ भव भंजन भीरा।।
सुनु मुनि संतन्ह के गुण कहऊँ।
जिन्ह ते मैं उन्ह कें बस रहऊँ।।

भक्त के लक्षण हैं कि वे छह विकारों– काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद और मत्सर को जीते हुए हैं। मैं उनके वश में रहता हूँ। भक्त के और भी लक्षण हैं, वे पापरहित, कामनारहित, निश्चल, सर्वव्यापी (अकिंचन), बाहर–भीतर से पवित्र, सुख के धाम, असीम, ज्ञानवान्, इच्छारहित, मिताहारी, सत्यनिष्ठ, कवि, विद्वान् और योगी हैं।

षट बिकार जित अवध अकामा।
अचल अकिंचन सुचि सुखधामा।।
अमित बोध अनीह मितभोगी।
सत्यकार कबि कोबिद जोगी।।

भक्त के और भी लक्षण होते हैं– वे हमेशा सावधान, दूसरों को मान देने वाले, अभिमानरहित, धैर्यवान्, धर्म के ज्ञान और आचरण में निपुण होते हैं।

सावधान मानद मनहीना।
धीर धर्म गति परम प्रबीना।।

इसके अतिरिक्त भी भक्त के लक्षणों का वर्णन हुआ है – भक्त गुणों के घर हैं। संसार के दु:खों से रहित और संदेहों से सर्वथा छूटे हुए होते हैं। मेरे चरण कमलों को छोड़कर उनको न देह ही प्रिय होता है, न घर ही।

गुनागार संसार दुख
रहित बिगत संदेह।
तजि मम चरन सरोज
प्रिय तिन्ह कहुँ देह न गेह।।

भगवान् राम कहते हैं– भक्त के लक्षण हैं– कानों से अपने गुण सुनने में सकुचाते हैं; दूसरों के गुण सुनने से विशेष हर्षित होते हैं। भक्त सम और शीतल हैं, न्याय का कभी त्याग नहीं करते। सरल स्वभाव होते हैं और सभी से प्रेम रखते हैं।

निज गुन श्रवन सुनत सकुचाहीं।
पर गुन सुनत अधिक हरषाहीं।।
सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती।
सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती।।

भक्त के लक्षण हैं कि वे हमेशा जप, तप, व्रत, दम, संयम और नियम में लीन (रत) रहते हैं और गुरु, गोविन्द तथा ब्राह्मणों के चरणों में प्रेम रखते हैं। उनमें श्रद्धा, क्षमा, मैत्री, दयालुता, प्रसन्नता (मुदिता) और मेरे चरणों में निष्कपट प्रेम होता है।

जप, तप, ब्रत दम संजम नेमा।
गुरु गोबिंद बिप्र पद प्रेमा।।
श्रद्धा छमा मयत्री दाया।
मुदिता मम पद प्रीति अमाया।।

भक्त का लक्षण है कि उनमें वैराग्य, विवेक, विज्ञान (परमात्मा के तत्त्व का ज्ञान) और वेद–पुराण का यथार्थ ज्ञान रहता है। वे दम्भ, अभिमान और मद कभी नहीं करते और भूलकर भी कुमार्ग पर पैर नहीं रखते हैं।

बिरति बिबेक बिनय बिग्याना।
बोध जथारत बेद पुराना।।
दंभ मान पद करहिं न काऊ।
भूलि न देहिं कुमारग पाऊ।।

भगवान् राम ने कहा मेरे भक्तों के जितने लक्षण हैं उन्हें सरस्वती और वेद भी नहीं कह सकते। मेरे भक्त सदा मेरी लीलाओं को गाते और सुनते हैं और बिना कारण दूसरों के हित में लगे रहनेवाले होते हैं। इस प्रकार देवर्षि नारद भगवान् के श्रीमुख से भक्तों (संतों) के लक्षण को सुन अत्यन्त प्रसन्न हो भगवान् के श्रीचरण कमलों में बार–बार सिर नवाकर ब्रह्मलोक को चले गये। इस प्रकार भक्त के लक्षणों को मानस में अन्य विभिन्न स्थलों पर भी देखा जा सकता है। ❑

संस्कृत साहित्य में श्रीराम

डॉ. धनंजय कुमार मिश्र

विभागाध्यक्ष,
संस्कृत विभाग, सिदो कान्हू मुर्मू विश्वविद्यालय,
दुमका (झारखण्ड)

साहित्य समाज का दर्पण होता है। संस्कृत साहित्य की कई कृतियों में नीति विषयक सूक्तियों की प्रधानता है। इन उपदेशात्मक सूक्तियों पर धर्म और दर्शन दोनों का प्रभाव है। वर्णाश्रम धर्म, सामाजिक आचार-विचार, व्यवस्था, नीति, सदाचार, राजा-प्रजा के अधिकार, कर्त्तव्य और शासन सम्बन्धी नियमों की व्यवस्था का वर्णन 'धर्मशास्त्र' में होता है। सामाजिक सद्भाव, मैत्री-भावना का निर्माण, धर्म, दर्शन, सदाचार और राजनीति जैसे गम्भीर विषयों का सरल काव्यमयी भाषा में प्रतिपादन 'नीतिशास्त्र' में किया जाता है। आर्ष परम्परा में रामायण अपने विशिष्ट गुणों के कारण धर्मशास्त्र भी है और नीतिशास्त्र भी। आदिकवि वाल्मीकि रचित रामायण संस्कृत साहित्य की एक अमूल्य निधि है। यह चरित्रों की एक विशाल मंजूषा है, जिसमें चरित्र रूपी अनेकानेक पत्र रखे हुए हैं। रामायण एक अथाह सागर है तो इसके पात्र बहुमूल्य रत्न। परन्तु जिस पात्र की भारतीय जनमानस पर सबसे अधिक छाप है, वह पात्र मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के सिवा कौन हो सकता!

राम भारतीय संस्कृति में परमात्मा के प्रतीक के रूप में प्रतिष्ठित हैं परन्तु संस्कृत वाङ्मय के एक पात्र के रूप में राम प्रतीक बन गए हैं मर्यादा के उच्च आदर्श के। भारतीय मूल्यों में जो सर्वोच्च आदर्श हैं वे सब राम के चरित्र रूपी माला में मोतियों के समान पिरोये हुए हैं। राम एक आदर्श राजा, आदर्श पति, आदर्श पुत्र, आदर्श भाई के रूप में मर्यादापालक हैं। उनकी कुछ चारित्रिक विशेषताएँ हैं जो युगों-युगों तक लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट करती हैं?

(1) मातृभक्ति - वाल्मीकि के राम की सर्वप्रथम चारित्रिक विशेषता के रूप में उनकी मातृभक्ति का नाम लिया जा सकता है। श्रीराम की मातृभक्ति बड़ी ही आदर्श थी। माता कौसल्या की बात ही क्या, माता कैकेयी के द्वारा कठोर से कठोर व्यवहार किए जाने पर भी उनके प्रति श्रीराम का व्यवहार हमेशा भक्ति और सम्मानपूर्ण ही रहा। माता कौसल्या के महल से लौटते समय कुपित हुए भाई लक्ष्मण से माता कैकेयी के प्रति कहते हैं -

यस्याः मदभिषेकार्थे
मानसं परितप्यते।
माता नः सा यथा न
स्यात् सविशङ्का तथा कुरु।।
तस्याः शङ्कामयं दुःखं
मनसि प्रतिसंजातं
मूहूर्तमपि नोत्सहे।
सौमित्रेऽहमुपेक्षितुम्।।

अर्थात् हे लक्ष्मण! मेरे राज्याभिषेक के कारण जिसके चित्त में संताप हो रहा है, उस हमारी माता कैकेयी को जिससे

मेरे ऊपर किसी प्रकार का संदेह न हो वही काम करो। उनके मन में संदेह के कारण उत्पन्न हुए दु:ख की मैं एक क्षण के लिए भी उपेक्षा नहीं कर सकता। कितनी उदात्त मातृभक्ति है श्रीराम की!

(2) पितृभक्ति – मातृभक्ति की भाँति ही श्रीराम की पितृभक्ति भी अद्भुत थी । वाल्मीकि रामायण के पाठक इस बात से परिचित हैं कि श्रीराम के मन में पितृभक्ति का कितना उत्साह, साहस और दृढ़निश्चय है। माता कैकेयी से वार्त्तालाप करते समय श्रीराम का यह कथन पितृभक्ति की पराकाष्ठा है ?

अहं हि वचनाद् राज्ञः
पतेयमपि पावके।
भक्षयेयं विषं तीक्ष्णं
पतेयमपि चार्णवे।।

अर्थात् मैं महाराज पिता दशरथ के कहने से आग में कूद सकता हूँ, तीव्र विष का पान कर सकता हूँ और समुद्र में भी गिर सकता हूँ। आगे श्रीराम कहते हैं –

न ह्यातो धर्मचरणं
किञ्चिदस्ति महत्तरम् ।
यथा पितरि शुश्रुषा
तस्य वा वचनक्रिया।।

क्योंकि पिता की सेवा और उनकी आज्ञा का पालन करने से बढ़कर संसार में कोई दूसरा धर्म नहीं है। इतना ही नहीं जब माता कौसल्या राम को समझाती हैं

आर्ष परम्परा में रामायण अपने विशिष्ट गुणों के कारण धर्मशास्त्र भी है और नीतिशास्त्र भी। आदिकवि वाल्मीकि रचित रामायण संस्कृत साहित्य की एक अमूल्य निधि है। यह चरित्रों की एक विशाल मंजूषा है, जिसमें चरित्र रूपी अनेकानेक पत्र रखे हुए हैं। रामायण एक अथाह सागर है तो इसके पात्र बहुमूल्य रत्न। परन्तु जिस पात्र की भारतीय जनमानस पर सबसे अधिक छाप है, वह पात्र मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के सिवा कौन हो सकता!

तब राम कहते हैं –

नास्ति शक्तिः पितुर्वाक्यं
समतिक्रमितुं मम।
प्रसादये त्वां शिरसा
गन्तुमिच्छाम्यहं वनम्।।

हे मातः! मैं चरणों में सिर रखकर आपसे प्रसन्न होने के लिए प्रार्थना करता हूँ। मुझमें पिता के वचन टालने की शक्ति नहीं है। अतः मैं वन को ही जाना चाहता हूँ। उपर्युक्त प्रसंग नाम मात्र ही है। सम्पूर्ण रामायण राम की पितृभक्ति से ओतप्रोत है।

(3) एकपत्नीव्रत – श्रीराम का एक पत्नीव्रत भी बड़ा ही आदर्श है। श्रीराम ने स्वप्न में भी कभी श्रीजानकी जी के सिवा किसी दूसरी स्त्री का वरण नहीं किया। सीता को वनवास देने के बाद यज्ञ में पत्नी की आवश्यकता होने पर उन्होंने सीता की ही स्वर्णमयी मूर्ति को अपने वामांग रखकर अनूठा उदाहरण प्रस्तुत किया। यदि वे चाहते तो कम से कम उस समय तो दूसरा विवाह कर ही सकते थे। राम एक पत्नीव्रत का आदर्श स्थापित करना चाहते हैं। यद्यपि उस समय बहुविवाह की प्रथा राजाओं में प्रचलित थी। राजा दशरथ की तीन पटरानियाँ और 350 रानियाँ थी। एक पत्नीव्रत के आदर्श की रक्षा करने के लिए ही उन्होंने दूसरा विवाह नहीं किया। उनके इसी गुण को स्पष्ट करने के लिए महाकवि भवभूति ने कहा है –

व्रजादपि कठोराणि
मृदुनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणां चेतांसि को
हि विज्ञातुमर्हति।।

निश्चय ही श्रीराम का एकपत्नीव्रत आदर्श युगों तक स्मरणीय है।

(4) भ्रातृप्रेम – श्रीराम का भ्रातृप्रेम अतुलनीय है। बचपन से ही श्रीराम भाईयों के साथ बड़ा प्रेम करते थे। सदा उनकी रक्षा करते और उन्हें प्रसन्न रखने की चेष्टा रखते थे। यद्यपि श्रीराम के मन में सभी भाईयों के साथ समान भाव से ही पूर्ण प्रेम था तथापि लक्ष्मण का लगाव राम के प्रति विशेष था। लक्ष्मण पल भर के लिए भी राम से अलग होना नहीं चाहते थे। जब युद्ध भूमि में लक्ष्मण मूर्छित हो जाते हैं तब राम भी लक्ष्मण के लिए अपने शरीर त्यागने की बात करते हैं –

यथा मां विपिनं
यान्तमनुयाति महाद्युतिः।

अहमप्यनुयास्यामि
तथैवैनं समक्षयम्।।

राम भरत के प्रति भी अपार प्रेम रखते हैं। भरत, शत्रुघ्न के बारे में सीता से कहते हैं –

भ्रातृपुत्रसमौ चापि दृष्ट्व्यौ च विशेषतः।
त्वया भरतशत्रुघ्नौ प्राणैः प्रियतरौ मम।।

भाईयों के बारे में उनका विचार है?

देशे-देशे कलत्राणि देशे-देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि
यत्र भ्राता सहोदराः।।

निश्चय ही राम आदर्श भाई के रूप में रामायण में चित्रित हैं।

(5) मर्यादापालक – धर्म की मर्यादा का पालन राम के चरित्र का एक अभिन्न अंग है। रावण वध के बाद उनके दाह कर्म को करने के लिए विभीषण के सिवा कोई नहीं बचता है। दुष्ट शत्रु का दाह संस्कार कौन करे? विभीषण भी इस काम से हिचक अनुभव करता है किन्तु राम उसे समझाते हुए कहते हैं –

मरणान्तानि वैराणि
निवृतं नः प्रयोजनम्।
क्रियतामस्य संस्कारो
ममाप्येष यथा तव।।

मृत्यु के साथ सारे वैर-विरोध समाप्त हो जाते हैं। इसका विधिपूर्वक संस्कार हमारा कर्त्तव्य है। राम विभीषण को रावण का अंतिम संस्कार करने का आग्रह करते हैं।

(6) सख्यप्रेम – श्रीराम अपने मित्रों के साथ अतुलनीय प्रेम का व्यवहार करते थे। मित्रों के छोटे से छोटे कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा किया करते थे। अयोध्या में अपने राज्याभिषेक के बाद वानरों को विदा करते समय राम कहते हैं –

सुहृदो मे भवन्तश्च
शरीरं भ्रातरस्तथा।
युष्माभिरूद्धृतश्चाहं
व्यसनात् काननौकसः।।
धन्यो राजा च सुग्रीवो
भवद्भिः सुहृदां वरैः।

वनवासी वानरो! आपलोग मेरे मित्र हैं, भाई हैं तथा शरीर हैं। आपलोगों ने मुझे संकट से उबारा है, अतः आप सरीखे श्रेष्ठ मित्रों के साथ राजा सुग्रीव धन्य हैं।

(7) शरणागतवत्सलता – श्रीराम की शरणागतवत्सलता का वर्णन वाल्मीकि रचित रामायण में स्थान-स्थान पर आया है, किन्तु जिस समय रावण से अपमानित होकर विभीषण राम की शरण में आया है, वह प्रसंग हृदय को भाव-विभोर कर देता है। विभीषण के आगमन ने वानर सेना में भूचाल ला दिया। सुग्रीव ने राम को सचेत कर दिया परन्तु राम शरणागतवत्सल थे। उन्होंने कहा –

मित्र भावेन सम्प्राप्तं
न त्येजयं कथञ्चन।
दोषो यद्यपि तस्य
स्यात् सतामेतद्गर्हितम्।।

मित्र भाव से आए हुए विभीषण का मैं कभी त्याग नहीं कर सकता। यदि उसमें कोई दोष भी हो तो उसे आश्रय देना सज्जनों के लिए निन्दित नहीं है। हे वानरगणाधीश! यदि कोई शत्रु भी हाथ जोड़कर दीनभाव से शरण में आकर अभय याचना करे तो दयाधर्म का पालन करने के लिए उसे नहीं मारना चाहिए। मैंने इसे अभय दे दिया है, अतः तुम इसे ले जाओ। चाहे यह विभीषण हो या स्वयं रावण ही क्यों न हो –

आनयैनं हरिश्रेष्ठ –
दत्तमस्याभयं मया ।
विभीषणो वा सुग्रीव
यदि वा रावणः स्वयम्।।

निश्चय ही बाल्मीकि के राम शरणागतवत्सल हैं।

(8) कृतज्ञता – श्रीरामकी चारित्रिक विशेषताओं में उनकी कृतज्ञता को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। राम उपकारी के प्रति कृतज्ञ हैं। जटायु और हनुमान का प्रसंग उनके इस चारित्रिक विशेषता को प्रकट करता है। राम के ही शब्दों में –

एकैकस्योपकारस्य प्राणान्
दास्यामि ते कपे।
शेषस्येहोपकाराणां भवामि
ऋणिनो वयम्।।

हे बन्धु! तुम्हारा एक-एक उपकार ऐसा है जिसका बदला शायद प्राण देकर ही चुकाया जा सके और प्राण एक ही बार दिए जा सकते हैं। अतः मैं सदा तुम्हारा ऋणी रहूँगा। ईश्वर न करे उनका बदला चुकाने की नौबत आए क्योंकि वह नौबत तब आती है जब दूसरे पर कोई संकट हो और उस समय बदला चुकाया जा सके। मैं स्वप्न में भी नहीं सोच सकता कि तुम पर कोई मुसीबत आए।

मदङ्गं जीर्णतां यातु
यत्त्वयोपकृतं कपे।
नरः प्रत्युपकाराणामा
पत्स्वायाति पात्रताम्।।

इससे पता चलता है कि श्रीराम के चरित्र में कृतज्ञता का भाव कितना उच्च कोटि का था।

(9) प्रजानुरंजकता – प्रजा को हर तरह से प्रसन्न रखने का गुण राम में कूट-कूट कर भरा हुआ था। प्रजा के छोटे-बड़े सभी स्त्री-पुरुषों का श्रीराम में बड़ा ही अद्‌भुत प्रेम था। राम अपनी प्रजा से पुत्रवत् प्रेम करते थे। श्रीराम जिस सीता के वियोग में पागल की तरह विलाप करते थे, उसी निर्दोष और पति-परायणा सीता को भी प्रजा की प्रसन्नता के लिए त्याग दिया। उत्तररामचरितम् नाटक के रचयिता भवभूति ने राम के इसी प्रजानुरंजकता गुण को दिखाते हुए कहा है –

स्नेहं दयां च सौख्यं
च यदि वा जानकीमपि।
आराधनाय लोकानां मुंचतो
नास्ति मे व्यथा।।

(10) अतुलनीय पराक्रमशाली – श्रीरामचन्द्र के बल, पराक्रम, वीरता और कौशल के विषय कहना ही क्या है? सम्पूर्ण वाल्मीकि रामायण में इसका वर्णन भरा पड़ा है। विश्वामित्र के यज्ञरक्षा का प्रसंग हो या जनकपुर में शिव धनुष भंजन का प्रश्न हो, उनकी वीरता और पराक्रम देखते ही बनता है। परशुराम को निस्तेज करना हो या खर-दूषण का नाश। राम का पराक्रम युद्धकाण्ड में तो अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच गया है। बाली जैसे पराक्रमी को एक ही बाण में मार डालना हो या समुद्र को भयभीत करना यह राम का ही पराक्रम है। रावण, कुम्भकर्ण आदि की तो बात ही क्या? वह पराक्रम तो सारा संसार जानता है।

(11) क्षमाशीलता – क्षमाशीलता का गुण श्रीराम के हृदयरूपी समुद्र में लहरों के समान हिलोरें लेता है। वे स्वभाव से ही क्षमाशील हैं। वे अपने प्रति किये गये किसी भी अपराध को अपराध नहीं मानते। जहाँ कहीं भी क्रोध और युद्ध की लीला का वर्णन है वह तो सिर्फ अपने आश्रितों की रक्षा के लिए तथा दुष्टों को मुक्ति प्रदान करने के लिए।

निष्कर्ष – श्रीराम का चरित्र तथा उनके असंख्य आदर्श गुणों का लेखनी द्वारा वर्णन करना समुद्र को छोटी नाव से पार करने के समान कठिन है। वाल्मीकि रामायण में जगह-जगह यह कहा गया है कि वे साक्षात् पूर्णब्रह्म परमात्मा भगवान विष्णु के अवतार थे। श्रीराम की स्तुति करते हुए परशुराम का यह कथन इस बात की पुष्टि करता है –

अक्षय्यं मधुहन्तारं
जानामि त्वां सुरेश्वरम्।
धनुषोऽस्य परामर्शात्
स्वस्ति तेऽस्तु परंतप।।

निश्चय ही श्रीराम सद्‌गुणों के समुद्र हैं। सत्य, सौहार्द, दया, क्षमा, मृदुता, धीरता, वीरता, गंभीरता, अस्त्र-शस्त्रों का ज्ञान, पराक्रम, निर्भयता, विनय, शान्ति, तितिक्षा, उपरति, संयम, निःस्पृहता, नीतिज्ञता, तेज, प्रेम, त्याग, मर्यादासंरक्षण, एकपत्नीव्रत, प्रजानुरंजकता, ब्राह्मण भक्ति, मातृ-पितृ-गुरु भक्ति, भ्रातृप्रेम, मैत्री, शरणागतवत्सलता, सरलता, व्यवहार-कुशलता, साधुरक्षण, प्रतिज्ञापालन, दुष्टदलन, निर्वेदता, लोकप्रियता, अपिशुनता, बहुज्ञता, धर्मज्ञता, धर्मपरायणता, पवित्रता आदि-आदि समस्त गुणों का मर्यादा पुरूषोत्तम श्रीराम के चरित्र में पूर्ण विकास हुआ है। निश्चय ही श्रीराम भारतवर्ष के ही नहीं अपितु सम्पूर्ण जगत् के आदर्श हैं। वस्तुतः श्रीराम के आदर्श समाज-जीवन की आधारशिला हैं। भारतीय संस्कृति का प्राण तत्त्व हैं। ❑

शैक्षिक मंथन मासिक सम्बन्धी विवरण
घोषणा पत्र फार्म-4 (नियम 8 के अनुसार)

1.	प्रकाशन स्थान	जयपुर
2.	प्रकाशन अवधि	मासिक
3.	मुद्रक का नाम	**महेन्द्र कपूर**
	(क्या भारत का नागरिक है)	हाँ
		भारती भवन, बी-15, न्यू कॉलोनी, जयपुर (राज.)302001
4.	प्रकाशक का नाम	**महेन्द्र कपूर**
	(क्या भारत का नागरिक है)	हाँ
		भारती भवन, बी-15, न्यू कॉलोनी, जयपुर (राज.)302001
5.	सम्पादक का नाम	**डॉ. शिवशरण कौशिक**
	(क्या भारत का नागरिक है)	हाँ
		'कौटीर्या' बी-34, सूर्य नगर तारों की कूट, जयपुर (राज.) 302019

6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार पत्र की समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हों। – **शैक्षिक मंथन संस्थान, जयपुर**

मैं महेन्द्र कपूर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

दिनांक 1.3.2024

ह0/-
प्रकाशक

राम मंदिर आंदोलन में महिलाओं का योगदान

कल्पना कुशवाहा
शोधार्थी
दिल्ली विश्वविद्यालय,
दिल्ली

भारत के अयोध्या में स्थित राम मंदिर एक प्रतिष्ठित धार्मिक संरचना है जो लाखों लोगों के हृदय में गहरा महत्त्व रखती है। यह मंदिर भगवान राम को समर्पित है, जो हिंदू धर्म में पूजनीय देवता और महाकाव्य रामायण के केंद्रीय पात्र हैं। राम मंदिर का निर्माण लंबे समय से चला आ रहा एक भावनात्मक संघर्ष रहा है।

सदियों से चल रहे अयोध्या विवाद ने 20वीं सदी के अंत में गति पकड़ी और राम जन्मभूमि आंदोलन में बदल गयी। भगवान राम की जन्मस्थली को पुनः प्राप्त करने का संघर्ष केंद्र में आ गया, जिसने लाखों लोगों को एक सामान्य उद्देश्य के लिए प्रेरित किया। राजनीतिक और सामाजिक-धार्मिक दोनों संदर्भों में निहित, आंदोलन सामूहिक आकांक्षाओं की भट्टी बन गया।

इस विवाद की परिणति 2019 में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले से हुई, जिसने विवादित स्थल पर राम मंदिर के निर्माण का मार्ग प्रशस्त किया। इस निर्णय का उद्देश्य सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देना और पीढ़ियों से चले आ रहे एक विवादास्पद मुद्दे को हल करना था।

राम मंदिर का भूमि पूजन समारोह अगस्त 2020 में हुआ, जिसने पूरे भारत के लोगों का व्यापक ध्यान और उत्साह आकर्षित किया। मंदिर की डिजाइन पारंपरिक भारतीय वास्तुकला से प्रेरित है और इसे सांस्कृतिक और आध्यात्मिक एकता का प्रतीक माना जाता है। राम मंदिर न केवल एक धार्मिक इमारत के रूप में खड़ा है, बल्कि भारत की सांस्कृतिक विरासत की समृद्ध टेपेस्ट्री और बहुलवाद के प्रति प्रतिबद्धता के प्रमाण के रूप में भी खड़ा है।

राजनीतिक विचारधाराओं और धार्मिक उत्साह की भूलभुलैया में महिलाएँ अपने उत्कट समर्पण से आंदोलन को प्रभावित करते हुए, कट्टर पथप्रदर्शक के रूप में उभरीं। केवल भागीदार होने से परे, महिलाएँ सक्रिय रूप से विरोध मार्च, प्रदर्शन और धरने में शामिल हुईं और मंदिर निर्माण के जोरदार आह्वान के लिए अपनी आवाज उठायीं। उनकी भागीदारी प्रतीकात्मक नहीं थी बल्कि आंदोलन को आगे बढ़ाने वाली एक स्पष्ट शक्ति थी।

आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लेने वाली महिलाओं का एक महत्त्वपूर्ण समूह गहन धार्मिक विश्वासों से प्रेरित था। उनके लिए राम जन्मभूमि मंदिर का निर्माण कोई राजनीतिक एजेंडा नहीं बल्कि आध्यात्मिक अनिवार्यता थी। उनकी भागीदारी सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने और प्रतिष्ठित स्थल की पवित्रता की रक्षा करने के प्रति कर्तव्य की गहरी भावना को दर्शाती है।

महिलाओं ने न केवल भाग लिया बल्कि अनुकरणीय संगठनात्मक कौशल के साथ आंदोलन की दिशा को आगे बढ़ाते हुए नेतृत्व की भूमिका भी निभाई। महिलाओं के नेतृत्व

वाले संगठनों और समितियों ने समुदायों को एकजुट करने, रैलियाँ आयोजित करने और सूचना प्रसारित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

राम मंदिर आंदोलन ने सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य किया। महिलाओं को घरेलू भूमिकाओं तक सीमित रखने वाले पारंपरिक मानदंडों को चुनौती दी। महिलाएँ सामाजिक बाधाओं को तोड़ते हुए सक्रिय रूप से चर्चा, बहस और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल हुईं। यह आंदोलन महिलाओं के लिए अपनी बौद्धिक शक्ति, नेतृत्व क्षमता और लचीलेपन को प्रदर्शित करने का एक मंच बन गया, जिससे महिलाओं की भूमिका के बारे में सामाजिक धारणाओं में एक आदर्श बदलाव को बढ़ावा मिला।

राम मंदिर आंदोलन में महिलाएँ शक्ति और दृढ़ संकल्प का प्रतीक बन गईं। विपरीत परिस्थितियों में उनकी अटूट प्रतिबद्धता ने दूसरों को भी इस मुहिम में सम्मिलित होने के लिए प्रेरित किया। समाज के विभिन्न वर्ग की महिलाएँ चाहे शहरी हों या ग्रामीण, अमीर हों या गरीब, मंदिर के निर्माण के लिए अपनी साझा आकांक्षा में एक समान आधार पाया, जिससे एकता और एकजुटता की भावना को बढ़ावा मिला।

पूर्व प्रधानमंत्री स्वर्गीय इंदिरा गांधी के खिलाफ 1980 में रायबरेली से लोकसभा का चुनाव लड़ने वाली राजमाता विजयाराजे सिंधिया ग्वालियर राजघराने का गौरव रहीं। भारतीय जनता पार्टी की संस्थापक सदस्य रहीं राजमाता विजयाराजे सिंधिया ही पार्टी की राष्ट्रीय कार्य परिषद में अयोध्या के राम मंदिर निर्माण का प्रस्ताव लेकर आईं थीं। वह हर कदम पर भाजपा की नीतियों के साथ ही रहीं। भाजपा नेता लालकृष्ण आडवाणी 1989 में जब रथयात्रा लेकर निकले तो राजमाता सिंधिया ने उसे पूरा सहयोग दिया। विचारधारा और सिद्धांतों के प्रति आजीवन अडिग रहने वाली राजमाता

विजयाराजे सिंधिया ने जनसंघ की सदस्यता ग्रहण की। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी और लाल कृष्ण आडवाणी से हर महत्त्वपूर्ण अवसरों पर चर्चा कर वह भारतीय जनसंघ की राजमाता से लोकमाता की ओर अग्रसर होने लगीं। उनकी राष्ट्रहित के प्रति जागरूकता ने ही उन्हें राजमाता से लोकमाता बनाया। भारतीय जनसंघ से भाजपा तक उनकी यात्रा में अनेक उतार-चढ़ाव आए, पर उन्होंने अपने सिद्धांत और विचारधारा के प्रति जो समर्पण रखा, उसे कभी नहीं छोड़ा। वह राम मंदिर आंदोलन में भी प्रणेता की भूमिका में रहीं।

जैसे-जैसे इतिहास के पन्ने राम जन्मभूमि मंदिर की सफल प्राप्ति का जश्न मनाने के लिए पलटे जाएंगे इन महिलाओं के योगदान को याद किया जाएगा। उनकी आवाज और कार्यों ने एक अमिट छाप छोड़ी है, जिसने राम मंदिर आंदोलन की कहानी को आकार दिया है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित किया है। महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका को पहचानने और बढ़ाने में, हम न केवल उनके योगदान का सम्मान करते हैं बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं की अधिक समावेशी और न्यायसंगत समझ का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं।

पूर्व केंद्रीय मंत्री उमा भारती राम मंदिर आंदोलन में प्रमुख महिला के रूप में उभरीं। उमा भारती केंद्रीय मंत्री बनीं या मध्य प्रदेश की मुख्यमंत्री, उसकी वजह केवल राममंदिर आंदोलन ही रहा। उमा भारती ने आंदोलन के लिए विशेष रूप से जमीनी स्तर पर समर्थन जुटाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने कई रैलियाँ और मार्च आयोजित किए। उनके उग्र भाषणों और करिश्मा ने लाखों भक्तों को प्रभावित किया और उन्हें आंदोलन के दायरे में खींच लिया।

उमा भारती ने आंदोलन में भाग लेने के लिए दूर-दूर से आए कार सेवकों (स्वयंसेवकों) को आश्रय और जीविका प्रदान करने की आवश्यकता को पहचाना। उन्होंने पूरे अयोध्या में सेवाश्रम (सेवा शिविर) स्थापित किए, स्वयंसेवकों को भोजन, आवास और चिकित्सा देखभाल की पेशकश की। ये सेवाश्रम गतिविधियों के आयोजन और कार सेवकों के बीच समुदाय की भावना को बढ़ावा देने के लिए महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गए।

सार्वजनिक विरोध प्रदर्शनों और धार्मिक समारोहों में सक्रिय रूप से भाग लेकर, उमा भारती ने पारंपरिक लैंगिक भूमिकाओं और सामाजिक अपेक्षाओं को चुनौती दी। उनके कार्यों ने अन्य महिलाओं को आगे आने और आंदोलन

में अपनी जगह का दावा करने के लिए प्रेरित किया, जिससे सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की अधिक भागीदारी का मार्ग प्रशस्त हुआ।

भगवान कृष्ण की नगरी मथुरा में अनाथ बालिकाओं के लिए वात्सल्य ग्राम जैसा प्रकल्प संचालित करने वाली साध्वी ऋतंभरा का नाम निशा था। राम मंदिर आंदोलन में उन्होंने ऐसी अलख जगायी कि दुनिया उनको साध्वी ऋतम्भरा के नाम से जान रही है। साध्वी ऋतम्भरा ही थीं, जिन्होंने कहा कि हाँ हम हिंदू हैं, हिंदुस्तान हमारा है। साध्वी ऋतम्भरा 1990 के दशक में राम मंदिर आंदोलन का हिस्सा बनीं। विश्व हिन्दू परिषद् की श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति आंदोलन का एक तेजस्वी चेहरा बनकर उभरीं। उन्होंने इस आंदोलन की सफलता के लिए सारे भारत में धर्म जागरण किया। साध्वी ऋतंभरा ने कार सेवकों के लिए प्रशिक्षण केंद्र स्थापित किए और उन्हें भौतिक और वैचारिक आधार प्रदान किया। इन केंद्रों ने स्वयंसेवकों में अनुशासन, उद्देश्य और आंदोलन के प्रति प्रतिबद्धता की भावना पैदा की। साध्वी ऋतंभरा के गहन आध्यात्मिक ज्ञान और भगवान राम में अटूट विश्वास ने बड़ी संख्या में भक्तों, विशेषकर महिलाओं को आकर्षित किया। उन्होंने धार्मिक समारोहों, सत्संगों और कीर्तनों का नेतृत्व किया, जिससे आंदोलन की आध्यात्मिक नींव को और मजबूत किया गया और प्रतिभागियों को प्रेरित किया गया। अंतरधार्मिक सद्भाव के महत्त्व को पहचानते हुए, ऋतंभरा ने अयोध्या में मुस्लिम नेताओं से संपर्क किया और अयोध्या विवाद का शांतिपूर्ण समाधान खोजने के उद्देश्य से बातचीत शुरू की। उनके प्रयास हालांकि अंततः असफल रहे, उन्होंने समावेशिता और आपसी समझ के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को प्रदर्शित किया।

राम मंदिर के निर्माण के लिए लंबे समय से चली आ रही कानूनी लड़ाई में विजया वासंती का कानूनी कौशल राम जन्मभूमि न्यास के लिए अमूल्य साबित हुआ। उन्होंने स्पष्टता और दृढ़ विश्वास के साथ मामले पर बहस करते हुए अदालत में न्यास का प्रतिनिधित्व किया। कानून के बारे में उनकी गहरी समझ और आंदोलन के उद्देश्य में उनके अटूट विश्वास ने सर्वोच्च न्यायालय में एक अनुकूल निर्णय हासिल करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

विजया वासंती की कानूनी विशेषज्ञता अदालती बहसों से भी आगे तक फैली हुई है। उन्होंने आंदोलन के नेतृत्व को रणनीतिक मार्गदर्शन प्रदान किया, उन्हें उनके कार्यों के कानूनी निहितार्थों पर सलाह दी और अयोध्या विवाद के आसपास के जटिल कानूनी परिदृश्य से निपटने के तरीके सुझाए।

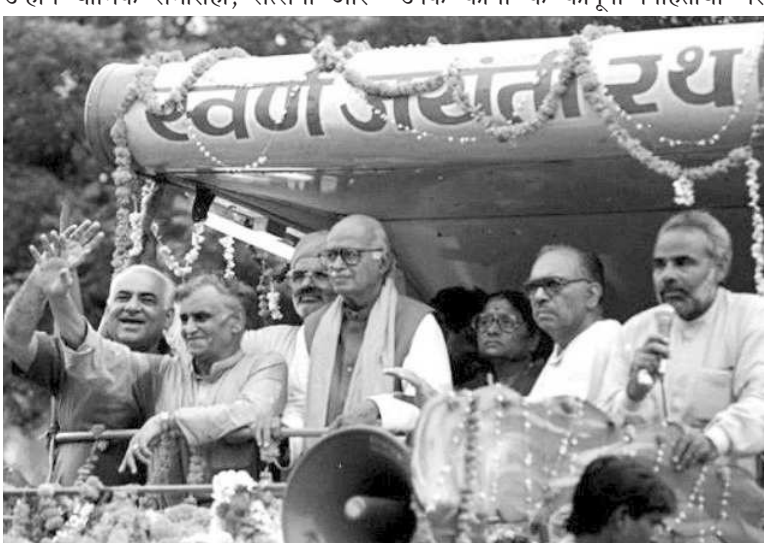

राम जन्मभूमि मामले में वसंती की सफलता ने कानूनी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी बढ़ाने का मार्ग प्रशस्त किया। उनके समर्पण और कौशल ने युवा महिलाओं की एक पीढ़ी को कानून में करियर बनाने और सामाजिक न्याय के लिए लड़ने के लिए प्रेरित किया।

अयोध्या की एक युवा महिला मान्यता तिवारी ने कार सेवा गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेकर पारंपरिक लिंग भूमिकाओं को चुनौती दी। विरोध और धमकियों का सामना करने के बावजूद, वह मचान पर चढ़ गईं, ईंटें ढोईं और पुरुष स्वयंसेवकों के साथ काम करके आंदोलन के प्रति अपनी अटूट प्रतिबद्धता प्रदर्शित की।

आंदोलन में मान्यता तिवारी की भागीदारी ने समावेशिता का एक शक्तिशाली संदेश भेजा, इस तथ्य पर प्रकाश डाला कि राम मंदिर आंदोलन केवल धर्म के बारे में नहीं बल्कि सामाजिक न्याय और समानता के बारे में भी था। उनके साहस और लचीलेपन ने अन्य महिलाओं को उनकी पृष्ठभूमि या सामाजिक स्थिति की परवाह किए बिना आगे आने और आंदोलन में योगदान देने के लिए प्रेरित किया।

जैसे-जैसे इतिहास के पन्ने राम जन्मभूमि मंदिर की सफल प्राप्ति का जश्न मनाने के लिए पलटे जाएंगे इन महिलाओं के योगदान को याद किया जाएगा। उनकी आवाज और कार्यों ने एक अमिट छाप छोड़ी है, जिसने राम मंदिर आंदोलन की कहानी को आकार दिया है और आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित किया है। महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका को पहचानने और बढ़ाने में, हम न केवल उनके योगदान का सम्मान करते हैं बल्कि ऐतिहासिक घटनाओं की अधिक समावेशी और न्यायसंगत समझ का मार्ग भी प्रशस्त करते हैं। ❑

राम की परिव्याप्ति

डॉ. राजकुमार उपाध्याय 'मणि'

सह-आचार्य,
हिंदी विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय,
बठिंडा (पंजाब)

राम कण-कण व्यापी परमब्रह्म हैं। ब्रह्माण्ड के निर्माता भी वही राम हैं, जो सबके हृदय में अभिराम विद्यमान हैं। हम सबके राम हैं, तो अपने-अपने भी राम हैं। राम का होना ही हमारा होना है। राम के न होने का मतलब है कि हमारा न होना, हम सबका न होना, जगत और सृष्टि का भी न होना। राम का होना ही हमारा अस्तित्व है। राम हैं तो हम हैं। जगत सपना है, परन्तु; राम अपने हैं। तभी तो माता पार्वती को शिव जी राम कथा सुनाते हैं- **उमा कहहुं मैं अनुभव अपना, सत हरि भजन जगत सब सपना।** अपना सपना हो सकता है, परन्तु राम अपने ही रहेंगे। वेदों के राम, पुराणों के राम, उपनिषदों के राम, स्मृतियों के राम, काव्यों के राम; सब कुछ में सबके राम हैं। वाल्मीकि के राम, व्यास के राम, भास के राम, भवभूति के राम, कालिदास के राम, कबीर के राम, सूर के राम, तुलसी के राम; न जाने कितने राम, अनंत राम; **'राम अनंत अनंत गुन, अमित कथा बिस्तार'**। इसलिए तुलसीदास जी ने कह दिया कि- 'रामु न सकहिं नाम गुन गाई'। हम कितने-कितने राम की चर्चा करें। सबके अपने-अपने राम हैं। राम की कहानी कही नहीं जायेगी। कहने के लिए सहस्त्रानन, सहस्त्र-श्रवन भी कम पड़ जायेंगे; क्योंकि **'सिया राममय सब जग जानी'** को **'करहुं प्रनाम जोरि जुग पानी'** करना पड़ेगा।

हम उनके युग के राम की खोज करेंगे; तो मनु-शतरूपा के राम, दशरथ के राम, कौशल्या के राम, कैकेयी के राम, सुमित्रा के राम, मंथरा के राम को भी देखना पड़ेगा। सीता के राम, लक्ष्मण के राम, भरत के राम, केवट के राम, शबरी के राम, वनवासी राम में देखना होगा। वशिष्ठ के राम, विश्वामित्र के राम, जनक के राम के लिए राजर्षि राम और राजाराम को जानना होगा। हनुमान के राम, सुग्रीव के राम,

राम जैसे राम हैं। राम ही राम हैं। इसलिए राम राम सत्य है। राम नाम भी सत्य है। राम का साक्षात्कार ही परम लक्ष्य है। पग-पग पर राम हैं। अन्दर-बाहर सर्वत्र राम हैं। इसलिए 'राम नाम मणि दीप धरूँ, जीह देहरी द्वार' की राम दुहाई है। राम को जानना, भारत को जानना है और राम का बोध होना ही भारत-बोध है। निर्बल के अरे राम, भारतवर्ष के राम हैं। राष्ट्र धर्म राम हैं। राम ही राष्ट्र हैं। इसलिए राम राज्य है। राम अनन्त हैं। अनन्त ही राम हैं। अगोचर राम हैं। कपीश के राम ही कवीश के राम हैं।

विभीषण के राम के साथ राम की मित्रता देखनी होगी। ताड़का के राम, सुबाहु के राम, खर-दूषण के राम, बालि के राम, मेघनाद के राम, कुम्भकर्ण के राम, रावण के राम के साथ संग्राम के राम को देखना होगा और राम-सेतु के राम में राम के हेतु को समझना होगा। फिर भी; पार-अपार पारावार-राम के जीवन को जानना, राम को जानना; न तो कवि के पास बुद्धि है, न कागद, न कलम न स्याही है। मन में राम को व्यक्त करना, मन की गहराई में चिंतन करना, राम का प्रकाश पाना है।

सभी भारतीय भाषाओं में राम का साहित्य भरा पड़ा है। राम का साहित्य ही सहित का भाव लेकर चला है- 'मंगल करनि कलिमल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की' सत्यता श्रुतिसार है। साहित्य की सार्थकता राम है। राम से ही साहित्य की जीवंतता है। राम ही साहित्य के उपजीव्य हैं। इसलिए साहित्य राम का अघमर्ण है। राम से साहित्य की पावनता है। पावन ही राम हैं। पवमान भी राम हैं। राम ही धर्म हैं और धर्म ही राम हैं। धर्म की धारणत्व-शक्ति राम हैं। जगत का आधार राम हैं। इसलिए जगदाधार हैं। राम धर्म को धारण किये हैं, धर्म राम को धारण किया है। राम ही धैर्यवान हैं। राम महिमावान हैं। राम करुणानिधान हैं। राम श्रुतिसार हैं। वे वेद का आधार हैं। इसलिए वेदत्व राम हैं। तत्त्व भी राम हैं। रामत्व भी राम है। जनरंजन राम ही हृदयरंजन राम हैं। वे पापहारी राम हैं। सनातन कालजयी राम हैं। इसलिए आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने अपने रामायण में अनेक गुणों वाले राम के विषय में लिखा है- देवर्षि नारद जी से वाल्मीकि जी ने पूछा कि सम्प्रति इस लोक में कौन ऐसा महापुरुष है, जो गुणवान, वीर्यवान, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी और दृढ़व्रती होने के साथ-साथ सदाचार से युक्त हो। जो सभी प्राणियों के लिए कल्याणकारी हो, वह विद्वान, समर्थ और प्रियदर्शी हो- कोन्वस्मिन् साम्प्रतं लोके गुणवान् कश्च वीर्यवान्। धर्मज्ञश्च कृतज्ञश्च सत्यवाक्यो दृढव्रत:॥ चारित्रेण च को युक्त: सर्वभूतेषु को हित:। विद्वान् क: कस्समर्थश्च कैश्चैकप्रियदर्शन:॥ आत्मवान् को जितक्रोधो द्युतिमान् कोऽनसूयक:। कस्य बिभ्यति देवाश्च जातरोषस्य संयुगे॥(1-1-4) तब वाल्मीकि जी से नारद मुनि जी ने कहा कि इक्ष्वाकु वंश में उत्पन्न श्री राम में ये सभी गुण हैं। वे गुणवान्, वीर्यवान्, धर्मज्ञ, कृतज्ञ, सत्यवादी, दृढ़व्रती, चरित्रवान्, सर्वभूतहितज्ञ, विद्वान्, समर्थ, सदा प्रियदर्शी, धैर्यवान, जितक्रोध, द्युतिमान्, अनसूयक, जिनके रुष्ट होने पर युद्ध में देवता भी भयभीत हो जाते हैं।

वे रघुकुल राम हैं। रघुवंशमणि राम हैं। अयोध्यापति राम हैं। सीतापति राम हैं। रघुपति राम हैं। राम का देवत्व राम है। मर्यादा का आगर, मर्यादा पुरुषोत्तम राम हैं। धृति, क्षमा, दम, अस्तेय, शौच, इन्द्रिय-निग्रह, धी, विद्या, सत्य, अक्रोध का विग्रह रूप राम हैं। ममता, दया, करुणा, साहस, पराक्रम का अद्वितीय रूप राम हैं। सत्य, शील, सौंदर्य के अप्रतिम रूप राम हैं। राम जैसे राम हैं। राम ही राम हैं। राम नाम भी सत्य है। राम का साक्षात्कार ही परम लक्ष्य है। पग-पग पर राम हैं। अन्दर-बाहर सर्वत्र राम हैं। इसलिए 'राम नाम मणि दीप धरूँ, जीह देहरी द्वार' की राम दुहाई है। राम को जानना, भारत को जानना है और राम का बोध होना ही भारत-बोध है। निर्बल के बल राम ही भारतवर्ष के राम हैं। राष्ट्र धर्म राम हैं। राम ही राष्ट्र हैं। इसलिए राम राज्य है। राम अनन्त हैं। अनन्त ही राम हैं। अगोचर राम हैं। कपीश के राम ही कवीश के राम हैं। यही धरणीश राम हैं। नदीश के राम ही जगदीश राम हैं। ❑

राम जन-जन के हैं और जन-मन राम का है। भारत के हिन्दू जनमानस के अतिरिक्त भी राम श्रद्धा के साथ स्वीकार किये गए हैं। भारत के इतर अन्य मुस्लिम देशों में आज भी रामलीला का मंचन बड़े श्रद्धा के साथ किया जाता है और वहाँ के लोग राम को अपने पूर्वज के रूप में स्वीकार करते हैं। रामकथा पर मुस्लिम अध्येता फादर कामिल बुल्के द्वारा किया गया अध्ययन काफी प्रासंगिक है, जिसका सन्दर्भ आज भी विद्वानों द्वारा दिया जाता है। निःसंदेह राम काव्य को मुस्लिम कवियों ने एक नयी दृष्टि से देखा है और उन पर श्रद्धा प्रकट की है।

मुस्लिम कवियों की दृष्टि में राम

अमन वर्मा
शोधार्थी, हिंदी विभाग
इलाहाबाद विश्वविद्यालय
(उत्तर प्रदेश)

राम भारत के ऐसे नायक हैं, जिन्हें सच्चे अर्थों में भारत के आदर्श का पर्याय कहा जा सकता है। हम समाज के प्रत्येक व्यक्ति के भीतर राम को देखना चाहते हैं। सांसारिक सम्बन्धों, यथा- पिता, पुत्र, पति, राजा, स्वामी, भाई आदि का जब आदर्श स्थापित करना हो तो राम हमें अनायास ही याद आ जाते हैं। वास्तव में राम किसी समुदाय विशेष के नायक नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत के नायक हैं। भारत, जिसे वह स्वयं 'जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी' कहकर महिमामंडित करते हैं। राम जैसे विराट व्यक्तित्व के गुणों का बखान करने के लिए भाषाओं एवं सम्प्रदायो ने कोई सीमा नहीं बाँधी। आज भारत के सभी वर्गों और भाषाओं में रामकथा सुनने और पढ़ने को मिल जाती हैं। रामकाव्य के अतिरिक्त राम को आलम्बन मानकर भी हमारे कवियों ने अपनी भावनाओं को कलम से शब्दबद्ध किया। भारत में राम की उपस्थिति का अंदाजा इस बात से मिला कि पिछले दिनों मोहल्ले में एक मुस्लिम परिवार में विवाह के दौरान बज रहे संगीत में राम और सीता का जिक्र कई बार हुआ। भारतीय संस्कृति में राम के परिप्रेक्ष्य में कुछ मुस्लिम कवियों का उल्लेख यहाँ करना चाहूँगा जिन्होंने राम के चरित्र का अनुकरण कर, उन पर अथवा उनके जीवन की घटनाओं को केंद्र में रखकर काव्य रचना की। इस क्रम में प्रथम नाम अमीर खुसरो का आता है। वह भारत के प्रमुख कवि हैं जिनकी कविताओं में भारत की संस्कृति और परम्परा स्पष्ट परिलक्षित होती है। भारतीय सूफी परम्परा में अमीर खुसरो का नाम लिया जाता है। राम के विषय में बात करते हुए वह लिखते हैं -

तन-मन-धन का वह है मालिक
वासे निकसे जी को काम
वो हम सबका मालिक राम।

भक्ति काव्य के प्रमुख कवि रसखान को यूँ तो कृष्णभक्ति शाखा का प्रमुख कवि माना जाता है किन्तु उन्होंने राम के जीवन की घटनाओं पर भी अपनी कलम चलाई है। राम के बचपन का 'कागभुशुण्डि प्रसंग' रामकथा में बहुचर्चित रहा। इस घटना को अपने काव्य में रेखांकित करते हुए कवि रसखान लिखते हैं -

धूरि भरे अति सोहत स्याम जू,
तैसी बनी सिर सुंदर चोटी।
खेलत-खात फिरै अँगना,
पग पैंजनिया, कटि पीरी कछोटी
वा छवि को रसखान विलोकत,
वारत काम कला निधि कोटी
काग के भाग बड़े सजनी,
हरि हाथ सों लै गयो माखन रोटी।

रसखान की कृष्णभक्ति काव्य परम्परा में ही कवि अब्दुर्रहीम खानखाना 'रहीम' का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। वे अकबर के दरबार में नौ रत्नों में एक तथा रामचरित मानस के रचयिता गोस्वामी तुलसीदास के अनन्य मित्र थे। उन्होंने रामचरित मानस को संत स्वभाव के मनुष्यों के लिए जीवनदायी बताया है और उसकी तुलना हिंदुओं के ग्रन्थ 'वेद' तथा मुस्लिमों के ग्रन्थ 'कुरान' से की है। अपने काव्य में उन्होंने स्पष्ट कह दिया कि रामचरितमानस का पारायण सभी को करना चाहिए-

रामचरित मानस विमल
संतन जीवन प्रान।
हिन्दुअन को वेद सम,
जमनहि प्रगट कुरान।।

बीसवीं सदी की उर्दू शायरी में अल्लामा इकबाल का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वह अपनी शायरी में राम को हिंदुस्तान का नायक स्वीकार करते हैं। वे मानते हैं कि राम के होने से हिंदुस्तान स्वयं को गौरवान्वित महसूस करता है -

है राम के वजूद पे हिन्दोस्तां को नाज।
अहले नजर समझते हैं उनको इमामे-हिन्द।।

इसी प्रकार शम्सी मीनाई एक प्रतिष्ठित कवि हुए हैं। उन्होंने माना कि राम को हिंदुस्तान से अलग हटकर नहीं देखा जा सकता। उनका मानना है कि राम भारत की संस्कृति का प्राण हैं और उनके बारे में अधिक लिखा नहीं जा सकता -

मैं राम पर लिखूँ मेरी हिम्मत नहीं है कुछ
तुलसी ने वाल्मीकि ने छोड़ा नहीं है कुछ
फिर ऐसा कोई ख़ास कलमवर नहीं हूँ मैं
लेकिन वतन की खाक से बाहर नहीं हूँ मैं

जफर अली ने भी इसी प्रकार राम और सीता को अपनी कलम का आधार बनाया। उन्होंने माना कि यदि भारत की संस्कृति को समझना हो तो राम सीता और लक्ष्मण के चरित्र को समझना जरूरी है। भारतीय संस्कृति इन्हीं के इर्द- गिर्द रची बसी हुई है-

नक्श-ए-तहजीब-ए
हुनूद अभी नुमाया है अगर
तो वो सीता से है,
लक्ष्मण से है और राम से है।

रहबर जौनपुरी अपनी कविता में राम को न्याय और शक्ति का प्रतीक मानते हैं। उनका मानना है कि राम को मानने वाले शैतानी प्रवृत्ति (राक्षसी प्रवृत्ति) से हमेशा दूर रहते हैं और रावण को मानने वाले इस प्रवृत्ति के समीप।

रस्म-ओ-रिवाज-ए-राम
से आरी है शार-पसन्द
रावण की नीतियों के
पुजारी हैं शार पसन्द।

सागर निज़ामी ने राम को देश के लोगों के लिए मोहब्बत माना है। वे लिखते हैं कि भारतीयों के दिलों में राम हमेशा वास करते रहेंगे। उनके हृदय से राम को पृथक नहीं किया जा सकता।

हिंदियों के दिल में बाकी है
मुहब्बत राम की
मिट नहीं सकती कयामत तक
हुकूमत राम की।

प्रख्यात शायर कमाल अहमद ने आज के इस दौर में राम की आवश्यकता को महसूस किया है। उन्होंने माना है कि आज के इस अंधकार को राम ही दूर कर सकते हैं। उन्होंने राम का आह्वान किया है और आग्रह किया है कि जिस प्रकार अपने समय में उन्होंने जनता की रक्षा की, वैसे ही आज भी जनता की रक्षा करें -

दानव हिंसक रूप बनाकर
घूम रहे हैं घर-घर जाकर
मानवता को कँपा दिया है
रावण ने हुंकार सुनाकर
मासूम सिसकती जनता के
फिर रक्षक बनकर आ जाओ
जीवन पथ पर घोर तिमिर है,
राम पुनः आ जाओ।

कवि मोहम्मद फैजुद्दीन ने तुलसी के रामचरित मानस को राष्ट्रीय एकता के लिए आवश्यक ग्रन्थ माना है। उनका मानना है कि रामचरित मानस वास्तव में भारत की आम जनता का ग्रन्थ है जिसे भारत के जन-जन का प्रेम प्राप्त हुआ है। यह ग्रंथ किसी धर्म विशेष का ग्रन्थ न होकर समूचे भारत का ग्रन्थ है।

यह लुफ्ते खास है,
यह फैजे आम तुलसी का
ये खासो आम का प्यारा है,
राम तुलसी का
यह राम नाम से है
उनके प्यार की महिमा
कि सर पे रखती है
दुनिया कलाम तुलसी का

राम नाम की महिमा का वर्णन करने में मुस्लिम कवयित्रियाँ भी पीछे नहीं रहीं। उन्होंने भी कवियों के कन्धे से कन्धा मिलाकर राम के वास्ते अपनी कलम चलाई है। उन्होंने राम की वंदना की है। इस क्रम में कवयित्री खातून सिद्दीकी लिखती हैं -

रोम- रोम में रमा हुआ जो राम है।
निर्गुण भी है सगुण भी है वह अभिराम है।
ह्रास मानवता का देख वह प्रगटित हुआ।
उस विभूति को श्रद्धा सहित प्रणाम है।

वास्तव में भारत के नायक राम ही हैं, जिन्हें समस्त भारतीयों ने श्रद्धा की दृष्टि से देखा है। राम जन-जन के हैं और जन-मन राम का है। भारत के हिन्दू जनमानस के अतिरिक्त भी राम श्रद्धा के साथ स्वीकार किये गए हैं। भारत के इतर अन्य मुस्लिम देशों में आज भी रामलीला का मंचन बड़े श्रद्धा के साथ किया जाता है और वहाँ के लोग राम को अपने पूर्वज के रूप में स्वीकार करते हैं। रामकथा पर मुस्लिम अध्येता फादर कामिल बुल्के द्वारा किया गया अध्ययन काफी प्रासंगिक है, जिसका सन्दर्भ आज भी विद्वानों द्वारा दिया जाता है। निःसंदेह राम काव्य को मुस्लिम कवियों ने एक नयी दृष्टि से देखा है और उन पर श्रद्धा प्रकट की है। ❑

Consecration of Ram Mandir : Civilization Reclaim of Bharat

Dr. Renu Gaur

Associate Professor,
Govt. Girls College,
Sanganer,
Jaipur (Rajasthan)

Consecration of Ram Mandir at Ayodhya is a reiteration of the victory of Faith, negating the forces of religious tyranny Babri Masjid stood for.

The second millennium was a dark period in the religious and cultural history of ancient Bharat as the massacres perpetuated by Muslims were gruesome and unparalleled in world history. Alain Danielou in his book, "Histoire de l' Inde" writes: "From the time Muslims started arriving, around 632 AD, the history of India became a long, monotonous series of murders, massacres, spoliations, and destructions. It is, as usual, in the name of 'a holy war' of their faith, of their sole God, that the barbarians have destroyed civilizations, wiped out entire races." These Muslim tyrants who were depicted larger-than-life in history-books, butchered millions of people ruthlessly and caused unmitigated disaster to Hindus. "Their temples were razed, their idols smashed, their women raped, their men killed or taken slaves". (A sample of contemporary eye witness accounts of the invaders and rulers during the Indian conquest) Hindus suffered historical and religious persecution, violence, forced convergence, demolition and desecration of temples. The nadir of this dark period was 1528 when Babur, a tyrant of the worst kind, demolished the sacred temple of Shri Ram, the principal deity of Hinduism and the very essence of our ancient civilisation. Leveling the Ram Mandir at Ayodhya, he built a mosque on the top of rubble naming it Babri Masjid. Over 1.74 Lakh of Hindus who had

gathered to protect the Ram Mandir site were ruthlessly slaughtered. Hamilton writes in the Barabanki Gazetterer "Jalalshah used stones from Lahore coloured from the blood of Hindus in the construction of mosque…he had plans to turn Ayodhya into a Mecca of East." The eradication of temple and building of mosque in its place through atrocities was not for religion but for establishment of power as Babur, not a devout Muslim by any standard, used religion conveniently killing Hindus ruthlessly and destroying temples with an aim of wiping out our ancient civilisation. But sooner or later righteousness always triumphs. The universe has its own ways of validating the concepts of Dharma. The Pran Pratishtha of Ram Lalla at Ayodhya almost after 500 years is a testament to the victory of faith of the millions of Hindus across the world transcending political narrative despite its being a consistent commitment of Rastriya Swayamsevak Sangh (RSS) and political voice of Bharatiya Janta Party (BJP).

The natives of Bharat view Ram janmbhoomi not as a piece of land but timeless, spaceless and eternal force of faith associated with lord Shri Ram since time immemorial. The Hindu epic Ramayana identifies Ayodhya as the birthplace of Shri Ram but during Muslim invasion,the religious and cultural history of ancient Bharat witnessed cultural decline when Babur deliberately designed atrocities to humiliate and demoralize Hindus by destroying Ram Mandir, the very soul of Bharat. Later self-entered political bodies trivialized the Hindu religion calling Ayodhya a 'myth' and Shri Ram as a character which was not only derogative but very much hurting in a land of over 80% Hindus. That is crucial that in a country where Hindus reside in majority, for long Ayodhya (literally meaning an invincible place) had been the disputed structure despite being a venerable site carrying deep-rooted sentiments of millions of Sanatanees attached to it. There is ample evidence that indicates the consistent obeisance of Hindus to Ram Mandir at Ayodhya. An Austrian priest who once lived in Bharat, shared his experience in his book "Description Historique Et Geographique"- "The reason is that here existed formerly a house in which Bachchan (Vishnu) took birth in the form of Rama and where it is said his three brothers were also born. Subsequently, Aurangzeb, and some say Babur, destroyed the place in order to prevent the Heathen from practicing their ceremonies. However, they have continued to practice their religious ceremonies in both the places knowing this to have been the birthplace of Rama by going around three times and prostrating on the ground" (translated from the French version). Despite being bolstered with archaeological findings and historical documentations favouring Hindu's point of view, Ayodhya had been a contentious place between Hindus and Muslims over centuries facing inter-religious divisions, riots and killings.

Ram Mandir at Ayodhya, voicing the tales of devotion, sacrifice, and the unwavering belief in the triumph of righteousness, is the healing for a wounded civilisation that suffered centuries of subjugation and oppression, but remained resilient; a way for a lost civilisation, that finally found a focal point to resolve around and set itself on the path to greater glory; a liberation for a civilisation, which has suffered spiritual cultural, political and religious depravities but has fought for Dharma without giving up.

Between 1950-59, several Hindu priests filed several suits, demanding the right to perform Pooja and place the idol of Shri Ram inside. In the 1980s, the Vishwa Hindu Parishad (VHP) started a campaign laying the foundations of Ram Temple on the land adjacent to the disputed mosque, with the support of BJP as its political voice. In 1990, assisted by Shree Atal Bihari Vajpayee, the Iron Man of BJP Shri LK Advani started Rath Yatra from Somnath that proved to be the biggest mass mobilization of Hindutva. Our present prime minister Narendra Modi being a part of this Ratha Yatra fuelled the sentiments of Hindus, went door to door in distant parts of the country to collect Ram Shila for the temple's construction. L.K. Advani famously roared "30 Oct ko waha

pahuch kar "kar seva" karenge aur Mandir Wahi Banayenge. Usko kaun rokega, kaunsi sarkar rokne wali hai" (We will reach there on Oct 30th for KarSeva and we will build the Mandir on the sacred space. Who can stop that? Which government can prohibit that?) BJP stalwart Shree Vajpayee in his iconic speech said "zameen ko samtal karna padega" (the land has to be flattened) for doing Bhajan, kirtan. Shree Ashok Singhal Ji, the iconic leader of this pious movement said "we are not against Islam or Masjids, you are welcome to make your prayer hall at a place of your choice; but it cannot happen in the birthplaces of Ram (Ayodhya), Krishna (Mathura) or one of the 12 original Jyotirlingas, the Tridev (3 great lords) of Hindu Pantheon. Some negativists defamed the pious movement calling it a gender specific movement where only men participated.It was a slap on their face when Sadhvi Ritambhara, Uma Bharti ji inspired the whole generation of Kar Sevaks. Sadhvi Ritambhara with her "Mandir Wahi Banayenge" (We will construct the temple on the very spot) while Uma Bharti ji "unki goliya kam padh jaengi lekin sine kam nehi padenge" (they will run out of bullets but we will not run out of people to face them) put the shimmering sentiments of sanatnaees to a boil and with the slogan "Mandir Yahin Banayenge" (we will build a temple here), a huge crowd of Kar Sevaks, Hindu pilgrims and other devotees surrounded the site and 'submerged' mosque with grappling hooks. In this 491-year long battle between truth and falsehood, much blood and tears of Hindus flowed. In 2019, the long-fought battle ended and the grave historical wrong got rectified when the Supreme Court finally ruled in the favor of Hindus by granting the entire 2.77acre disputed land for the construction of Ram Mandir. This historic verdict, "Ayodhya be awarded to the deity Ram Lalla Virajman" paved the way for the construction of a magnificent temple, a relief to the agonized soul of Sanatanees. In 2020, backed with dreams,determination and eternal flame of devotion; 'putting a celestial symphony' in each stone; resonating with the 'melody of unity and shared heritage', the making of sacred edifice, creating a divine masterpiece 'etched in the sands of time', got started.

With the restoration of the temple in its full glory and the Pran Pratishtha of the idol of Ram Lalla on 24th January 2024 by our honourable Prime Minister Narendra Modi, the Civilization Reclaim of Bharat, negating the tyrannical forces of religion and paving the way for harmonious future simultaneously, got reinstated. In the Pran Pratishtha ceremony, PM Modi in his speech addressed, "the magnificent temple of Lord Shri Ram is a tribute to the thousands of devotees who sacrificed their lives

to reclaim the place that was forcefully usurped by Islamic zealots who humiliated the Hindus by building a mosque at the pre-existing temple. The temple is a triumph of Dharma over Adharma; a victory over Islamic tyranny that Babri Masjid signified. It is a battle won for Shri Ram who has been part of people's conscience for centuries; Ram who dwells in the innermost heart of our civilization, which cannot be conquered by any alien invader."

The Ram Temple at Ayodhya fits into a larger narrative, transcending individual, religious and political biases. So, it is essential to understand the significance of Ram Mandir in a broader context.

Being a symbol of national pride, unity and the assumption of India's cultural identity, the Pran Pratishtha of Ram Lalla is an alarming bell to the tyrannical forces of religion that the unjust Babri Masjid signified; a warning to any negative element that threaten our cultural legacy; a message that righteousness always prevails; a necessity that the legacy of tyranny must be erased in every way from our country; a victory for Hindus and adherents of all Vedic beliefs that have suffered a lot with the policies of political parties and their shadow secularism, indulging in minority appeasement, even at the cost of justice and truth.

Ram Mandir at Ayodhya, voicing the tales of devotion, sacrifice, and the unwavering belief in the triumph of righteousness, is the healing for a wounded civilisation that suffered centuries of subjugation and oppression, but remained resilient; a way for a lost civilisation, that finally found a focal point to resolve around and set itself on the path to greater glory; a liberation for a civilisation, which has suffered spiritual cultural, political and religious depravities but has fought for Dharma without giving up.

The Ram Lalla Virajman at Ayodhya is an emblem of what Sanatan Dharma really stands for - Dharmik way of life, which reclaim at its core, both the power to establish Dharma and the necessity of destroying Adharma. It is a guiding light encouraging every citizen of Bharat to explore more about his life and remove the dirt of materialism to see the glimpse of Shri Ram somewhere deep inside each one of us; Ram, "who has fully controlled his mind, is very powerful, radiant and resolute, and has brought his senses under control.." (Baal Kaand, Valmiki Ramayan, Gita press, page 1-2)

The Ram Mandir, bearing our cultural identity and history and standing in full glory, serves as a blend of our ancient civilization and splendor and strength of new Bharat. It does not mark the end of the People's movement, rather the commencement of a new chapter as a moment of pride by every Bharatvasi as "Reinstalling Ram Lalla to his rightful adobe after 496 agonizing years …marks the advent of a new era. (highlights from the speech of Prime Minister Modi) The temple is a beacon of hope for the country, assuring Ramrajya (vision of perfect, social harmony, equality, economic justice, and political freedom) as Shri Ram is "…… a supporter of the creation like Brahma… A protector of living beings and a staunch defender of faith… is another Dharma in the point of truthfulness." (Baal Kand, Valmiki Ramayan, Gita press, page 1-2)

The Ram Temple is a testimonial of the indigenous Hindu identity, the declaration to the world that truth can be troubled not defeated. The Mandir being the reflection of the integrity of Bharat and patience of Sanatanis, is a testimonial that Hindus have proved themselves to be the rightful descendants of great ancestors who refused to succumb under constant barbaric Islamic onslaught during the middle age and will always be back to reclaim what is rightfully theirs. The Mandir is a tribute to the 'Ram Bhakts' who sacrificed their life. UP chief minister Yogi Aditaya during a roadshow addressed "Remember the day 20 years ago when 'Ram Bhakts sacrificed their lives for the sake of Ram temple in Ayodhya. Now, as a result of PM Modi's glorious leadership as the architect of New India, a grand temple is being constructed in Ayodhya. It's a tribute to both India's faith and 'Ram Bhakts,"

Thus, the magnificent temple with deep connotations, reinstating the faith **"Dharmo Rakshati Rakshitah"** (adherence to Dharma itself Protects), is a step leading Bharat towards unparalleled prosperity aligned with Ramrajya, a just and peaceful state for everyone living in the country in the leadership of our honorable Prime Minister Narendra Modi. ❑